

༄༅། བོད་ཀྱི་ནང་བསྟན་དཔེ་ཚོགས་ལྟེ་གནས་།

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W3CN9692	ImageGroup:	I3CN9694
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	ལོ་རྒྱུ་བ་རིན་ཆེན་བཟང་པོའི་རྣམ་ཐར་ཤེལ་འཕྲིང་ལུ་གུ་རྒྱུད། (ཉིན་བོད་ཤན་སྐྱུར།) lo ts+tsba ba rin chen bzang po'i nram thar shel 'phreng lu gu rgyud/ (hin bod shan sbyar/)
Author:	ཁྱི་ཐང་དཔལ་ཡེ་ཤེས། khyi thang dpal ye shes/
Descriptor:	copy made available from the library of tibetan works and archives; ltwa acc. no. D27393
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	dil+li/
Publisher:	karuNA phaun Dshan/
Date:	1996
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at M/S Satluj Infotech Images, E-45, Sector 27 Noida, District Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301 via New Delhi, IN for the Tibetan Buddhist Resource Center, 150 17th st., New York, NY 10011, U.S.A 2006.

करूणा ग्रन्थमाला-1

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा
सर्वपापहर्त्रे नमः
सर्वदुःखहर्त्रे नमः
(सिद्धिदायकं)

गुणे ख्यथड निवासी ज्ञानश्री विरचित
लोचावा रत्नभद्र की जीवनी
स्फटिक रत्नमाला
(मूल भाटी एवं हिन्दी अनुवाद सहित)



अनुवादक एवं सम्पादक
रोशन लाल नेगी बिष्ट

करूणा फाउण्डेशन
अन्तराष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली ।

ཀུན་པོ་དཔྱིང་ - ༡

༄༅། །གྲག་ཁྱི་ཐང་པ་རྩྱུ་གྲིས་མཛད་པའི་བྱང་རྒྱལ་
སེམས་དཔའ་ལོ་རྩྱུ་བ་རིན་ཆེན་བཟང་པོའི་ལུང་ས་རབ་
བཀའ་སྤྱད་སྒྲིན་མ། རྣམ་ཐར་གཤམ་ལ་ཐྱིང་
ལུ་གྲ་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།

(རིན་པོ་དཔྱིང་སྤྱུ་)

སྤྱུ་བ་པོ།

རོ་ཤན་ལུ་ཞེ་གི་ཁྱུ་པ།



ཀུན་པོ་ཕུན་ཤེས་ཀྱི།

དེས།

करूणा ग्रन्थमाला-1

प्रधान सम्पादक: भिक्षु कग्युर रिन्पोछे

प्रथम संस्करण : 1000

मूल्य : रू 0

सर्वाधिकार सुरक्षित: करूणा फाऊण्डेशन नई दिल्ली, 1996

प्रकाशक:

करूणा फाऊण्डेशन

अन्तराष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केन्द्र, दिल्ली ।

आई-63, बी लाजपतनगर -1

नई दिल्ली- 110024

दूरभाष: 6922492, फैक्स: 6922487,

ई. मेल: Karuna @ Karuna.tibetnet.ernet.in

KARUNA SERIES-1

BIOGRAPHY
OF
BODHISATTVA THE TRANSLATER RIN-CHEN-BZAN-PO
THE SAVING CORD OF THE CRYSTAL ROSARY
BY
dPal-ye-sHes (JAÑASRI)
of
KHYI-THANG IN GU-GE
(Tibetan Version and Hindi Translation)

Translated and Edited

by

ROSHAN LAL NEGI, BISHT



Karuna Foundation
Centre for International Buddhist Studies
New Delhi
1996

KARUNA SERIES-1

Chief Editor: KAGYUR RINPOCHE

1

First Edition: 1000 Copies

Price: Rs.

© Karuna Foundation, New Delhi, 1996

Data Set on Apple Macintosh by Khangpa Publications, Sarnath-Varanasi

Published by:

Karuna Foundation

Centre for International Buddhist Studies

New Delhi

1996

Ph. 6922492, Fax: 6922487,

Email: Karuna @ Karuna. tibetnet.ernet.in

ཆེད་བཟོད།

༡༡། །བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་ནང་ལོ་ཆེན་རིན་ཆེན་བཟང་པོ་ནི་འགྲན་ཁྲི་
བྲལ་བའི་སྤྲེས་བྲུ་ཁྲད་པར་ཅན་ཞིག་ཡིན། །ཁོང་གི་མཁས་བཙུན་བཟང་
གསུམ་གྱི་ཡོན་ཏན་དང་། ལྷག་པར་བོད་ཀྱི་རིག་གཞུང་དང་། རིགས་
བྱང་། སངས་རྒྱལ་གྱི་བསྟན་པ་བཅས་ལ་འཛིན་སྐྱོང་སྤེལ་གསུམ་གྱི་ཞབས་
འདེགས་ཞུས་པའི་ཕུག་རྗེས་ནི་ཆེས་ངོ་མཆར་སྦྱོར་འོས་པ་ཞིག་རེད།
མངའ་བདག་ཁྱིམ་ལ་བཀོངས་རྗེས་བོད་ཀྱི་ཆབ་སྲིད་ལ་འགྱུར་ཁྲོག་ཆེན་པོས་
བརྟན་ལྷིང་མེད་པར་བྱུང་དབང་གིས་སངས་རྒྱལ་གྱི་བསྟན་པར་ཡང་ཉམས་
ཆག་ཆབས་ཆེ་བྱུང་སྟེ། བོད་ཀྱི་བསྟན་རྒྱུན་ལ་ཕྱད་ར་དང་ཕྱི་དར་ཞེས་
དུས་ཆེགས་ཕྱི་དགོས་པའི་བྱུང་རིམ་ནང་། བསྟན་པ་ཕྱི་དར་གྱི་ཤིང་
ནའི་སྒོལ་འབྱེད་ལྟ་བུར་ལོ་ཆེན་འདི་ཉིད་ཡིན་པ་ངོས་འཛིན་བྱས་རུང་མི་
འོས་པ་མེད། །ཁོང་གི་དུས་རབས་ནས་སྐྱབས་ཀྱི་ལས་དོན་ལ་དངོས་
གསལ་དོད་པོའི་ཡར་རྒྱས་རྒྱབས་ཆེན་སོང་བར་བརྟན། རྒྱགས་གསར་
འགྱུར་དང་རྟིང་འགྱུར་ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་ཀྱང་བྱུང་ཞིང་། ལྷག་པར་དུ་ཕྱ་
འགྱུར་པལ་མོ་ཆེར་བྱུད་པའི་དང་བསྐྱར་ཏེ་བསྐྱར་བཅོས་དག་ཞུས་མཛད་པའི་
རྒྱབས་ཆེན་གྱི་མཛད་རྗེས་ནི་དེང་རབས་ཀྱི་མཁས་པའི་ཉམས་ཞིབ་བྱ་ཚུལ་

ལས་ཀྱང་ལྷག་པ་ཞིག་བྱང་འདུག་པ་མ་ཟད། དེང་དུས་འཛིག་རྟེན་འདིའི་
 རང་བོད་རྒྱུད་དུ་བཞུགས་པའི་བཀའ་བསྟན་རྣམས་འགྱུར་ཆད་ལྷན་ཡིན་མིན་
 དང་ས་ཁུལ་གྱི་ལོགས་བྱང་གོམས་གཤིས་དབང་གིས་ཤན་ལྷན་ཞུགས་མིན་
 སོགས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་དང་ཁྲུན་ཀའི་ཡུལ་ལས་རིང་དུ་བཞུགས་པ་འདི་ལོ་ཆེན་འདི་
 ཉིད་ཀྱི་བཀྲིན་ཡིན་པར་སྒྲུབ་། དེ་བཞིན་གཙུག་ལག་ཁང་དང་སྐྱབས་སུ་
 ཐུགས་རྟེན་ཆེས་མང་པོ་བཞེངས་བསྐྱུན་མཛེད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་བྱ་གར་རྒྱུ་
 རྒྱུད་ནས་བྱང་བའི་བཟོ་བཀོད་དང་རི་མོའི་སྐྱུ་ཅུལ་ཕྱུན་སུམ་ཆོགས་པ་བོད་
 རྒྱུངས་སུ་ཁྱབ་སྤེལ་དང་སྤེལ་རྒྱུ་འཛུགས་པ་ལའང་ཐུན་ཚུབས་ཆེན་པོ་བྱང་
 ཡོད། ལོ་ཆེན་རང་ཉིད་ཀྱི་གསར་བསྐྱར་གྲས་མདོ་སྤེམ་སྐྱོར་གཞུང་གྲངས་
 ༡༧ དང་། མངོན་པའི་སྐྱོར་གཞུང་ ༣༣ རྒྱུད་ཀྱི་སྐྱོར་གཞུང་ ༡༠༥
 བཅས་ཡོད་པར་གྲགས་ཡོད། བ་ལྷ་སྤེལ་གྱི་བཀའ་བསྟན་ནང་དངོས་སུ་
 འགྱུར་བྱང་འཁོད་པའི་གཞུང་ཆུང་ ༡༥༠ བཞུགས། དེ་འདྲའི་འཕྲིན་
 ལས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་འདིའི་རྣམ་པར་ཐེར་ས་ཆེ་
 འབྲིང་ཆུང་གསུམ་དུ་ཡོད་ཚུལ་འདུག་ཀྱང་། རྣམ་ཐར་ཆེན་མོ་ནི་ད་ལྟ་
 དཔེ་རྒྱུན་མ་ཆེད། ཁོང་གི་སློབ་མའི་གཙོ་བོ་ཀ་བཞི་གདུང་བརྒྱུད་དུ་
 བྲགས་པའི་ཀ་བཞིའི་ཡ་གུལ་གྱི་གཡོ་ཤེས་དཔལ་གྱིས་བརྩམས་པའི་རྣམ་
 ཐར་འབྲིང་པོ་ཤེལ་སྤེང་ལུ་གྱུ་རྒྱུད་བྱ་བ་འདི་མཁས་དབང་ཨི་སི་ནེལ་གོ་རོ་བ་

(David L. Snellgrove) དང་ཏ་དེའུ་ཇ་ཨི་སི་ཀོ་བ་ས་ཀི་ (Tadensz Skourpski)ནས་

མཛད་པའི་ལ་དྲུག་ས་ཀྱི་ལེགས་བྱང་གི་སྒྲིལ་བྱུང་། - ༡ (Cultural Heritage of

Ladakh-1) རང་ལྷགས་འབྲུ་བསྐྱེགས་དེ་དཔར་འདུག་པ་དེར་གཞིར་བྱས།

མཁས་དབང་སེམས་དཔའ་དོ་རྩེའི་མདུན་བོད་དཔེ་བྲིས་མ་གཉིས་འདུག་པ་

དང་བསྐྱེན་དེ་ལྷ་རྩུ་རོ་ཤན་ལུ་ལ་ཞེ་གྲི་གིས་དག་ཞུས་རགས་རིམ་དང་བཅས་

ཉིན་བསྐྱར་ཐོག་འདི་ལོ་ལོ་ཆེན་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱག་བཏབ་པའི་རྟ་ཕོ་དགོན་ལོ་

གྲངས་ ༡༠༠༠ འཁོར་བའི་དུས་སྟོན་ཐོག་ལོག་ས་ཆེན་པོས་དུས་འཁོར་

དབང་ཆེན་གནང་བྱའི་སྐལ་བཟང་གི་གོ་སྐབས་དང་བསྐྱེན་བསྐྱར་པའི་སྒྲུང་བྱེད་

བཀའ་འཇུག་མཆོག་སྤུལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཀ་རུ་རྒྱ་དགོ་ཅ་བརྒྱད་ལོ་ཆེན་རིན་

བཟང་གི་རྣམ་ཐར་དང་མཛད་པའི་སྒྲོར་བྱེད་སྤྱིའི་མཁས་པའི་བསྐྱོ་ཆོགས་

ཆེན་པོ་ཞིག་རྟ་ཕོ་དགོན་རང་དུ་གནང་གཏན་འཁེལ་བ་ལྟར་དེའི་མཛད་རིམ་

གྱི་ཆ་གས་སུ་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོའི་རྣམ་ཐར་འདི་ཉིད་ཉིན་བོད་ཤན་སྐྱར་དཔར་

བསྐྱེན་མཛད་དེ་དོན་གཉིས་ཅན་རྣམས་ལ་སྤེལ་འབྲེམས་མཛད་པ་འདིས་ལོ་

ཆེན་མཆོག་གི་བཀྲིན་རྩིས་བྲན་དང་། བསྐྱེན་འགྲོར་སྐྱེན་སྐབས་ཆེན་པོ་

ཡོང་བའི་སྒྲོན་འདུན་དང་བཅས་ཤུ་གཉི་བཅུན་པ་ཟམ་གདོང་པ་སློ་བཟང་

བསྐྱེན་འཛིན་གྱིས་ ༡༩༩༦ ཕྱི་ཟླ་ ༥ ཆེས་ ༡༩ ལ་བྲིས།

प्राक्कथन

तिब्बत के इतिहास में महालोचावा (अनुवादक) रिन् छेन् जंग पो एक ऐसे विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने अपनी विद्वत्ता, शीलवत्ता और भद्रता आदि गुणों से तिब्बत के साहित्य और संस्कृति तथा बुद्धशासन की जो महनीय सेवा की है, वह अद्भुत है ।

सम्राट् ख्री रल्-पा-चन की हत्या के बाद तिब्बत में एक ओर राजनीतिक अस्थिरता एवं राष्ट्रिय एकता का हास हुआ तो दूसरी ओर बुद्धशासन की भी अवनति हुई ।

बाद में बुद्धशासन के वहाँ पुनः प्रतिष्ठित होने पर इतिहासकारों ने तिब्बत के धार्मिक इतिहास को प्राचीन बुद्धशासन और अर्वाचीन बुद्धशासन—इन दो भागों में विभक्त कर दिया । लोचावा रिन्छेन् जंग पो को अर्वाचीन बुद्धशासन का महारथी या प्रवर्तक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

विशेषतः अनुवाद-कार्यों को उन्होंने इतना सुविकसित किया कि उनके समय से अनुवाद-परम्परा 'नए अनुवाद' के नाम से प्रचलित होने लगी । इस काल में सम्पूर्ण प्राचीन अनुवाद-साहित्य का संस्कृत मूल से मिलान करके पुनः संशोधन एवं सम्पादन किया गया । जिन ग्रन्थों का संस्कृत मूल उपलब्ध नहीं हुआ, उन्हें सन्दिग्ध मानकर 'क-ग्युर' एवं 'त-ग्युर' संकलन से पृथक् कर दिया गया । तिब्बत के 'क-ग्युर' एवं 'त-ग्युर' संकलन आज विश्व के अनूदित साहित्य में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक प्रामाणिक माने जाते हैं—इसका श्रेय अधिकांशतया महालोचावा रिन्छेन् जंग पो जी को ही जाता है ।

रिन् छेन् जंग पो जी ने अपने जीवनकाल में अधिसंख्य विहारों एवं प्रतिमाओं का निर्माण करके पश्चिमोत्तर भारतीय शिल्प एवं वास्तु कलाओं की परम्परा को तिब्बत में विकसित करने में महान् योगदान किया है ।

श्रुतिपरम्परा में ऐसी प्रसिद्धि है कि रिन् छेन् जंग पो ने स्वयं १७ सूत्र, ३३ अभिधर्म और १०८ तन्त्र के ग्रन्थों का नया अनुवाद किया ।

‘क-ग्युर’ एवं ‘त-ग्युर’ के दे-गे संस्करण में आज उनके नाम से अनूदित कुल मिलाकर १६० विभिन्न ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं ।

रिन् छेन् जंग पो की बृहत्, मध्यम एवं लघु-इंस तरह तीन जीवनियाँ लिखी गई—ऐसा उल्लेख मिलता है । परन्तु उनमें से बृहत् जीवनी की कोई भी प्रति हमें उपलब्ध नहीं हुई । मध्यम जीवनी, जो उनके साक्षात् शिष्य ज्ञानश्री द्वारा रचित है, उसकी एक प्रति प्रो० स्नेल ग्रोव ने अपने ग्रन्थ “लद्दाख की सांस्कृतिक धरोहर” भाग प्रथम में प्रकाशित की है । दो अन्य पाण्डुलिपियाँ हमें प्रो० सेम्पा दोर्जे जी से उपलब्ध हुई हैं ।

इन सब प्रतियों का मिलान करके आचार्य रोशनलाल नेगी ने इसका सम्पादन-किया है और साथ ही हिन्दी में अनुवाद भी किया है ।

इस वर्ष जून १९९६ में रिन् छेन् जंग पो द्वारा स्मृति में स्थापित ताबो महाविहार के सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में वहाँ एक महोत्सव होने जा रहा है । इस अवसर पर परम पावन १४वें दलाई लामा जी वहाँ कालचक्र का अभिषेक भी देने जा रहे हैं । इसी अवसर पर आदरणीय पूज्य क-ग्युर रिन्पोछे जी ने करुणा-फाउन्डेशन के माध्यम से वहाँ एक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद-गोष्ठी का भी आयोजन किया है ।

इस अवसर पर इस ग्रन्थ का हिन्दी एवं तिब्बती में प्रकाशन करके एक पुण्य कार्य किया जा रहा है । इससे अनेक जिज्ञासुओं का तो कल्याण होगा ही, साथ ही रिन् छेन् जंग पो जी की चिर-अनुस्मृति के लिए भी यह महान् योगदान होगा— ऐसा मैं विश्वास करता हूँ । इसके लिए सभी सम्बद्ध महानुभाव हमारे साधुवाद के पात्र हैं ।

बुद्धपूर्णिमा
३ मई १९९६

समदोङ् रिन्पोछे
निदेशक
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा-संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी ।

दो शब्द

सम्राट अशोक के काल के बाद कितने ही विदेशी यात्रियों एवं ज्ञान पिपासुओं ने नालन्दा, विक्रमशिला, तक्षशिला, ओदन्तपुरी आदि प्राचीन भारतीय विद्या केन्द्रों में आकर विद्यार्जन किया और भारतीय धर्म-दर्शन-साधना एवं लोक नीति के कितने ही साहित्यों को साथ लेकर गये अथवा अपनी मातृभाषा में अनुवाद कर समाज का उपकार किया । इस ज्ञान रश्मि का एक बहुत बड़ा पुञ्ज अपने मूल रूप को खो चुका है, अतः उन अनुवादकों के परिश्रम का महत्त्व आज बहुत बढ़ गया है विशेषकर भारतीय सन्दर्भ में तो इन अनूदित ग्रन्थों के बिना सब कुछ अपूर्ण है ।

१५८ में ऐसे ही एक महापुरुष महा-अनुवादक तिब्बत के गुगे नामक उत्तरी सीमा-प्रान्त में प्रादुर्भूत हुये, जिन का बचपन का नाम रिन्छेन वेंड्रुग (=रत्नेश्वर) था । तेरह वर्ष की अवस्था में उपाध्याय लेगस्-पा जङ्पो (=सुभद्र) से प्रव्रजित होने पर उनका नाम रिन्छेन जङ्पो (रत्नभद्र) रखा गया । अपने घर की ही एक छोटी सी घटना से उनके जीवन में महान् परिवर्तन आया । जो इस प्रकार है- १७ वर्ष की आयु में उनके घर पर भारत के ओड्डियन से एक पण्डित आये और रिन्छेन जङ्पो की माँ ने एक लघु आसन सजा कर उन्हें भोजन कराया । वह पण्डित उसी स्थान पर संस्कृत का एक सुन्दर भारतीय ग्रन्थ भूल गया । रिन्छेन जङ्पो को उस ग्रन्थ को समझने की बलवती इच्छा पैदा हुई परन्तु वे संस्कृत भाषा नहीं जानते थे, इसी जिज्ञासा से प्रेरित होकर संस्कृत भाषा एवं बौद्ध-धर्म-दर्शन के अध्ययन के लिये लालायित हो १८ वर्ष की आयु में किन्नौर-लाहुल के रास्ते होते हुये वे काश्मीर पहुँचे ।

काश्मीर में गुणमित्र, श्रद्धाकर वर्मा, नरोपा, बुद्धश्री एवं कमलगुप्त आदि से विद्या प्राप्त कर बहुत से संस्कृत ग्रन्थों को तिब्बती भाषा में अनुवाद किया । तत्पश्चात् जङ्घाचारिका सिद्धि कर पूर्वी भारत

गये और जिनमित्र, उपाध्याय ज्ञान, शीलेन्द्र बोधि आदि मर्मज्ञ विद्वानों के सम्पर्क में आये । रिन्छेन जङ्पो अब लोचावा (=अनुवादक) के कार्य में निपुण होकर कला में भी दक्ष हो गये थे । उन्होंने गम्भीर साधनायें भी की । वे सात वर्ष काश्मीर एवं तीन वर्ष पूर्वी भारत रहकर स्वदेश लौटे । पुनः दूसरी बार काश्मीर की यात्रा की और छः वर्ष बाद बहुत से भारतीय पण्डितों एवं ३२ शिल्पकारों के साथ स्वदेश लौटे ।

रिन्छेन जङ्पो ने तीन प्रमुख कार्य किये हैं— पहला कार्य बुद्धवचन एवं अन्य ग्रन्थों का अनुवाद करना है जो कि बुद्ध के वाक् का प्रतीक है । उन्होंने लगभग १६० से अधिक ग्रन्थों का संस्कृत से तिब्बती अनुवाद किया है जिनमें अधिक ग्रन्थ तन्त्र के हैं ।

दूसरा प्रमुख कार्य में १०८ विहारों एवं मन्दिरों का निर्माण करना है, इन विहारों एवं मन्दिरों को भारतीय शैली के भित्तिचित्रों एवं मूर्तियों से सजाया गया जो बुद्ध के काय का प्रतीक है । इस स्थापत्य कार्य का क्षेत्र तिब्बत के गुगे प्रान्त से लेकर भारतीय सीमान्त क्षेत्र लद्दाख, लाहुल, स्पीति तथा किन्नौर के होपुलडका (=सईराक, वर्तमान कर्ली क्षेत्र) तक था ।

तीसरा प्रमुख कार्य अनगिनत स्तूपों का निर्माण था जो कि बुद्ध के चित्त का प्रतीक स्वरूप है ।

रिन्छेन जङ्पो का विस्तृत जीवन परिचय प्राप्त नहीं होता मगर उन्हीं के प्रत्यक्ष शिष्य गुगे के ख्यिथड निवासी ज्ञानश्री= *ཀྱི་ཤང་པ་ཡེ་མེས་* ५५५५ द्वारा विरचित यह जीवनी बहुत प्रसिद्ध है जिसे मध्यम आकार का कहा गया है । इसी का हिन्दी अनुवाद विद्वानों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है ।

रत्नभद्र की ८८ वर्ष की अवस्था में गुगे के राजा के निमन्त्रण पर महापण्डित दीपङ्करश्रीज्ञान गुगे पहुँचे । भारत एवं तिब्बत के इन दो महापुरुषों के समागम का मार्मिक वार्तालाप भी इसी जीवनी के अन्त में उपलब्ध होता है ।

रत्नभद्र ने काश्मीरी कलाकारों के साथ मिल कर १९६ में स्पीति के ताबो विहार का निर्माण किया था । इस विहार के सहस्राब्द पूर्ण होने के शुभ अवसर पर करुणा फाऊण्डेशन द्वारा लोचावा रिन्छेन जङ्पो के व्यक्तित्व एवं कृतित्व नामक विषय पर एक पँच दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है । इसी संगोष्ठी की प्रबन्धक समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि रिन्छेन जङ्पो की उपलब्ध जीवनी का मूल रूप के साथ बिना विवेचना के सीधा-सीधा शाब्दिक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जाये, ताकि यह प्राप्त जीवनी विद्वानों को सुलभ हो । इसी अनुसार करुणा फाऊण्डेशन के अध्यक्ष ने इस कार्य को मुझे सौंपा तो मैंने यथा शक्ति प्रयास कर इसे सम्पन्न किया । समय आभाव एवं अपनी अल्पज्ञता वश इसमें हुई सम्भावित त्रुटियों के लिये मैं विद्वान् पाठकों से क्षमा चाहता हूँ ।

रिन्छेन जङ्पो द्वारा अनूदित एवं सम्पादित १६० ग्रन्थों की विवरण तालिका कंग्युर एवं तंग्युर दे-गे सूचीपत्र के आधार पर इस पुस्तिका के अन्त में एक परिशिष्ट जोड़कर दिया जा रहा है । समय के अत्यन्त अभाव के कारण यह तालिका मैंने जल्दी में तैयार की है अतः, सम्भावना है कि रिन्छेन जङ्पो द्वारा अनूदित या सम्पादित और भी ग्रन्थ हो सकते हैं ।

इस कार्य में मुझे प्रेरित कर इसे प्रकाशित करने के लिये मैं करुणा फाऊण्डेशन के अध्यक्ष पूज्य कान्जुर रिन्पोछे जी का हृदय से आभारी हूँ तथा करुणा फाऊण्डेशन का कृतज्ञ हूँ ।

गुरुवर आदरणीय प्रो० सम्दोड रिन्योछे जी तो मेरे हर सत्कार्य के प्रेरणा स्रोत हैं और अत्यन्त व्यस्त रहने के उपरान्त भी उन्होंने कृपा कर इस पुस्तक का प्रकथन लिखा है, मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ ।

प्रो० सेम्पा दोर्जे जी ने समय-समय पर अपने अनुभवी सुझाओं से लाभान्वित किया, पं जनार्दन पाण्डेय जी ने कृपा कर अनुवाद की पाण्डुलिपि को पूरा पढ़ा और भाषा को सहज बनाया तथा डॉ० वड्डुक्क दोर्जे नेगी एवं रामगोपाल नेगी ने मेरी कई तरह से सहायता की है, इन सबका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ । विद्याभारती भाग १०. में विद्यासागर नेगी के विवेचनात्मक अनुवाद से लाभ हुआ तथा थुपतन छेरिंग ने पत्रिका का यह अंक सुलभ किया अतः ये दोनों धन्यवाद के पात्र हैं । सुश्री टाशीडोलमा ने कम्प्यूटर पर बड़ी कुशलता से प्रेस कापी तैयार की है, इन्हें धन्यवाद देना मेरा कर्तव्य बनता है ।

अन्त में मैं परिणामना करता हूँ कि-

यत्किञ्चिज्जगत्तो दुःखं तत्सर्वं मयि पच्यतां ।

बोधिसत्त्वशुभैः सर्वैर्जगत् सुखितमस्तु च ॥

जगत् का जो कुछ दुःख है वह सब मैं भोगूँ और बोधिसत्त्व के सब पुण्यों से जगत् सुखी हो ।

सारनाथ

रोशनलाल नेगी

१९ अप्रैल १९९६

དཀར་ཆག विषयानुक्रमणी

ཆེད་བཟོད།	ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ།	ག - བ
प्राक्कथन	प्र० समदोङ रिन्पोछे	क- ख
दो शब्द		i-iv
འོ་ལྟ་བུ་ཆེན་པོའི་རྣམ་ཐར།		1-33
महालोचावा की जीवनी		35-62
परिशिष्ट	ཁ་སྐོར།	63-106



ལོ་ཆེན་རིན་ཆེན་བཟང་པོ།

RINCHEN ZANGPO

The Great Translator

༡༣། །ཤུང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་ལོ་རྩ་བ་རིན་ཆེན་བཟང་པོའི་

འཁྲུངས་རབས་དཀའ་སྤྱད་སྒྲོན་མ།

རྣམ་ཐར་ཤེལ་ཤིང་ལུ་ག་རྒྱུད་ཅིས་ཤུ་བ་བཞུགས་སོ།

..... ཉི་ཁྲོན་མའི་རྒྱལ།

སྒྲིས་མཆོག་ལོ་རྩ་ཆེན་པོའི་ཞབས་ལ་འདུད།

སྤྱ་མ་དམ་པ་འདི་ཉིད་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་རྗེས་སུ་དྲན་ཕྱིར་དང་།

དད་པའི་ལྷ་ག་བསྐྱེད་པ་དང་། ཞལ་རྣམས་གསུངས་པ་ཐོས་པའི་ཕྱིར།

རྣམ་ཐར་མདོ་ཅམ་བྲིས་པར་ཤུས། དེ་ལ་ཤུང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་

དའི་རྣམ་ཐར་ཅུང་ཟད་ཅིག་བྲིས་པ་ལ། དོན་རྣམ་པ་བཅུ་གཅིག་གི་སྒྲོ་

རྣམས་བསྟན་དེ།

སྒྲིས་བྱ་ཆེན་པོ་དེ་ལ་ལུང་ཇི་ལྟར་བསྟན་པ་དང་གཅིག

གདུང་བརྒྱུད་གང་ཡིན་པ་དང་གཉིས།

སྒྲི་གང་དུ་འཁྲུངས་པ་དང་གསུམ།

རབ་དུ་ཤུང་བ་གང་དུ་མཛད་པ་དང་བཞི།

ལོ་རྩ་ལ་སོགས་པ་སྒྲོབ་སྒྲུངས་གང་དུ་མཛད་པ་དང་ལྔ།

སྤྱ་མ་དང་མཁན་པོ་གང་ལ་ཆོས་ཞུས་པ་དང་དྲུག

དམ་ཆོས་ཇི་ལྟར་བསྟར་པ་དང་བདུན།

གནས་གཞི་གང་དང་གཅུག་ལག་ཁང་ཇི་ལྟར་བཞེངས་པ་དང་བརྒྱད།

ཡུལ་རྒྱུད་ཉི་ཤུ་ཙ་གཅིག་ཇི་ལྟར་མཆོད་པ་དང་དགུ
 སྒྲུབ་པ་ཁྱད་པར་ཅན་གང་དུ་མཛད་པ་དང་བཅུ།
 བཀས་གང་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་པ་དང་བཅུ་གཅིག་གོ།

དང་པོ་སྒྲུབ་པས་ལུང་བསྟན་པ་ནི།

ང་ནི་མྱ་ངན་འདས་འོག་དུ། ལོ་ནི་ལྷ་བརྒྱ་ཕྱག་བདུན་ནས།
 དགེ་སློང་བྱ་ཡི་གདོང་ཅན་འབྱུང་། ང་ཡི་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱེད།
 ཅེས་མདོ་དང་རྒྱུད་དུ་མ་རུ་ལུང་བསྟན་པ་འོ།

གཉིས་པ་ནི་སྤྱི་མ་དེའི་བཞུགས་ཡུལ་ཙ་བ་ནི་གྲག་ཤིང་ཁྱ་ཅི་

དུགས་ཐེར་བ་ཡིན། རིགས་ནི་ཁྱ་ཅི་གཡུ་སྤྱིའི་གཤེན་རྒྱུད་ཡིན།
 གདུང་བརྒྱུད་ནི་ལྷ་རབས་དུག་གི་ནང་ནས་ཡོད། ལྷ་ཉི་མ་དུགས་ཀྱི་
 བརྒྱུད་ཡིན་པས། དུགས་ཐེར་ཞེས་བྱའོ། །ཁང་པོ་སྤྱུ་ལ་འབྲེལ་
 བས་སྤྱ་ཟླ་ཟླ་ཞེས་ཀྱང་ཟེར་རོ། ས་སྤོ་བཅུ་གསུམ་ཡོད་པའི་ནང་ནས།
 མེས་གཡུ་སྤྱ་སྤོང་བཅན་གྱི་སྤྱས་གཉིས་ཡོད་པ་ལ་གཅེན་པོ་ནི་རབ་བྱུང་
 ཡིན་ཡང་ཁྱིམ་ཐབས་མཛད་པ་ཡིན། མཆན་པན་ཆེན་པོ་གཞོན་ཀུ་
 དབང་ཕུག་ཅེས་བྱའོ། །རུང་པོ་ནི་གུང་སྟོན་ཆེན་པོ་གཡུ་ཐོག་སྤྱ་ཞེས་བྱ་
 བ་ཡིན་ནོ།

བན་ཆེན་པོ་གཞོན་ཀུ་དབང་ཕུག་ལ། ལོ་རྒྱུ་བ་ལ་སོགས་པ།

སྤྱས་ལུམ་སྤིང་བཞི་འབྲངས་པའི་མི་བརྒྱུད་རྣམས་ནི། གཡུ་སྤྱ་གཤེན་
 པོ་ཞེས་བྱ་སྟེ། རི་པ་ཤི་ཅེར་པ། ཀྱུ་ཤང་པ། རོ་པག་པས་

རྒྱལ་པོ་ཡིན་ནོ། །གུང་སྒོན་གཡུ་ཐོག་སྒྲུ་ལ། ལོ་ཅུང་ལིགས་པའི་
ཤེས་རབ་ལ་སོགས་པ་སྤྲོས་གསུམ་འཁྲུངས་པའི་བརྒྱུད་རྒྱལ་པོ་
གཡུ་སྒྲུ་ཅང་པོ་ཞེས་བྱ་བ། ཟར་མང་པ། རྟོན་ཁར་པ། མ་
ཡང་པ། ཅ་ཏང་གིས་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ནོ།

གསུམ་པ་འཁྲུངས་ཡུལ་ནི། སྤྱི་མེས་གཡུ་སྒྲུ་སྒྲོང་བཙན་གྱི་
མཆོད་པའི་ཡུལ་**གུ་མང་དང་རྟིམ་**ཤེས་བྱ་བར། **ལབ་**གི་མཚན་ནི་
བན་ཆེན་པོ་བཞོན་དུ་དབང་ཕུག་ཅེས་བྱ་བས། **ལུམ་**ཅོག་རོ་ཟ་**གྲོན་**
བཟང་ཤེས་རབ་བརྟན་མ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལ་སྤྲོས་ལུམ་སྤྱིང་བཞི་
འཁྲུངས་ཏེ། གཅེན་ཤེས་རབ་དབང་ཕུག་ གུང་རིན་ཆེན་དབང་
ཕུག་ ཅུང་ཡོན་ཏན་དབང་ཕུག་ ལུམ་མོ་ནི་གྲོན་སྤྱིང་ཤེས་རབ་
མཆོ་མོ་ཞེས་བྱའོ།

སྤྱི་མ་ལོ་རྒྱ་ནི་གུང་**རིན་ཆེན་དབང་ཕུག་**ཡིན་ནོ། །གཅེན་
ཤེས་རབ་དབང་ཕུག་ནི་བྱིམ་པའི་ཆ་བཟུང་། ཅུང་ཡོན་ཏན་དབང་ཕུག་
ནི་རབ་དུ་བྱུང་ནས་སྤྲོས་ལས་ཆུང་དུ་ལ་བཞུགས། ལུམ་མོ་ནི་དགེ་
སློབ་མར་བྱུང་ནས། གསང་སྤྲོས་ཀྱི་ཆོས་རྒྱལ་པོ་བསྐྱབས་པས་གྲུབ་
པ་ཐོབ་སྟེ། རྒྱལ་འབྲོར་མཆོས་ཀྱི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱའོ།

ལོ་རྒྱ་བ་བྱུང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡུམ་གྱི་རུམ་དུ་ཞུགས་པའི་ཆེ།
ཡུམ་གྱི་སྤང་བ་ལ། དུས་ཉིན་མཚན་མེད་པར་དྲག་དུ་སྤྲུག་པ་གཡས་
པ་ལ་ཉི་མ། གཡོན་པ་ལ་སྒྲུ་བ། སྤྱི་གཙུག་དུ་གསེར་གྱི་བྱ་བྱུང་

གཡུ་ཡི་མཚུ་སྤེར་ཅན་གཅིག་ ངག་ནས་སྟན་པའི་སྒྲ་སྒྲ་ཚོགས་སྒྲིག་
 ཅིང་། སུར་སུར་ལྷབ་ལྷབ་བྱེད་བྱེད་ཅིས་སྤང་བ་ཤར་བ་ཞིག་བྱུང་།
 ཟླ་དག་ངོས་བཅུའི་བར་དུ་བཞུགས་ཅམ་ན་ཡང་། ལུས་བདེ་བ་ཡང་
 བ་ནད་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ལྷས་བཟང་པོ་བྱུང་ནས། དེ་ནས་བཙས་
 དུས་ལ་བབས་ཅ་ན། གསེར་གྱི་བྱ་ཁུང་དེ་ཡུམ་གྱི་སྤྱི་གཙུག་དུ་ཐིམ་སྟེ།
 གསང་གནས་ཐོན་ནས་ཡུམ་ལ་བསྐྱོར་བ་ལན་གསུམ་བྱས་དེ། རྣམ་
 མཁའ་ལ་སྦྱོད་ཅིང་འགྲོ་བ་ཞིག་མྱིས། མེ་དོག་གི་ཆར་ཡང་འབབ་པ་
 ལ། དེ་ནས་ཡོད་པའི་མི་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མ་ཐུ་བ་ཅི་ཀྱང་མྱིས་སོ།།

དྲ་ལོ་དབྱར་ཟླ་ཐ་ཆུང་གི་ཆེས་བཅུ་ལ་ཡུམ་གྱི་མཛད་གི་ཞིང་ནར་
 མོ་ཞིག་དུ་ཡུར་མ་མཇེད་ཅིང་ཡོད་པ་ལ། ཡུམ་ཚུང་ཟད་སྐྱེ་ཁམས་
 ལོག་ནས་ཞིང་གཉའ་རུ་བྱོན་པས། དངོས་སུ་ཡུམ་གྱི་དཔུང་པ་གཡས་
 པ་ལ་མ་བྱ་ཞིག་བབས། གཡོན་པ་ལ་ཁུ་བྱག་ཅིག་བབས། སྤྱི་
 གཙུག་དུ་ནི་ཅོ་གཅིག་བབས་སོ། །ཡབ་གྱི་འདི་འདྲ་བའི་བྱ་རྣམས་གང་
 རྣམ་ཡོང་། གསུང་ཅམ་ལ་གསུམ་ཀ་ཡུམ་ལ་ཐིམ་མོ། །དེ་ཀར་
 ཡུམ་ལ་སྤྱང་བྱག་མེད་པར་བལྟམས་པ་ལ། བྱིའུ་སྐྱེ་མདོག་སྤྱོད་བ་བྱའི་
 གདོང་པ་དང་བྱའི་མིག་དུ་ཡོད་པ། བྱག་གཡས་པའི་མཐིལ་ན་འཁོར་
 ལོའི་རི་མོ་ཡོད་པ་གཅིག་བལྟམས་སོ།།

དགའ་ལོ་གཉིས་ལོན་པ་ལ་ཡང་ཞལ་ནས་ཨ་ཨ་ཨ་ཨ་ཨི། ཞེས་
 གསུང་ཞིང་ས་ལ་ཡང་དེ་ལྟར་བྱིས་ནས་ཐལ་མོ་སྒྲར་ནས་བཞེད་པ་ཅིག་

མཛད་ཅིང་བཞུགས་པ་ལ། ཡབ་ན་རེ་འདི་ལས་ཕྱོས་ཅན་ཞིག་གདུག་
གསུངས། ན་བཟའ་ཡང་སེར་པོ་བསྐྱོན་ནས་དགེ་བསྟེན་དུ་མཛད་དོ།
དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འབྲངས་རབས་ཀྱི་མཛད་པའོ།

བཞི་པ་རབ་དུ་བྱང་བ་ནི། མཁན་པོ་ལེགས་པ་བཟང་པོ་ལས།
དགུང་ལོ་བཅུ་གསུམ་པ་ལ་རབ་དུ་བྱང་བར་མཛད་དེ། མཚན་ཡང་
རིན་ཆེན་བཟང་པོ་ཞེས་བདགས་སོ། །མཁན་པོ་ནས་སུམ་བརྒྱ་པ་
གསན་པ་འབྲེལ་པ་དང་བཅས་པ་མོད་ལ་ཐུགས་སུ་ཆུད་དོ།

ལོ་རྒྱུ་བ་སྟགས་ཀྱི་སྟོབ་གཉེར་ཇི་ལྟར་མཛད་ཆུལ་ནི། དགུང་
ལོ་བཅུ་བདུན་བཞེས་ཅམ་ནས། ཟླ་རྒྱན་ནས་བྱོན་པའི་པརྟེ་ཏ་གཅིག་
གི་ཡུམ་ལ་གདན་ཆུང་སྤངས་ནས་བཟའ་བ་དྲངས་པའི་ཤུལ་དུ་རྒྱའི་བེ་
བུམ་ལེགས་པོ་ཞིག་ལུས་ནས་འདུག་པ་དེ་ཕྱི་རུ་ལོ་རྒྱུ་བས་གཟིགས་ནས།
བསམ་པ་ལ་རྒྱའི་བེ་བུམ་འདིའི་ནང་ན་གདམ་ངག་ཁྱད་པར་ཅན་འདྲ་
བཞུགས་དེ་ཡོད་པ་ལ། ངས་རྒྱ་ཡིག་ནི་མི་ཤེས་པ་དགོངས་ནས།
ཡུལ་འོག་མར་གིང་གི་བསིལ་གྱི་བ་ལ་གཟིམ་ཞིང་བཞུགས་པའི་ཆེ།
མནལ་གཟིམ་པ་དང་ཐུགས་ལམ་དུ་བྱད་མེད་ག་ཅི་དམར་བ་རིན་པོ་ཆེའི་
ཅོད་པན་དང་། གདུ་བྱ་དར་འཕྲང་ལ་སྟགས་པས་བརྒྱན་པ་གཅིག་
ཐུག་གཡས་པ་ཏ་མ་རུ་འཁྲོལ་བ། གཡོན་པ་མེ་དོག་གི་སྟོང་བྱ་པར་
གང་བསྐྱམས་ནས་མདུན་དུ་འོངས་ནས་འདི་སྐད་ཅས་ཟེར་རོ།

སྟོན་བུའི་ཁ་རྒྱས་རང་ལུས་བཅིངས་པ་ལྟར།

ཡུལ་ལ་བཞིན་པ་བདུད་ཀྱི་རྒྱ་རུ་ཚུད།
 བདེ་འགྲོ་ཐར་པ་འདོད་པའི་མི་སྲུང་ག།
 བྱང་ཕྱོགས་ཁ་ཆེའི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་ནས་ཀྱང་།
 རྒྱ་གར་གར་རྒྱབ་ཆུ་བཞིན་བྱུགས་ནས་ནི།
 དམ་ཚཱ་རྒྱ་མཚོ་བོད་དུ་བསྐྱར་ན་བདེ།

ཅེས་པའི་སྐྱ་དེ་སྐྱས་ནས་མི་སྐྱང་བར་གྱུར་དོ། མནལ་
 བསད་པ་དང་ལུས་ཐམས་ཅད་རྩལ་ནས་ཆུར་ཞུགས་པ་ལྟར་སོང་ངོ་།
 དེར་ཐུགས་ཀྱང་འཕྱོ་བ་ལྟར་སོང་ཐུགས་སྐྱོ་བ་སྐྱམ་དུ་བྱུང་ནས་ཁྱིམ་དུ་
 བཞུད་དོ། །དེར་ཐུགས་དགོངས་བཏང་བས། བདག་ལ་ནི་མཁའ་
 འགྲོ་མའི་ལུང་བསྟན་པ་འདུག་པ་ལ། ད་དེ་ཁ་ཆེ་དང་རྒྱ་གར་དུ་མ་
 ཕྱིན་ན་ཚཱ་དང་སྟོག་གི་བར་ཆད་དུ་འགྲོ་བ་འདུག། ཕྱིན་ན་ཡང་ས་
 རྒྱས་ལེགས་པོ་མི་ཉེས་པས་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་ཀྱི་ཐུགས་བརྟུགས་ནས་ང་ལ་
 བག་ཆགས་ངན་པ་སོག་པ་འདུག་དགོངས་ནས་ཐུགས་འཁོར་བཞིན་
 བཞུགས་པ་ལ། ཡུམ་གྱིས་སྐྱས་ཀྱི་ཞལ་ལ་གཟིགས་ནས་ཤིན་དུ་ནག་
 པ་གཟིགས་དེ། བྱ་ན་བའམ་ཅི་སྟེང་ནག་ཅེས་དྲི་བ་མཛད་པས།
 རྒྱར་མཁའ་འགྲོ་མས་ལུང་བསྟན་པའི་ལོ་རྒྱུས་དེ་ཡབ་ཡུམ་རྒྱམས་ལ་ཞིབ་
 དུ་བཤད་དོ།

དེ་ནས་ཡབ་ཡུམ་དང་། མཆེད་སྟོན་རྒྱལ་མོལ་གྲོས་
 མཛད་པ་ལ། ཡབ་ན་རེ་འདི་མ་བཏང་ན་ཚཱ་དང་སྟོག་གི་བར་ཆད་

དུ་འགྲོ་བ་འདུག། །བཏང་ན་འོ་སྒྲིལ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱིང་འཆེར་བར་འདུག་
 པ་ནའང་། བཏང་བའི་གྲོས་བྱས་ནས། །ཁ་ཆེར་བྱོན་པར་བྱ།
 རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ལ་ད་རེ་མི་འགྲོ་བར་ཁ་ཆེ་ནས་འཁོར་བར་བྱས་སོ།
 དེ་ནས་རང་རེའི་ཨ་པོ་བཀྲ་ཤིས་ཅེ་མོ་བྱ་བའི་དགེ་བསྙེན་གཅིག་སྦྲེལ་
 གྲོགས་བཅོལ་དེ། **དཔུང་ལོ་བཅོ་བཙུན་པ་**ལ་ཡག་ལོ་ཡུལ་ནས་ཆས་
 ཏི་ཐོན་པ་དང་། འགྲོན་བྱ་དུག་བརྒྱ་ཅམ་དང་ཕྱག་རྩས་མང་དག་ཅིག་
 བསྐྱམས་ནས། ཡུམ་གྱིས་ཁ་ཟས་ཀྱི་བྱི་བྱག་མང་དང་། བཞོས་
 རྒྱགས་བསྐྱར་དེ། ར་བཟའ་རྩལ་བག་དང་ཆས་དེ། ཉུང་དྲིའི་མོན་
 ས་རྒྱས་ཤིས་པ་གཅིག་དང་གསུམ་བཞེབས་དེ། ཡུམ་གྱིས་བྲོས་རྩལ་ས་
 བར་དུ་སྒྲེལ་མ་མཛད་དེ་བྱོན་ཞོ།

ཁྱུ་ནས་གར་ཞུ་ལ་ཐོན་དེ་གཤེགས་པ་ལ། བསོད་སྦྱེམས་
 མཛད་ཅིང་གཤེགས་སོ། །དེ་ནས་ལྷ་གཅིག་དང་ཞག་གསུམ་གྱི་ངོ་ལ་ཀ་
 རི་ཀ་ཞིས་པའི་གྲོང་དུ་སྒྲིབ་པ་དང་། གྲོགས་པོ་ཉུང་དེ་བཀྲང་འགྲོ་ལ་
 འཆེར་ནས་འོང་དུ་མ་འདོད་དོ། །དེར་རང་ཉིད་རྗེ་འབངས་གཉིས་པོ་
 ཁོ་ནས་བྱོན་ཞོ། །ཞག་གསུམ་གྱི་ལམ་དུ་གཤེགས་པ་དང་མ་རྒྱ་སང་ག་
 ལ་བྱ་བའི་ཟམ་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་དུ་སྒྲེལ་ཅ་ནས། ཤོག་གམ་འདོན་
 པའི་ལམ་བསྐྱང་མི་བསྐྱུན་པ་གྲོང་གསུམ་པ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ། འགྲོན་
 བྱ་ལྔ་བཅུ་ཅམ་བྱིན་ནས་རྩལ་གཅིག་འཆེར་ཞིང་གཟིམས་སོ།

ཕྱི་དེ་ལྔ་བ་ནས་ཟམ་པ་ཐོན་དེ་བྱོན་པ་ལས། ལ་གཅིག་གི་

སུམ་ཉིས་ཙམ་དུ་སླེབ་ཅ་ནས། ཨ་པོ་ནད་དྲག་པོ་གཅིག་གིས་ཟིན་དེ་
 གི་བ་ལ་ཐུག་པ་དང་། རང་ཉིད་ཀྱང་ཐུགས་ལྷག་པ་ལྟར་སོང་དེ་སྐྱ་
 ལུས་ངལ་བ་དང་མནལ་དུ་སོང་ངོ་། །དེའི་སྐབས་སུ་གི་སྤྱིད་ཀྱི་ཆོམ་
 ཀྱུན་གསུམ་བརྒྱ་ཙམ་འབྲུལ་བྱེད་པ་དང་འཛོམ་པ་ཡོད་པ་ལ། མི་
 ལམ་དུ་ཐུར་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་བྱོན་ནས། སུ་ལོངས་གིག་ནད་པ་ལ་
 བློ་མདང་གི་ཟམ་པ་ན། ཆོས་པ་ལ་མི་དགའ་བའི་གནོད་སྤྱིན་མོ་
 གཅིག་ཡོད་པ་དེ་བར་ཆད་བྱེད་བསམ་པ་ཡིན་དེ། དེ་བདག་གིས་སྒྲིག་
 རྒྱུ་ནད་པ་ལྟར་དུ་སོས་པ་ཡོད་དོ། འདིར་བསྐྱེད་ན་ཇག་པ་ལྟར་དུ་
 འོང་བར་འདུག་པས། ལམ་གོལ་བ་ཞིག་དུ་སོང་ལ། དཀོན་
 མཆོག་ལ་གསོལ་བ་དྲག་པོ་ཐོབ་ཅིག་ཅིས་ཟེར་བ་དང་། དེ་མ་ཐག་དུ་
 སྐྱག་གི་བཞིངས་ནས་ནད་པའི་ལག་པ་ནས་ཕུག་གིས་ཁྲིད་དེ་གསོལ་བ་
 འདེབས་གིང་གོམ་པ་བཞི་བརྒྱ་ཙམ་སོང་བ་དང་ཕྱིར་གཟིགས་པས།
 ཐུར་གྱི་ཤུལ་དུ་མཚན་ཐོགས་པའི་ཇག་པ་རྒྱམས་ཀྱིས་སླེབ་འདུག་སྟེ།
 དཀོན་མཆོག་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས་མ་མཐོང་བར་ལམ་
 སྤང་པོར་སོང་ངོ་། །དེ་ནས་ནད་པ་ཡང་སོས། ཇག་པའི་འཛིགས་
 པ་དང་ཡང་བྲལ་དེ། ཐུགས་བདེ་དབུགས་དབྱུང་ནས་དགའ་བ་དང་
 སྒྲིས་པའི་སེམས་ཀྱིས་ལ་ཐོན་པོ་དེ་ཐོན་ནས་ཕྱིན།

ཉི་མ་གསུམ་ཙམ་དུ་ཅི་ཡང་གསོལ་བྱུ་མེད་པ་ལས། རྒྱགས་
 སེབ་གྱི་ཤུལ་ཀ་ཅིག་ནས་མར་བྱོན་པ་དང་། བཀ་མོ་མ་སྤྲད་གཉིས་

འབྲས་ཁྲུ་རེ་རེ་བྱིས་འོང་བ་དང་ཕྱད་དོ། །ཕྱག་བཟེད་དེ་སྒྲོང་བའི་
 བདེའ་མཇེད་པས་འབྲས་པར་བ་བཞི་ལྟ་ཅམ་སྤུལ་ལོ། །འབྲས་དེ་
 བསྐྱེད་ནས་གསོལ་བ་གྲུ་མོམ་པར་གྱུར་དེ། དེར་སྤྱིན་ལན་གསུང་ཞིང་
 ཐུགས་དགོངས་ལ་གྲན་པོ་མ་སྤྱད་གཉིས་ནི་མ་དང་སྤིང་མའི་དོད་དུ་བྱུང་
 བས། དྲིན་ལན་དུ་སངས་གཞིས་མཚོད་རྟེན་བརྒྱ་རྩ་བཏབ་དགོས་
 དགོངས་ནས། གན་མོ་ལ་ཁྱོད་སྒྲིའི་རྩེ་མོ་ནས་དུམ་ཅིག་སྒྲོང་བའི་
 བདེའ་མཇེད་པས། གན་མོ་སེམས་གིན་དུ་དཀར་བས། བྱིད་ལ་
 དགོས་ན་སྒྲིའི་པོ་ཚོད་ལ་བྱིས་ཅེས་བདེའ་བྱེད་དོ།

དེར་ལོ་རྒྱུ་བ་ཚོས་ཁྲུག་གི་ནང་ན་བ་སོའི་ཐུགས་མེ་ཆེན་པོ་
 མཚོན་གང་བ་ཅིག་བཞུགས་པ་བསྟན་ནས། མཚོད་རྟེན་རྩིས་སྤྱི་དཔེ་
 བསྟན་ནས་དེར་འདི་བསྐྱེད་བྱ་ཡིན་ཞེས་ཕྱག་གི་བདེའ་མཇེད་པས།
 གན་མོ་འགའ་ཞིང་ཡིད་རངས་ནས་སྒྲིའི་རྩེ་མོ་ནས་དུམ་གཉིས་ཅམ་དུམ་
 ཅིག་བཅད་དེ་སྤུལ་ནས། ཕྱག་བཅའ་ནས་ཁྱེ་ཕྱུང་སྒྲིའི་ལག་པ་ནས་
 བཟུང་ནས། འདི་ཆད་ནས་མེད་ཅེས་བདེའ་བྱེད་དོ། འཆི་མ་
 བྱུང་སྒྲིའི་སོང་ངོ་། །དེར་ཁོང་ཡང་སྤྱིང་མེ་སྒྲིའི་ནས་སྤྱིན་ཆབ་ཅིག་བྱུང་
 གསུང་ངོ་། །ཁྱིས་ཁ་ཆེ་རུ་ཕེབས་སྐབས་གན་མོའི་ཆེད་དུ་སྒྲིའི་དུམ་
 བསྐྱེད་ནས་མཚོད་རྟེན་བརྒྱ་རྩ་མང་པོ་བཏབ་པོ།

ལྷ་མོ་ནི་དེ་ནས་ཉི་མ་ཕྱེད་ཅམ་ནས་ཁ་ཆེའི་ཡུལ་སྤྱི་ཐེན་ནས།
 དུམ་ཟེ་གྲོང་བདུན་པ་གཅིག་དུ་སྤྱིབ་དེ་དེར་ཁྱེ་བ་གཅིག་ཅམ་བཞུགས་ནས་

ཕལ་སྐད་ཨི་ཅམ་བསྐྱབས་སོ། ། དེ་ནས་ཞག་གཅིག་གི་ལམ་དུ་གྱིང་
 བྱུང་ཞིག་ན། རྩོ་གི་རྣལ་འབྱོར་པ་གཅིག་གི་ལམ་གྱི་སྐྱིད་པུ་
 འབྱུང་པ་ཞིག་དང་མཇལ་དེ། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་སྤྲོ་མའི་དབུ་ལ་སྐྱིད་པུ་
 ལན་གསུམ་བསྐྱོར་ནས་ནགས་སེབ་དུ་གཤེགས་སོ། ། སྤྱིས་ཐོས་ཅམ་
 རྣམས་གྲུབ་པ་བརྟེན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་**རྣལ་འབྱོར་པའི་སྤྲོ་མའི་**སྤྱི་
 ཆེན་དངོས་གྲུབ་ཅིས་བྱ་བ་ཡིན་པ་བཞུགས། དེའི་དུས་སུ་ཁོ་ཐོ་ལ་
 བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་དུ་བྱོན་པ་ཡིན་འདུག་པས། ཞལ་མ་མཆོན་པ་
 འབྱོར་པ་དྲག་པོ་སྤྱིས་གསུངས་སོ། །

དེ་ནས་ཕར་བྱོན་པ་དང་སྐྱག་གྲུས་མ་གཅིག་དང་ཕྱད་པ་ལ།
 རྣམས་སེབ་ནས་མི་རྒྱུ་གི་སྤྱི་འབྱུང་པ་དང་། སྐྱག་དེ་ལོགས་སུ་བཟུར་
 རྣམས་སོང་ངོ་། ། དེ་ཅིའི་བཅའ་དང་བྱིན་སྐྱབས་སུ་གོ་ནས་མོས་གསུ་
 དྲག་པོ་སྤྱིས་གསུངས་སོ། ། དེ་ནས་ཡང་ཕར་བྱོན་པས་ཆོང་པ་མང་པོ་
 དང་ཕྱད་པ་བསོད་སྦྱོམས་མཇུག་དེ་འབྲས་མང་པོ་གཟིགས་སོ། ། དེའི་
 རྒྱུ་མོ་ཆོང་པ་དེ་བའི་ཅར་གཟིམས་ནས། སྤྱིས་དེའི་ས་རྒྱུས་ལེགས་
 པོ་བྱིས་དེ། ཉི་མ་དྲོས་ཀྱི་བར་བྱོན་པས་**ཀལ་མཁའ་ཉི་ཤུ་**བའི་གྲོང་དུ་
 སྤྱིབ་པོ། ། ཐོག་མར་ཁ་ཆེའི་བྱིས་པ་རྣམས་འདུས་དེ་འདྲི་ལྟ་བུའི་མི་
 སྤྲོ་ར་མེད་པ་ལུས་པོའི་ཆགས་ལུགས་སེར་པོའི་མི་ཅིག་ལྟོས་དང་ཟེར་
 རྣམས་ལྟར་མོ་བྱེད་དུ་བྱུང་ངོ་། །

དེ་ནས་བྱིས་པ་ཁོད་པོ་ཞིག་དུ་གནས་གཡར་ནས་ཞག་འགའ་

དེར་བཞུགས་སོ། །ཞལ་གཅིག་གྲོང་གི་དབུས་སུ་བསོད་སྦྲེལ་ས་ལ་བྱོན་
 པས། བྲམ་ཟེ་གད་པོ་གཅིག་དང་ཕྱད་དེ། དེས་ཕུག་གི་རི་མོ་
 མཐོང་ནས་ཅང་མི་ཟེར་བར་བྱིམ་དུ་སོང་སྟེ། དངུལ་གྱི་སྒོས་ཕོར་
 གཅིག་དུ་མེ་ཏོག་བྱུར་བྱུར་བཀང་བར་སྤུལ་དེ། ཕུག་བཙལ་ནས་ཐུ་བ་
 ནས་བཟུང་ནས་མིས་པ་བཟོད་པ་མང་དུ་བཟོད་དེ། བྱིད་ཆེ་རབས་དུ་
 མ་རུ་ཚོགས་བསགས་པ་གཅིག་སྟེ། ལས་ཅན་བྱིད་ཀྱིས་ཆེ་འདི་ལ་
 ཚོས་མང་པོ་གིས་གིང་། སེམས་ཅན་མང་པོ་ལ་ཕན་ཐོགས་པ་འདུག།
 བྱི་མ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཆང་བྱུང་། ཞེས་ཟེར་རོ། དེའི་
 མིང་ནི་བྲམ་ཟེ་དང་བྱེད་གོ་ཆ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།

དེ་ནི་**པརྱུ་ལྷ་མིན་**ཀྱི་བའི་རིག་པའི་གནས་ལྡེ་ལ་མཁས་པ་
 བྱད་པར་ཅན་གཅིག་ །ན་རྒྱུད་ལྡེ་བརྒྱ་ཙམ་ལ་ཚོས་སྟོན་ཅིང་བཞུགས་
 པ་དང་མཇལ་ནས། རྒྱུར་བྲམ་ཟེས་སྤུལ་བའི་དངུལ་གྱི་སྒོས་ཕོར་མེ་
 ཏོག་གིས་བཀང་ནས་སྤུལ་ནས་ཕུག་དེན་བྱས་ནས། ཕུག་བཙལ་ནས་
 གསོལ་བ་བཏབ་སྟེ་ལྷ་བ་བདུན་དུ་ལོ་རྩ་བསྐབ་པ་སྦྱ་ཆད་བྱང་མོར་གྱུར་དོ།

ཁ་ཆེ་ལམ་ན་པོ་རྒྱལ་གཞི་ལ་བསྟེན་པར་རྫོགས་ནས། རྡོ་རྗེ་
 དབྱིངས་ཀྱི་ཆོ་ག་དཀྱིལ་འཁོར་དང་བཙས་པ་གསན་བསྐྱུ་པ། དེ་ལ་
 སོགས་པ་ཚོས་མང་དུ་གསན་བསྐྱུ་པ། བཟན་སུ་བྱའི་ཡི་གེའི་མདོ་
 མཇེད།

དེ་ནས་ཤར་བྱོགས་སུ་ཉི་མ་དུག་གི་ལམ་ནས། བྱོང་བྱིར་**ན**

མཁའ་མནའ་ཉི་ཤུ་བ་ནས། འིན་དུ་སྟུན་པ་ཆེ་བའི་པརྟིང་རིག་པའི་
 གནས་ལཱ་ལ་མ་མྲོངས་པ་གཅིག་བཞུགས་པ་གསན་ནས། སྤར་གྱི་སྤར་
 མཁའ་ཕྱི་ཕུག་མཛད་ནས་གཤེགས་པའི་ཤུལ་ཀ་ནས། བྱ་གྲོང་ལྷིང་
 བའི་གྲིབ་མ་ལྟར་མགྱོགས་པའི་**རྫོག་གཅིག་དང་མཛལ་ནས།** ཀྱང་
 མགྱོགས་ཀྱི་རྟེན་འབྲེལ་མངའ་བར་རིག་དེ། ཞབས་སྤྱི་པོར་སྤངས་
 རས་བདག་ཐག་རིང་པོའི་མི་རྒྱ་འབྲེལ་མི་རྣམས་པར་གདའ། ཟང་ཟང་
 གི་འབྲེལ་དུ་སྤྲོང་པོའི་ཤུལ་རྒྱགས་ལ་ཟད་ན་ཅང་མ་མཆིས་པས།
 ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དགོངས་ལ་བདག་ལ་རྒྱང་མགྱོགས་ཀྱི་གདམས་ངག་ཅིག་
 བཞུང་བར་ལ། ཞེས་ཞུས་པ། བྱོད་ཐག་རིང་གི་མི་ལ་གདམ་ངག་
 བཞུང་སྟེ། རྒྱང་མགྱོགས་མཁའ་འགྲོ་མའི་ཆོས་ཡིན་པ། དུན་
 རྟེན་དང་ཆོགས་མཆོད་མེད་པར་མི་བཞུང་གསུངས་ནས། རྫོག་གི་
 ཕུག་ཕྱིར་འབྲེངས་དེ། བྱོང་བྱིར་**རྟེན་རྒྱར་ཤུ་བ་རུ་**ཆོགས་མཆོད་ཀྱི་
 ཆ་རྒྱུན་སྤངས་པས།

ཆ་རྒྱུན་ཆང་བ་ཁྲགས་ནས་ཞུས་པ། ད་བཞུང་གིས་གསུངས་
 རས་དུན་རྟེན་ཆོགས་མཆོད་མཛད་དེ། འབྲེལ་བ་ལ་རས་ཡུག་
 གཅིག་ལོ་རྒྱུ་བ་མཁའ་རྣམས་བདགས་དེ། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་སྤྲོ་མ་
 ལ་ཤུལ་ནས། **རྒྱང་མགྱོགས་**ཡིད་བཞིན་བསམ་འཕེལ་ཞེས་ཤུ་བ་
 བཞུགས་ནས། བྱོང་བྱིར་ད་མཁའ་མནའ་ཉི་ཤུ་བར་ཕེབས་སོ།།

ཐུགས་ཀྱི་བྱོང་བྱིར་ཏཱ་ལའ་བཙན་ཉི་ཤུ་པརྟིང་ཆེན་པོ་གསུངས་

མཁའ་འགྲུ་དང་མཁའ་འགྲུ་ཆོས་ཀྱི་བའི་གསོལ་བ་བདེ་བ་པས་གནང་ནས།
ལོ་གཉིས་སུ་རྒྱལ་འབྱོར་ཡོ་གའི་རྒྱུད་སྐྱེལ་ཐབས་དང་མཁའ་གསལ་དུ་
གསལ་ན་རྟོ། །དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོན་པའི་བཀའ་འབྲེལ་དང་།
བཅོམ་ལུན་འདས་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་སྐྱེལ་ཐབས་ལ་
སོགས་པ་གསལ་ཐུགས་ཀྱི་རྒྱུད་སྐྱེལ་ཐབས་མང་པོ་གསལ་ན་ནས་བསྐྱེད་པ་
ཡང་མཛད་དོ། **མཁའ་པོ་བཟང་པོ་**ནས་ཀྱང་ཡོ་གའི་ཁ་སྐོང་དང་ཆོས་
མང་དུ་གསལ་ན་ཅིང་ཐུགས་སྦྱང་མང་དུ་མཛད་དོ།

དེ་ནས་སྐྱེད་ཡུལ་དུ་བསྐྱོད་པའི་མཆིད་མཛད་པ་བཞིན་གདན་
འཁོར་བར་བཞེད་པ་ལ། རུབ་མོ་ཐུགས་ལམ་དུ། བོད་ཀྱི་མི་
གཅིག་གིས་རྒྱ་མཚོའི་སྤིང་ནས་ཞོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་མང་པོ་བརྟེན་ནས།
ཡིད་བཞིན་གྱི་ཞོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་གཅིག་ཡོད་པ་ལུས་སུ་འཇུག་པ་འདུག
དེ་ནི་ཇི་ཇི་བཅུན་ན་རོ་པའི་ཕྱག་ན་ཡོད་ཟེར་རོ། །མནལ་སང་པ་དང་
པརྟེན་འདྲེན་པ་ལུས་ལོ་རྒྱུས་ཞུས་པས། འདྲེན་པ་རེ་ཞེས་ཞུས་ནས།
དེ་ལྟར་ཡིན་ན་ཇི་ཇི་བཅུན་ན་རོ་པའི་དུང་དུ་འགྲོ་དགོས་གསུངས་སོ།
ཁོང་ལ་ཆེ་གཅིག་ལུས་གཅིག་ལ་འཆང་བྱ་བའི་ཆོས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་སྐོར་
མང་དུ་མཁྱེན་པ་ཡིན་གསུངས་སོ།

དེར་སྤྱོད་པའི་བཀའ་བྱུང་བ་དང་དངོས་སྐབས་ཀྱི་ཅ་བ་སྤྱོད་པའི་
བཀའ་བྱུང་བ་ཡིན་པས། མི་ལམ་ཀྱང་བཟང་བས་འགྲོ་དགོས་དགོངས་
ནས། དུང་ཕྱོགས་**ཐུལ་ཏུ་པའི་དཔོན་པ་དཔལ་ལེན་པུ་པ་**ཞེས་

ཏུ་བ་དེར་བྱོན། **ཇི་པུན་ན་རྩལ་དང་མུར་དུ་མཇལ་ནས།** བྱིན་
 རྒྱལ་དང་གདམ་པ་ཞུས་པར་གསོལ་བ་བདེ་བ་པས་གནང་སྟེ། ལྷན་
 ཅིག་སྒྲིལ་པ་ཟེ་མོ་སྒྲིལ་པ་ཐམས་ཅད་དང་བུལ་བ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་
 གདམས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་རྒྱམས་ཀྱི་ངོ་སྟོན་དང་བྱིན་རྒྱལ་མང་དུ་གསན་
 རོ།

དེ་ནས་གདམ་པ་དང་བྱིན་རྒྱལ་རྒྱལ་ཆར་བ་དང་། སྒྲིལ་
 མ་ན་རྩལ་ལ་བྱི་བྱུག་མཇེད་ནས་སྒྲར་བྱོན་པའི་ལམ་དུ། **པུན་པོ་ལ་**
ལ་པུན་དང་མཇལ་དེ། གདམ་ངག་མང་དུ་གསན་པ་ལ་སྒྲར་ཡུལ་དུ་
 གཟིགས་པའི་ཤེ་བུམ་ནང་ནས། མཁའ་འགྲོ་མ་གསེར་གྱི་འོད་ཟེར་
 ཅན་གྱི་སྒྲུབ་ཐབས་ཟེ་མོ་གཅིག་ཡོད་པ་པཱིད་མཁའ་ནས་བསྐྱབས་སོ།
 མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་ནི་སྒྲར་ལུང་སྟོན་པ་དེ་ཡིན་པས། དེ་མན་ཆད་མ་
 དང་སྤང་མོའི་ཚུལ་དུ་གྲོགས་བྱེད་དོ།

དེ་ནས་ཁ་ཆེ་རུ་ལོ་ཙམ་སོང་ཅིས་པ་ལ་ལོ་བདུན་དུ་སོང་འདུག་
 བོ། །ད་ཡབ་ཡུམ་རྒྱམས་མཇལ་དུ་འགྲོ་དགོས་དགོངས་ནས་གདམས་
 ངན་རྒྱམས་གྲོ་གསེར་པོ་ལ་བྲིས་ནས་རྒྱུ་དཔེ་བུལ་མཇེད་ནས་བྱོན་པར་
 འདོད་པ་ལས། སྒྲར་ཡུལ་དུ་ལུང་བཞུག་དུས་སུ་རྒྱ་གར་གར་རུབ་ཆུ་
 བཞིན་བྱུགས་ཟེར་བ་དེ་དྲན་ནས། སྤེལ་ཆ་རྒྱམས་ཤེད་རྒྱལ་འཛིན་པ་དུ་
 བཞག་ནས། རྒྱ་གར་གར་བྲོགས་ལ་བྱོན་ནོ། །དེ་ཡན་ཆོད་ཁ་ཆེ་
 རུ་བཞགས་ཤིང་ཆོས་ཞུས་པ་དང་བསྐྱར་བའི་ལོ་རྒྱུས་སོ།

ཡུན་པ་ རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་སུ་བྱོན་པ་ནི། ཀང་མགྲོགས་ཀྱི་
 དངོས་གྲུབ་ཀྱིས་མུར་དུ་བྱོན་ནས་རྒྱ་གར་གྱི་ **མཁན་པོ་ཇི་ན་མི་དྲ་** དང་
མཁན་པོ་ལྷན་ དང་། **མཁན་པོ་ལྷེ་ལྷན་** ནྟེ་དང་། མཁན་པོ་
 དང་པལླིང་དུ་མར་ཆོས་ཁུས་གིང་བསྐྱར་བ་ནི། མདོ་སྤྱི། འདུལ་
 བ། མདོན་ལ། སོ་སོར་ཐར་པ། གསུམ་བརྒྱ་མ། ཡུམ་
 རྒྱས་མ། ཡུམ་བར་མ། ཉི་ཁྲི་པ་ཁྲི་བརྒྱད་སྟོང་པ། བརྒྱད་སྟོང་
 པ། གཟུངས་ལ་སོགས་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་བསྐྱར་ཅིང་ཁུས་ཏེ་གཏན་
 ལ་ཐབ་བོ། གཞན་ཡང་མདོ་རྒྱུད་དང་གདམ་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་ཁུས་
 སོ། །ཐུགས་ཇི་ཆེན་པོའི་ཆོས་མང་དུ་བསྐྱར་རོ། །མཁན་པོ་འདི་
 རྣམ་འདི་ཁུས་དང་། པལླིང་འདི་རྣམ་འདི་ཁུས་ལ་སོགས་པ་ནི་
 འདིར་ཡི་གེ་མང་གིས་དོགས་ནས་མ་བྲིས་སོ།

རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་སུ་ནི་སྤ་མ་ལོ་རྩལ་བ་ཆེན་པོ་ལ་ནི་མཚན་བན་
 རྟེ་ཡི་ཤེས་སྤེ་ཞེས་གྲགས་སོ། །དེ་ནས་རྒྱ་གར་ནས་ཁ་ཆེ་རུ་བྱོན་ནས།
 པལླིང་ཤད་རྒྱལ་ར་ཐམ་འི་ཕུག་ནས་དཔེ་ཆ་རྣམས་སྤངས་ནས་ཆོས་ཐོན་
 ཚད་བསྐྱམས་ནས་བྱོན། མ་ཐོན་པ་རྣམས་ཤད་རྒྱལ་རའི་ཕུག་དུ་བཞག་
 བོ། །དེ་ཡན་ཆོད་རྒྱ་གར་དང་ཁ་ཆེ་རུ་ལོ་བཅུ་སྟོང་སྟེ། ཁ་ཆེ་ནས་
 ཀུ་ཐང་དུ་ཀང་མགྲོགས་ཀྱིས་བྱོན་པས་ཞག་དྲུག་ལ་སླིབ་བོ།

ཡབ་ནི་སྤོན་དུ་སྤོངས་ནས་མི་བཞུགས་སྟེ། ཁ་ཆེ་ནས་ལོག་
 རྣམ་མ་འོངས་བསམ་ནས་འགྱོད་པ་དྲུག་པོ་སྤྱིས་གསུངས་སོ། ཡབ་

མར་ཡུལ་དུ་ཉར་མ་བཞེངས་པ་དང་གསུམ་གྱི་མང་ཞག་གཅིག་ལ་
བཅུགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་གཙུག་ལག་ཁང་མང་དུ་བཞེངས་པ་དང་།
དམ་པའི་ཆོས་མང་དུ་བསྐྱར་པ་ནི་དཔག་དུ་མེད་དོ།

དེ་ལྟར་སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ནི་ཕུ་བྱངས་ཡན་ཆད་ལ་བྱོན་ནོ།
ལོ་རྒྱུ་ལེགས་པའི་ཤེས་རབ་ནི། ས་སྐྱ་མན་ཆད་དུ་བསྐྱར་བར་
ལགས་སོ། །ཡུམ་སྤྱང་གཞི་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་སྐྱ་ཆེ་བསྤྱིང་བའི་དོན་
དུ་ཆེ་དཔག་མེད་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བདུན་མཛད་དོ། །ཡུམ་དེ་མན་
ཆོད་ཀྱང་ལོ་བཅོ་བརྒྱད་སྐྱ་ཆེ་སྤྱིངས་སོ། །དེ་ནས་ཕུ་བྱངས་གྱི་**ཐུགས་**
གྲུ་གེ་**མཐོ་མེད་**མར་ཡུལ་གྱི་**ཉར་མ་**དང་གསུམ་གྱི་གཙུག་ལག་ཁང་གི་རབ་
གནས་ཞལ་བསྟོ་རྒྱན་ཆེན་པོ་མཛད་དོ། །དེ་ནས་ཕུ་བྱངས་པ་ན་སྤྱོད་པ་
ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་འདིར་བཞུགས་ཞིང་གཙུག་ལག་ཁང་བཞེངས་དེ་རབ་
གནས་མཛད་ཅིས་ཟེར། །གྲུ་གེ་པ་འདིར་བཞུགས་ཟེར། མར་
ཡུལ་པ་འདིར་བཞུགས་ཅིས་ཟེར་སོ། །སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་ལ་ཞུས་པས།
དེ་གསུམ་ཀ་ན་ཡང་ང་ཡོད་པ་བདེན་གསུངས་སོ། །

དེ་ནས་སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ལ། ལྷ་སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་ལོ་རྒྱུ་བ་ལོ་རྒྱུ་བ་
ཞལ་ནས། སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ཁ་ཆེའི་ཡུལ་ནས་དཔེ་ཆ་དེ་བ་ལེན་
པ་དང་། ལྷ་བཟོ་པ་མཁས་པ་རྣམས་འདོན་དུ་བསྐྱོད་འཆལ་ཞུས་པ།
བྱོན་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ། །

དེ་ལ་ལྷ་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་ཞལ་ནས། སྤྱོད་པ་ལོ་རྒྱུ་བ་

[illegible][illegible]

སྒྲུབ་ཡུལ་ནས་ཆས་པ་དང་ཁྱེ་བ་བརྒྱ་གསུམ་ནས་སྒྲུབ་རྟེན་ཡུལ་

དེའི་འོག་མ་བཙན་འབྲོག་མོ་བློ་ལྷུ་ར་མ།

ལྷ་མོ་ཁང་དམར་གྱི་

བུ་སྤྲུང་མར་བཀོས་སྟོ།

།དེའི་འོག་མ་བདད་འབྲིག་མོ་སྟོག་མུར་མ།

ལྷ་སྐད་མཁུ་བྱ་བ་ གི་པསྒང་མར་པོག་སྟེ། ། རྩ་འགྲུ་འགྲོག་མོ་སྤྲུལ་རྩ་ལ་
མ་དེ་ནི་སྤྲུལ་པའི་དེ་མ་རྩུང་ཡིན་ནོ།

དགེ་བསྐྱེད་སྤྱི་ཤེས་ཅན་དམ་ལ་བདག་ས་དེ་ལས་བྱེད་སྤྱོད་བརྒྱུ་བ་
 རུ་བཀོས་སོ། །འོང་ཆུང་གི་ཤུམ་ལག་ཁང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དགོར་
 བསྐྱེད་ལ་བཀོ་བར་མཛད་དོ། །འདྲི་ནི་བཤམས་ཀྱི་རྒྱལ་མོ་ཁྱི་ན་ལ་ག་
 ཞིས་བྱ་བ་ཡིན། །ར་སྤྱི་ཤེས་ཅན་ཡང་ཟེར། བེ་གར་དང་། རྩ་
 དང་། རྩ་ལས་བེར་ཟེར་བ་འདྲི་རྒྱུ་མ་ཐོ་བོ་གཅིག ། རྩ་ལ་ཅི་མ་ལ།
 རྩ་ལ་ཅི་བ་ལ། སྤྱི་ཤེས་ཅན་ལ། ར་སྤྱི་ཤེས་ཅན་དང་གཅི་འཁོར་བཞི་
 ཡི་བསྐྱེད་བེ་ལ་ཞི་བའི་སྤྱི་ཤེས་ཐམས་ཅད་མཛད་དོ། །སྤྱི་ཤེས་ཅན་དཀར་སེར་
 རུ་བསྐྱེད། །སྤྱི་ཤེས་ཅན་མཛད་དོ། །སྤྱི་ཤེས་ཅན་མཛད་དོ། །སྤྱི་ཤེས་ཅན་མཛད་དོ། །

[illegible]

གུག་ལམ་ཁང་ནས་སྐྱེ་ན་ཕྱིས་མི་རྒྱུ་ཆུང་། འགྲུ་ཡང་ཐངས་
སྐྱེ་རབ་སྐྱེ་ལ་སྐྱེས་པ་དེ་ན་ཡོངས་སྤྱོད་བཞི་བཅུ་ཞི་རྒྱ་བཞུགས་། ཡོ་
དེ་བཞུགས་པའི་བྱངས་ལ། རྩེ་སྤྱོད་ལྟུང་ཀ་ཆད་བ་བཞུགས་། བ་
རྩེ་དུ་ཕྱིན་པ་སྐྱེས་པ་ཡིང་ཐམས་ཅད། ཡུལ་སྐྱེས་བཅོ་བརྒྱད་ཆད་
བའི་སྤྱོད་ཀྱི་བརྒྱད་སྤོང་ཆ་གཉིས་། བརྒྱད་སྤོངས་ལ། མདོ་རྩེ་
ཡོངས་སྤྱོད་པ་ཡོ་དེ་བཞི་བརྒྱ་དྲུག་འུ་མེ་བརྒྱད་བཞུགས་།

[illegible]

སྟོན་པས་ལོ་རྒྱུད་ལེགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལོ་རྒྱུད་པའི་གཙུག་
ལག་ཁང་ལ་མཆོད་ཆ་སྤུལ་བའི་གྲངས་ལ། ཡོ་ཏི་བཙུ་བཞི་ཆ་ལང་ཡ་
བ་གསུམ། ཟང་དྲུང་ཆ་གཅིག་ཟིལ་པ་གཉིས། བདུན་ཆ་ར་ཆ་

གཅིག་ ར་གན་གྱི་གཞིང་ཞབས་སྟེགས་ཅན་གཅིག་རལ་གོང་གཅིག།
མཆོད་ཆ་འདི་རྒྱལ་ས་ཡུལ་ནས་ཞབས་དྲོག་མི་ཉུང་བར་མཛད་དོ།

བྱད་པར་དུ་ཕྱིས་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ཁ་ཆེ་ལ་སྟོན་པའི་དུས་སུ་ལྷ་སྲ་
མ་ཡེ་ཤེས་འདྲ་གྱིས་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ལ་རིག་པ་ཅན་གྱི་བྱེའུ་ལྷ་ཞབས་དྲོག་
པ་ལ། ཐུགས་ཆེས་པ་ལྷ་དང་བཅོ་ལྷ་ཉི་གནས་སུ་ཐངས་ནས།
རུས་སྒྲ་བརྒྱད་ཡོན་དུ་ཡུལ་བའི་དུས་སུ། ལོ་རྒྱུང་ལེགས་པའི་ཤེས་
རབ་འདི་ཆེད་དུང་ཡིན་པ་ཐུགས་བཏད་ཐུབ་ཅིང་། ལུས་ངག་གི་
ཞབས་དྲོག་སྟོག་དང་སྟོ་བ་མཛད་པའི་བཀའ་དྲིན་ལ། ཅོག་རོ་གུ་གེར་
ཀྱ་ཤུ་ཡར་བཅདོ་ལ། ཉི་མ་ལ་སྒྲིང་གསུམ་ཁ་དར་གྱི་འབབ་ཆུ་དང་
བཅས་པ། ཤར་ཉི་ཤང་གིས་བཅད་པ། ལྷོར་གངས་ཀྱིས་བཅད་པ།
རུབ་ལྷ་སྒྲ་མུང་གིས་བཅད་པ། བྱང་གཙང་པོས་བཅད་པ། ཡུལ་
ཞིང་བཟང་ཞིང་འབྲོག་དང་བཅས་པས། ལྷ་སྲ་མ་མེས་དབོན་གྱི་
བཀའ་དྲགས་དང་། ལོ་རྒྱུ་བའི་ཕྱག་དྲགས་དང་བཅས་པ་བཏབ་ནས་
ལོ་རྒྱུང་ལེགས་པའི་ཤེས་རབ་ལ་སྒྲུལ་བ་ཡིན་པས། སྟོ་ཆེ་རྒྱུང་གང་གི་
ཡང་བཞེས་ཐང་མི་འབབ། ཁ་མི་རྒྱལ། རྒྱ་མི་དྲིབ་པོ།

རིག་པ་ཅན་གྱི་བྱེའུ་ལྷ་ལས་གཉིས་ཆད་པས་གྲོངས། གསུམ་
ཡོད་པ་ལ། མང་ལྷོར་ལོ་རྒྱུ་བ་བྱང་རྒྱལ་གིས་རབ། མ་ལོ་རྒྱུ་བ་
དགེ་སྟོ། འཛད་ལོ་རྒྱུ་བ་རིན་ཆེན་གཞིན་རྒྱ་དང་གསུམ་མོ་དེ་གསུམ་
ཡང་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོའི་བུ་ཆེན་ཡིན་པས།

མང་མེར་ལོ་རྩ་བ་ཕྱང་ཆུ་ཤེས་རབ་ལ་དྲི་ལག་སྟུལ། མ་ལོ་
 རྩ་བ་དག་སྟོལ་རི་ཁྲི་སྟུལ། འཇང་ལོ་རྩ་བ་རིན་ཆེན་གཞོན་ནུ་ལ་ཆད་
 མེད་སྟུལ་པོ་ལ། མང་གྲིའི་རྩ་མན་བཅད་ཤིང་དྲགས་ཀྱིས་ཡན་བཅད།
 དུན་གྱི་སྒྲོག་ཕྱེར་གྱི་བཅད་པ། ཡུའི་འབྲོག་རི་དང་བཅས་པ་སྟུལ་བ་
 ལས། རྟོད་རྟིས་སུ་བསྐྱེད་མ་མཆོད་པའི་རྒྱུ་ཆ། བྱེ་ཁལ་བྱེད།
 རུ་མ་ཁལ་གཅིག་མར་བྲེ་གང། རྒྱུད་གི་ལག་པ་གཅིག་འདི་རྣམས་
 འབུལ་དགོས་སོ། ། ལོ་རྩ་ཆེན་པོའི་མི་རིགས་ཇི་འབངས་སུ་འགྲུལ་
 ཡང་དྲག་ཅེ་བཟང་ཆ་དང་བྱིན་དགོས།

གཞན་ཡང་ཡུལ་རྒྱུད་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་མཆོད་པ་ལ། སུ་རྟངས་
 ཀྱི་ཞེར་པ། གོ་ཁར། སུར་ཁར། བོ་རི། གཡང་སྒྲུ་པ།
 དྲི་ཡག་ཆད་མེད་སྟེ་འུ་ཉི་མང། ཞོ་ལིང། རྒྱུ་ལང། རེ་པམ།
 ཅོག་ར། རི་ཁྲི། རྟང་རྟང་། ལ་རི་རྟ་པོ་ཤངས་རྩ་རང།
 རྟིལ་རྒྱུད།

ཡུལ་རྒྱུད་འདི་རྣམས་སུ་གཙུག་ལག་ཁང་རེ་རེ་དང་མཆོད་ཆ་
 ཆང་བ་རེ་བཞུགས་སོ། ། མདོར་ན་ཕུ་རངས་ཀྱི་ཁྲ་ཆ་ཞེར་
 མན་ཆོད། ཉི་ཤུ་ལང་ཀ་ཡན་ཆོད་ལས། གཙུག་ལག་ཁང་བརྒྱ་རྩ་
 བརྒྱད་བཞིངས་པ་ལ། རྒྱ་རྩ་བདུན་བཞིངས་ཟེན་ནས། མཐས་
 རྟིལ་རྒྱུད་དུ་གཙུག་ལག་ཁང་གི་ཅམ་གཅིག་བཞིངས་པ་དང་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་
 ཆང་སྟེ། རྩིས་འཇུག་ཀྱང་དེ་དང་ཇོགས་སོ། །

གཞན་ཡང་མཐའ་འདུལ་གྱི་གཙུག་ལག་ཁང་ལ། ལྷོ་འི་དེ་
གསུམ་དཔག་། དུག་ཕག་གི་མོན། ང་རའི་ཀ་ནམ། རོང་
ཆུང་གི་སྤྱ། འདི་རྣམས་དང་། མདོར་ན་རོང་ཆུང་ནས་བཞེངས་
ཆད་ཀྱི་གཙུག་ལག་ཁང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྤྲོ་མ་ལོ་རྩུ་བ་ཆེན་མོས་བཞེངས་
པ་ལགས་སོ། ཉིན་རེས་བཞེན་ཡང་ཆོས་སྤྱོད་བཅུ་གུ་མི་ཆད་པ་
མཇེད་དེ། མཆོད་རྟེན་བཞེངས་པ་ནི་དཔག་ཏུ་མེད་དོ།

དེ་ལྟ་བུའི་སྤྱིས་བུ་ཆེན་པོ་དེ་ཡིས་ཉི་ཤུ་ནས་ཆུ་སྤྱུལ་བཟུང་དེ།
བསེ་སྒྲིམ་བཅུག་ནས་ཉི་གནས་ལ་བསྐྱབ་དེ་ཀྱུ་མང་གི་ཕུ་རང་དུ་མ་སྤེལ་
པར་ཁ་མ་ཕྱེ་ཅིག་གསུངས་ནས་བསྐྱར་བས། ཉི་གནས་ཀྱིས་**སྤྱུལ་ནས་**
ཕྱིར་ཏེ་རུ་ཁ་ཕྱེ་ནས་ཆུ་སྤྱུལ་སྒྲིམ་པོ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཐོན་སོང་བས་ཆུ་དེ་རུ་
ཐོན་ནོ།

ཡང་བཟུང་ནས་འདི་ཁ་སང་གི་ཙུག་མ་བྱེད་པར་ཀྱུ་མང་གི་ཕུ་རུ་
མ་སྤེལ་བར་ཁ་མ་ཕྱེད་ཅིག་གསུངས་ནས་བཏང་བས། གྲུས་སེམས་
བསྐྱར་ནས། **ཐུང་ཏུ་**ཐང་དུ་ཁ་ཕྱེ་ནས་དེར་ཤོར་རོ། སྤྲོ་མ་ལོ་
རྩུ་བ་ཆེན་པོའི་ཁལ་ནས། འོ་བུ་དང་འཁོར་འཕྲོགས་གཉིས་སུ་གོ་མ་
ཆོད་པས། སེམས་ཅན་གྱི་བསོད་ནམས་ལ་མ་གྲུབ་པ་ཡིན། དེ་
གཅིག་ནི་མ་ཐོན་ནས་གོང་ཁྱིམ་བརྒྱ་ཆགས་པའི་ཡུལ་ཡོང་བ་ཡིན་དེ།
ད་ལྟག་གི་བཟང་མཆོད་བཟང་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་ལས་མི་འོང་གསུངས་སོ།

བཅུ་པ་སྤྱུལ་པ་ཁྱད་པར་ཅན་མཇེད་པ་ནི། སྤྱིར་ཐུགས་དམ་

ནི་ཕུ་བྱངས་ཀྱི་ཞེར་མན་ཆོད་ཏྲོ་ཕུ་ལང་ཀའི་བར་སྐྱབ་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་
གཅིག་མཛད་ཀྱང་། བྱུང་པར་བྱམ་ཤུག་དུ་མང་བར་བཞུགས་སོ།
བྱམ་ཤུག་དུ་བཞུགས་ཅན་ས། ཉི་གནས་བདང་གིན་ཕུ་བྱངས་ཀྱི་ཁྲ་
ཆར་ནས་གདན་ཆུང་ལེན་ནོ། །ནམ་ལངས་པ་དང་ཕྱིན་པ་ལ་དགོན་པ་
ཆོད་མ་ཁོལ་བ་སྟོལ་བ་ཐང་མ་ཡིན་སྟེ།

དེ་ལྟར་མཛད་ཅིང་དགུང་ལོ་བརྒྱད་བཅུ་གྱུ་བདུན་བཞེས་པ་དང་།
ཇོ་བོ་ལྷ་གཅིག་པོ་བྱང་བཅན་པར་གདན་བྱངས་ནས། མ་ནམ་དུ་
བཞུགས་པའི་དུས་སུ། སྤྱི་མ་ལོ་རྒྱ་བའི་ཐུགས་དགོངས་ལ། ཇོ་བོ་
འདི་དང་ཞལ་འདྲིས་མེད་ཀྱང་། ཁོང་གྱུ་གར་གྱི་གྲུབ་ཐོབ་མི་ཆེན་
གཅིག་ཡིན། ང་ཡང་ལོ་རྒྱ་བ་ཆེན་པོ་གྲགས་པ་བོད་ཀྱི་མི་ཆེན་གཅིག་
ཡིན་པ། བསྟན་བསྐྱར་གངས་ལེན་བཟང་བ་གཅིག་ང་ལ་འབབ་
དགོངས། ཁོ་རང་གི་མཆོད་པའི་གནས་གཞི་སྦྱིན་རི་སྦྱིང་བྱ་བར།
ཇོ་བོ་གདན་བྱངས་ནས་བསྟན་བཀྱར་གྱུ་ཆེན་པོ་མཛད་དོ།

དེའི་དུས་སུ་ཇོ་བོའི་ཞལ་ནས། མ་རྒྱལ་རྒྱ་བ་ཆོས་འདི་དང་
འདི་མཐུན་ནམ། འདི་མཐུན་ནམ། བཀའ་སྤྱི་སྦྱོང་དང་མདོ་གྱུད་
ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲི་བ་མཛད་པས། ལོ་རྒྱ་བས་དེ་ཡང་འཆལ་ལགས།
དེ་ཡང་འཆལ་ལགས་ཞུས་པས། འོ་ན་ང་ཡོང་མ་དགོས་པ་འདུག་
གསུངས་སོ།

དེའི་རྒྱུ་མོ་གཟིམས་ཅན་གཅུག་ལག་ཁང་ཐོག་གསུམ་པ་

གཅིག་ཡོད་པ་ལ། འོག་ཁང་དུ་གསང་བ་འདུས་པའི་ལྷ་ཚོགས་
 བཞེངས། བར་ཁང་དུ་དགུས་དོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས། སྤང་ཁང་དུ་
 འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་པའི་ལྷ་ཚོགས་བཞེངས་ནས་ཡོད་པ་ལས། ལོ་རྒྱུ་བས་
 སྤྲོད་ལ་འོག་ཁང་དུ་ཐུགས་དམ་མཛད། བྱང་ལ་བར་ཁང་དུ། ཐོ་
 རངས་སྤང་ཁང་དུ་ཐུགས་དམ་མཛད་པ་ལ།

ཕྱིས་དེ་འཛོ་བ་ཞུས་པའི་དུས་སུ། ཇོ་བོའི་ཞལ་ནས།
 མ་རྒྱལོ་རྒྱུ་བ་མདང་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་སྤྲོད་ལ་འོག་ཁང་དུ། བྱང་ལ་
 བར་ཁང་དུ། ཐོ་རངས་སྤང་ཁང་དུ་ཐུགས་དམ་མཛད་པ་གཙུག་ལགས་
 གསུངས་པས། ལོ་རྒྱུ་བས་དེ་ལྟར་ལྷ་སོ་སོའི་བསྐྱེད་རྫོགས་སོ་སོར་
 བགྱིས་པ་ལགས་ཞུས་པ། ཇོ་བོའི་ཞལ་རས་ནག་པ་མཛད་ནས་ང་
 ཡོང་དགོས་པར་འདུག་གོ་གསུངས། དེར་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོས།
 འོ་ན་ཇི་ལྟར་དུ་བཞེད་པ་ལགས་ཞུས་པས། ཇོ་བོའི་ཞལ་ནས། དེ་
 ལྟར་མི་འཆལ། ཚོས་ཐམས་ཅད་གདུལ་བྱའི་བསམ་པ་དང་བསྐྱེད་
 རྒྱུ་མང་དུ་སྤྲོད་ཀྱང་། ཕ་བས་དུ་མ་རོ་གཅིག་ཡིན་པ། བསྐྱེད་
 རྫོགས་ཐམས་ཅད་གདན་ཐོག་གཅིག་དུ་ཉམས་སུ་སྤངས་པ་ཚོག་པ་ཡིན་ནོ་
 གསུངས་པས།

དེར་སྤྲོ་མ་ལོ་རྒྱུ་བའི་ཚོགས་འཁོར་གྱི་ཆེན་པོ་བཤམ་ནས་
 གསེར་སྤང་བཙུག་ཉིས། རྒྱལ་ཁལ་སུམ་ཅུ་དང་གཞན་ཡང་ལོངས་
 སྤྲོད་མང་པོ་ཡུལ་ནས་ཚོས་དང་གདམས་པ་རྒྱམས་ཞུས་པ་ལ། བདེ་

མཆོག་ལྷན་སྒྲུབ་སྒྲོལ་མ་ཨ་མྱི་རྩ་ར་ཐོ་བོ་ལུགས་ཀྱིས་སྤྱགས་ཐེ་ཆེན་པོ་
 དང་གསུམ་གྱི་དབང་དུ་བསྐྱར་ངོས་སྤྱོད་གདམ་པ་མ་ལུས་པ་གནང་ནས་
 བསྐྱབས་པ་ལ། ལྷ་གསུམ་ཀའི་ཞལ་གཟིགས་སོ། །སྤྱོད་བྲལ་གྱི་
 དོན་སྤྱགས་སུ་ཆུད། ཉམས་ཁུད་པར་ཅན་དཔག་དུ་མེད་པ་སྒྲིམ་དེ་སྒྲ་
 མ་ལོ་རྩུ་བས་ནི་ཐོ་བོའི་གདམ་པ་དེ་རྣམས་ལ་སྤྱགས་ཆེས་ནས།
 ཅིག་དམ་དོན་ནན་ལྷར་མཛད་པ་ལགས་སོ། །

དེའི་ཕྱིས་ན་ཕུ་ཏངས་ཀྱི་ཁེར་དུ་ཇོ་བོ་དང་ཞལ་མཇལ་བ་ལ།
 ཇོ་བོའི་ཞལ་ནས། མ་དུ་ལོ་རྩུ་བ་ཁྱེད་ལོ་རྩུ་ལ་མཁས་ཤིང་གྲགས་པར་
 འདུག་པས། ངའི་ལོ་རྩུ་ཕུ་དགོས་གསུངས་པ།

ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོས་ཞུས་པ་སྤྱོད་མ་ལགས་བདག་གི་རང་ལོ་བརྒྱད་
བརྒྱ་ལྔ་བརྒྱད་འཆལ། རང་གི་སྤྱོད་ལང་འདི་ལྟ་ར་དཀར་པོར་ཐལ།
ལྷེ་མི་བཙང་བས་ཆོས་ཀྱི་སྤྱོད་མི་དག་པ་སེལ་དུ་མཆིས། འདི་མི་མོལ་
བར་ཞུ་ཞུས་པ། རོ་བོ་ཆེན་པོའི་ཞལ་ནས། ང་ལ་བསམ་པའི་སྤྱིང་
ཡོད་ཀྱང་། སྤྱོད་པའི་ལྷེ་མི་ད་པ་གསུངས་ནས་ཐུགས་ལྷུག་པ་མཛད་དོ།
དེ་ནས་ནག་མཚོ་ལོ་རྒྱུ་བ་རྒྱལ་ཁྲིམས་རྒྱལ་བས་ལོ་རྒྱུ་བུས་སོ།

ཡང་ཇོ་བོའི་ཞལ་ནས། ལྷ་ཡོན་ལྷན་རྒྱལ་ཁབ་ཁྲིམ་
 ཚོས་མང་པོ་ནི་ཤེས། སེམས་ངོས་འཕྲོད་པའི་སྒྲ་མ་དམ་པ་ནི་མཇལ།
 འཚོ་བའི་ལོངས་སྤྱོད་ནི་ཡོད། ད་ནི་སྐྱབ་པ་ལ་རེམ་ཅིག་གསུངས་སོ།

དེ་ནས་ཕུ་རྒྱུ་ལྷོ་ཁྱིའི་པ་སུ། བཙུག་ལམ་ཁང་ལ་སྐྱོ་རིམ་

པ་གསུམ་པད་པ་དེ། དམ་བཅའ་མཛད་སྤྱི། བྱིས་སྒོ་ལ་དུང་
 གི་ཡི་གེ་བྲིས་ནས། བདག་སང་ཕྱོད་ད་སང་གི་བར་དུ་ཉོན་མོངས་པའི་
 ཡིད་སྐད་ཅིག་སྒྲིས་ན་མཁའ་འགྲོ་མས་ཆད་པ་ཆོད་ཅིག། །ཅིས་བྲིས་
 སོ།། དེའི་ནང་རིམ་དུ་དངུལ་གྱི་ཡི་གེ་ལ། བདང་སང་ཕྱོད་ད་སང་
 གི་བར་དུ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་སྐད་ཅིག་ཅམ་བུལ་ན་མཁའ་འགྲོ་མས་
 ཆད་པ་ཆོད་ཅིག། །ཅིས་བྲིས་སོ།། ལྷ་ཁང་གི་ནང་ལོགས་སུ་བྲུ་སེར་
 གྱི་ཡི་གེ་ལ། བདག་སང་ཕྱོད་ད་སང་གི་བར་དུ་ལུང་མ་བཞུགས་གྱི་
 སེམས་སྐད་ཅིག་ཅམ་སྒྲིས་ན་མཁའ་འགྲོ་མས་ཆད་པ་ཆོད་ཅིག།
 ཅིས་སྐྱེ་རིམ་པ་གསུམ་ཅིག་ལས་ཅིག་དམ་པ་བྲིས་ནས། ཐུགས་
 དམ་ཅི་གཅིག་དུ་མཛད་པ་ལ་དམ་བཅའ་རྒྱལ་གསུམ་ཆད་དུ་བྱིན་དེ།
 ཆོས་སྐྱོས་སྒྲིས་བུལ་དོན་ལྟ་བུའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་བརྟེས་སོ། །དེ་ལ་སྐགས་
 དེ་གནས་ཁྱད་པར་ཅན་རྒྱལ་སྐྱབ་པ་མང་དག་མཛད་དོ།

དེ་ལྟ་བུའི་སྐྱེ་མཆོག་ཁྱད་པར་ཅན་སྐྱབ་བཞུགས་པའི་དུས་སུ།
 ལྷ་མ་གྱི་དཔུང་སྤྱོད་གཡས་པ་རུ་མ་བྱ་བཅས་པ་ནི། སྐྱེ་ཆད་ལས་མཛེས་
 པའི་དོན་ཡིན་ནོ། །དཔུང་པ་གཡོན་པ་རུ་བྱ་བཅས་པ་ནི།
 ཆོས་ཀྱི་གསུང་སྒྲིས་སྒྲིག་པའི་དོན་ནོ། །སྤྱི་གཙུག་དུ་ནི་ཙོ་བཅས་པ་ནི།
 རྒྱ་བོད་གཉིས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་མཛད་པའི་དོན་ཡིན་ནོ། །ཀྱང་མགྲོགས་ཡིད་
 བཞིན་བསམ་འཕེལ་ཅིས་བྱ་བའི་དངོས་བྱུང་བརྟེས་པས། བོད་ནས་
 ཁ་ཆེར་ཁྲི་བ་གསུམ་གསུམ་འགོར་བ་ལ། ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་ནི་ཡར་ལ་

ཞལ་དྲུག་རྒྱུ་ལ་ཞལ་དྲུག་ལ་ཕེབས་པ་ལྟགས་སྟོང་།

[illegible]

དེ་ནས་ཀ་པའི་གདུང་བརྒྱུད་རྣམས་ཀྱིས་མཆོད་པ་མཁུམས་ཤིང་།
 ལྷ་པ་བྱ་སྒྲིམ་ཀྱན་གྱིས་གདུང་སྦྱངས་པ་ལ། ལྷ་གདུང་གི་ཐོ་བོ་ཉུང་འབྲུ་
 ཅམ་ཡང་མ་བྱུང་སྟེ། འོན་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་གྱི་མ་ཕུན་འཇུག་ཅམ་དུ།
 རིང་བསྟེལ་གིང་ཐོག་འོ་མ་སི་ལྷ་ར་གིན་དུ་དམ་ར་བ་གསུམ་ཞིག་བྱུང་སྟེ།
 རྣམ་མཁའ་ལ་རོལ་མའི་སྒྲ་སྒྲ་ཆོགས་འབྲུག་ལྷ་ར་སྒྲགས་ཏེ་མཁའ་སྟོན་དུ་
 བཤེགས་སོ།།

དེ་ནས་ཁྱེད་ཀྱི་མཉམ་འཇུག་གི་མི་མ་ཡིན་ཆོས་ལ་དགོང་པ་
 ༥༤། དམ་ལ་བདག་པ་རྣམས་ཀྱིས། མཚན་མོ་རེ་ལ་གདུང་
 མཚན་ས་སུ། ཏུ་ཅོང་འདེབས་པ་མང་དག་གུང་བ་ལ། དེ་ནས་
 ཞག་གཅིག་སྐར་མ་ཏྲ་པ་ལ་ཉ་བའི་དགུང་ཆོས་བཙོ་ལྷ་ལ། གདུང་གྱུར་

ས་རུ་འཇའ་ཚོན་དང་མེ་དྲོག་གི་ཆར་འབབ་པ་མང་དག་ཀྱང་གཤམ་དེ་
 མན་ཆད་མི་མ་ཡིན་མུ་ངན་བྱེད་པའི་སྒྲ་ཡང་ཆད་དོ། རྒྱུ་མཚན་དེ་
 རྩོམ་ཆེན་པོ་ལྷ་གཅིག་ལ་ཞུས་པ། ལོ་རྒྱུ་བ་ཀྱང་རྒྱུ་བ་སེམས་དཔའ་མི་
 མ་ཡིན་རྣམས་ལ་སྤྱིང་རྩི་དགོངས་ནས། འདྲེ་སྤྱིན་རྣམས་ལ་ནམ་
 མཁའི་དབྱིངས་ནས་མི་དྲག་པའི་ཚོས་གསུངས་ནས་མི་མ་ཡིན་རྣམས་
 ཚོས་ལ་བཀོད་ནས། དེ་མན་ཆད་མུ་ངན་སངས་པ་ཡིན་གསུངས།
 དུས་དོང་སང་མ་དུ་ལོ་རྒྱུ་བ་ནི་རྒྱུ་བ་ཕྱོགས་བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་ཁམས་སུ་
 མཁའ་འགྲོ་མ་གསེར་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་གདན་དྲངས་དེ་བཙམ་ལྷན་འདས་
 འོད་དཔག་མེད་གྱི་ཞབས་དྲུང་ན་བཞུགས་དེ་མཆིས་གསུངས་ནས་ཐལ་མོ་
 སྐྱར་བར་མཇུག་དོ།

དེ་ལྟར་སྒྲིབ་ཀྱི་ཕུ་ཆེན་པོ་དེ་ནི་སངས་རྒྱུས་ཤྱག་ཐུབ་པའི་སྒྲུལ་པ་ཡིན་
 དེ། གང་ཟག་ཐུབ་པ་ཐོབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདྲིའི་དགོར་ལ་
 འབགས་པ་རྣམས་ནི་བླ་མི་གིས་གིང་། ཐར་རབས་ཆད་པར་འགྱུར་
 རོ། །དེ་ནི་གིན་དུ་འཛིམ་པ་གལ་ཆེའོ། །སྒྲ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟོན་
 མཚན་དང་དགོར་ཆགས་ཡུལ་གྱི་འཛིན་རྒྱ་འཆང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཡུལ་
 རྒྱུང་རྣམས་སྦྱོངས་གིག། །གཙུག་ལག་ཁང་དང་དགོར་ཆ་དང་།
 མཚན་པ་རྣམས་བསྐྱུང་གིག།

དུང་རྒྱུ་བ་སེམས་དཔའ་ལོ་རྒྱུ་བ་འཇིག་རྟེན་པ་ཟུང་པའི་འཁྲུངས་
 རབ་དཀའ་སྤྱད་སྒྲོན་མ། རྣམ་ཐར་གཤམ་ཐེང་ལུ་གུ་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་

འདི། ལུ་གེ་བྱི་ཐང་**ལྷ་མོ་པོ་**ཡི་གེར་བཀོད་པ་ཚེགས་སོ།
 ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་རིན་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་མཛོད་འཛིན་ཅིང་།
 འཕྲིན་ལས་བཟང་པོའི་འོད་ཟེར་ཕྱོགས་བཅུར་འབྱེད་པ་པོ།
 རྒྱལ་སྐུ་དེ་ལ་བདག་གིས་གུས་པས་ཐལ་སྤྱར་དེ།
 ཆེ་རབས་ཀྱན་དུ་ཞབས་ཀྱི་པར་མཛོད་བྱེད་ཤིག།

ལུ་གེ་བྱི་ཐང་པ་**དཔལ་ལེ་ཤེས་**ཀྱིས་**མཐོ་མཛོད་**དུ་**སྤྱི་པའི་རྒྱལ་**
ཐར་འཕྲི་པོ་ཡིན་ནོ། མཁན་པོ་དང་པུན་ཏ་འདི་ནས་ཆོས་འདི་
 ཞུས་དང་། ཆོས་གདེར། རྣམ་གདེར། ཤིང་ཆའི་གདེར་ལ་
 སོགས་པའི་ཞིབ་གདེར་རྒྱལ་པོ་རྣམས་ཐར་ཆེན་མོར་གསལ་ལོ།

སྒྲིབ་བ་ཀ་བ་བཞི་ནི། སྤྱི་ཙམ་པ་རིན་ཆེན་ཤེས་རབ། སྒྲིན་
 ཤེར་བ་ཤེས་རབ་དམ་པ། **ཕྱི་ཐང་པའི་ཤེས་དཔལ་** དོལ་པོ་པ་
 བྱུང་ཆུབ་སྟེང་པོའོ།

གདུང་མ་བརྒྱད་ནི། ཤ་ཟན་པ་ཡོན་ཏན་ལེགས་པ། སྤྱི་
 བུ་ལོ་རྩ་བ་བཟང་མཆོག །གུར་ཤིང་པ་བཙོན་འབྲུས་རྒྱལ་མཆོག།
 མ་རྣམ་པ་རྒྱལ་ཁྲིམས་སྟེང་པོ། དགེ་ཐང་པ་དཔལ་གྱི་བྱུང་ཆུབ།
 སས་པ་གསེར་བཟང་། ཤ་གོ་བ་ཡོན་ཏན་ཤེས་རབ། སེད་དཀར་
 བ་བསོད་རྣམས་ཤེས་རབ་དང་བརྒྱད་ཡིན་ནོ།

སའ་མཛྲ་ལམ། དགེའོ།

बोधिसत्त्व लोचावा रत्नभद्र का जातक तपः प्रदीप जीवनी स्फटिक रत्नमाला नामक विराजित है ।

.....¹ सूर्य चन्द्र रूपी प्रदीप,
पुरुषोत्तम महानुवादक के चरणों में (में, ज्ञानश्री) प्रणाम करता हूँ ।

उन सद्गुरु (रत्नभद्र) की कृपा का अनुसरण होने के कारण, श्रद्धा (रूपी) अंकुर उत्पन्न होने तथा (उनके) मुख से बतलाये हुये (उनकी जीवनी) को सुना होने के कारण से उनकी जीवनी को सूत्र मात्र (=संक्षेप से) लिख रहा हूँ । इस बोधिसत्त्व की लघु जीवनी को लिखने में ग्यारह प्रकार के अर्थों (=विषयों) के माध्यम से प्रतिपादित किया जाएगा:—

पहला:— उसे महापुरुष के (सम्बन्ध में बुद्ध ने) किस प्रकार की भविष्यवाणी की ।

दूसरा:— उनकी कौन सी वंश परम्परा रही ।

तीसरा:— जन्म कहाँ हुआ ।

चौथा:— कहाँ प्रव्रजित हुये ।

पाँचवा:— अनुवाद आदि (विद्या) अध्ययन कहाँ किया ।

छठा:— किन गुरुओं एवं उपाध्यायों से धर्म (श्रवण हेतु) निवेदन किया ।

सातवाँ:— सद्धर्म (के ग्रन्थों) का (संस्कृत से भोटी में) अनुवाद कैसे किया ।

आठवाँ:— किन-किन स्थानों में विहारों का निर्माण कैसे किया ।

नौवाँ:— इक्कीस छोटे गाँव में पूजा कैसे की ।

दसवाँ:— विशिष्ट साधना कहाँ पर की ।

ग्यारहवाँ:— किस स्थान पर से खेचर को प्रस्थान किया ।

¹ यह वाक्य पूर्ण नहीं मिलता, परन्तु इस अपूर्ण वाक्य में विषयगत विवरण नहीं होने पर यह जीवनी खण्डित नहीं है । यहाँ लेखक ज्ञानश्री द्वारा महालोचावा रत्नभद्र को, रचित स्तुति के कुछ वाक्यांश मात्र ही लुप्त हैं ।

पहला: (शाक्य) मुनि द्वारा भविष्यवाणी—

मेरे परिनिर्वाण के बाद, बारह सौ वर्ष पर,
पक्षी (की तरह) चेहरे वाला एक भिक्षु होगा,
(जो) मेरे शासन का विस्तार करेगा ।

इस प्रकार बहुत से सूत्रों एवं तन्त्रों में भविष्यवाणी निर्दिष्ट है ।

दूसरा : उस (रत्नभद्र नामक) गुरु का निवास स्थान गुगे (प्रान्त) के ख्व-चे का हुगस-वेर था । उनका गोत्र ख्व-चे ग्यु-स्र (उच्चारण:- ख्व-चे यु-डा) के ग्शेन (-शेन) परम्परा का था । (तथा) पितृ वंश छः देव परम्पराओं में से एक था जो ल्ह-जि-म हुगंस की परम्परा होने के कारण, हुगस्-वेर कहा जाता है । (इनके) मामा नाग (वंश) से सम्बन्धित होने के कारण (माँ के वंशानुसार इन्हें) क्लु-जोर (-लु-जोर) भी कहा जाता है । (उनके) पैतृक पुत्र तेरह थे, उन में से (उनके) पितामह के दो पुत्र थे (जिन) में से ज्येष्ठ (पुत्र ने) तो प्रव्रजित होने पर भी गृहस्थी स्वीकार कर ली । (जिन का) नाम बन-छेन पो ग्जोन-नु वड-छुग (-वन-छेन-पो जोन-नु वड-छुग=महा भदन्त कुमारेश्वर) था । कनिष्ठ (पुत्र) का नाम गुड-ल्लोन ग्यु-थोग स्र (-गुडल्लोन यु-थोग-डा) था ।

महाभदन्त जोन-नु वड-छुग (=कुमारेश्वर) के लोचावा (=अनुवादक रत्नभद्र) आदि चार सन्तान हुये । (इन की) ग्यु-स्र ग्शेन-पो (-यु-डा शेन-पो) नामक वंश परम्परा चली, जिस में रि-प-शि-चेर-पा, क्यु-वड-पा एवं रो-पग-पा (हुये) हैं । गुड-ल्लोन यु-थोग-डा के कनिष्ठ अनुवादक लेगस्-पहि-शेस-रब (=सुप्रज्ञा) आदि तीन सन्तान हुये (इन) की ग्यु-स्र-चड-पो (-यु-डा चड-पो=कनिष्ठ यु-डा) नामक वंश परम्परा चली (जिस) में जर-वड-पा, शोन-खर-पा तथा च-हड-गिस (हुये) हैं ।

तीसरा : (इन का) जन्म स्थान पितामह यु-डा तोड-चन का पूजित क्षेत्र क्यु-वड रद-नि नामक था । (इन के) पिता का नाम बन-छेन-पो जोन-नु वड-छुग (=महा भदन्त कुमारेश्वर) था । (तथा) माँ

चोग-रो (वासिनी) कुन-ब्रजड़-शेस-रब-बस्तान-म (-कुन-जंड शेस-रब तन-मा=समन्त भद्रा-प्रज्ञाशासनी) नामक थी । इन (दोनों) के चार सन्तान हुए । ज्येष्ठ (पुत्र) शेस-रब दवड-फ्युग (शेस-रब वड-छुग=प्रज्ञेश्वर), मंझला (पुत्र) रिन-छेन दवड-फ्युग (-रिन-छेन वड-छुग=रत्नेश्वर) तथा कनिष्ठ (पुत्र) योन-तन दवड-फ्युग (-योन-तन वड-छुग=गुणेश्वर) थे । उन की छोटी बहिन शेस-रब म्छो-मो (-शेस-रब छो-मो=प्रज्ञा सरिता) नाम की थी ।

(उनमें से) मंझले (पुत्र) रिन-छेन वड-छुग (रत्नेश्वर) गुरु (महा) अनुवादक (=रत्नभद्र) थे । ज्येष्ठ भ्राता शेस-रब वड-छुग ने गृहस्थ वेश धारण किया तथा छोटे भाई योनतन वडछुग प्रव्रजित होकर छोटी (आयु) में ही साधना में बैठ गये । छोटी बहन शिक्षामाना बनी और तन्त्र के धर्मों से शिक्षित होकर सिद्धि प्राप्त की (जो) योगिनी छोस-किय स्पोन-म (-छोस-किय डोन-मा=धर्मप्रदीप) नाम से प्रसिद्ध हुई ।

बोधिसत्त्व लोचावा माँ के गर्भ में रहते समय माँ की अनुभूति में नित्य दिन-रात (उन्हें) अपने दायें कन्धे पर सूर्य, बायें (कन्धे) पर चन्द्रमा, शीश पर फीरोजा के चोंच एवं पंजे वाला एक स्वर्ण गरुड़ मुख से विभिन्न मधुर ध्वनि निकालते हुये उड़ते फड़फड़ाते जैसी प्रतीतियों का आभास होता रहा । (गर्भ धारण कर) नौ महीने दस दिन होने तक (माँ का) शरीर सुखी, निरोग एवं हल्का रहने आदि बहुत से शुभ लक्षण उत्पन्न हुये । तत्पश्चात् प्रसूति काल आने पर (उक्त) वह स्वर्ण गरुड़ माँ के शीश में समाकर गुह्यस्थान से (बाहर) निकल माँ को तीन बार परिक्रमा करके आकाश में उड़ कर जाता हुआ (माँ ने) स्वप्न में देखा । तथा फूलों की वर्षा होने पर भी वहाँ उपस्थित लोगों द्वारा (उन फूलों को) एक भी नहीं उठाया हुआ स्वप्न देखा ।

(भोट पंचाँग के अनुसार) अश्व वर्ष के वर्षा ऋतु के अन्तिम महीने में (शुक्लपक्ष) की दसवीं तिथि को क्यु-वड के एक आयताकार खेत में गुड़ाई करते समय माँ का स्वास्थ्य थोड़ा भारी हुआ और खेत के ऊपरी भाग में जाकर बैठी तो (उस समय) माँ के दायें कन्धे पर एक

मोड़ बायें पर एक कोयल, शीशं पर एक तीता साक्षात् (रूप से) उतर आये। “इस तरह (ये) पक्षी (अचानक) कहाँ से आये?” पिता के इस प्रकार कहते ही (वे) तीनों (पक्षी) माँ (के शरीर) में विलीन हो गये। उसी समय माँ ने बिना पीड़ा हुये प्रसव में चेहरे और नेत्र पक्षी के समान तथा दायाँ हथेली में चक्र के रेखा चिह्न वाले एक शिशु को जन्म दिया।

दो वर्ष पूरे होने पर ही (उस शिशु को) मुँह से अ आ ई ई— ऐसा उच्चारण करते हुये तथा भूमि पर भी उसी तरह लिख कर अञ्जलिबद्ध खड़ा देखे पिता ने कहा—“(बालक को कुशल) कर्मों का संस्कार है।” (अंतः उसे) पीले वस्त्र पहना कर उपासक बनाया गया। यह बोधिसत्त्व (रत्नभद्र) के जातक की लीला है।

चौथा. (इनकी) प्रव्रज्या : उपाध्याय, लेगस-म बज्जड-पो (-लेगस-पा जड-पो=सुभद्र) से तेरह वर्ष की आयु में (वे) प्रव्रजित हुये और (उत्तका) नीम-रिन-छेन बज्जड-पो (-रिन-छेन जड-पो=रत्नभद्र) रखा गया। उपाध्याय से त्रिशत-कारिका श्रवण कर टीका सहित हृदयगम कर लिया।

अनुवाद आदि विद्या अध्ययन करने की (प्रेरणा) विधि इस प्रकार है:— सुत्तरह वर्ष की आयु होजे पर (एक दिन) उड्डियान से आये एक मण्डित को (रत्नभद्र की), माँ ने लघु आसन लगाकर भोजन कराया, उस स्थान पर एक छोटी सी सुन्दर भारतीय पुस्तक छूटी पड़ी थी जिसे बाद में लोचावा (रत्नभद्र) ने देख कर सोचा कि इस भारतीय ग्रन्थ के भीतर विशेष सा उपदेश होगा। किन्तु मुझे भारतीय भाषा नहीं आती— ऐसे विचार करते हुये गाँव के नीचे एक पेड़ की शीतल छाया में (बैठे तो, उन्हें) नींद आ गई और उस समय स्वप्न में (देखा कि) एक लोहित वर्ण की स्त्री रत्न मुकुट, कंगन तथा रेशमी डोरियों आदि से अलंकृत, दायाँ हाथ से डमरू बजाती हुई बायें (हाथ) में मुट्ठी भर फूलों का गुच्छा धारण किये (उनके) सामने आकर इस प्रकार कहने लगी—

(अपनी) लार (द्वारा बने जाल) में मकड़ी का

अपनी ही शरीर-बंध जाता है उसी तरह,

(अपने) देश के प्रति आसक्ति रखने से (व्यक्ति) मार

के जाल में फँस जाता है । १

सुगति एवं मुक्ति में जो कोई व्यक्ति चाह रखता हो,

(वह) उत्तर दिशा (में स्थित) काश्मीर में जाकर तथा,

भारत के पूर्व से पश्चिम में बाढ़ के समान जाकर,

सद् धर्म (रूपी) समुद्र को भोट भाषा में अनूदित करें तो, सुखद होगा ।

३१५

ऐसे शब्द कह कर (वह स्त्री) अदृष्ट हो गयी । तींद से जागे तो (उनका) सारा शरीर नहायें हुये की भाँति से प्रसीने से भीग गया था । तब वे मन से क्षुब्ध हुये और खिन्न होकर घर आये । वहाँ (उन्होंने) सोचा कि—“(यह मेरे लिये) डाकिनी की भविष्यवाणी हैं (अतः) अब (मैं) काश्मीर एवं भारत नहीं जा सकता तो मेरे धर्म तथा जीवन (दोनों) को विघ्न पड़ने वाला है । (यदि) चला जाये तो भी (उन गन्तव्य) स्थानों से अच्छा परिचय न होने के कारण (मेरे) माता-पिता दोनों के मन में व्याकुलता (बनी) रहेगी (जिससे) मुझ में कुसंस्कार का संश्रय होगा ।” इस विचार में (उनका) मन चक्कराता रहा । (तब उनकी) माँ ने पुत्र (रत्नभद्र) के चेहरे को देखा, तो चेहरा अत्यन्त काला दिखा । माँ के—“बेटे अस्वस्थ हो, क्या चेहरा काला है ?” ऐसा पूछने पर पूर्व के (स्वप्न में) डाकिनी की भविष्यवाणी के वृत्तान्त को सूक्ष्म रूप से माता एवं पिता को सुना दिया ।

तत्पश्चात् माता-पिता एवं बन्धु-बान्धवों में विचार-विमर्श करते समय पिता ने कहा— इस (पुत्र) को (काश्मीर) न भेजें तो इसके धर्म एवं जीवन (दोनों) में विघ्न पड़ने वाला है । (यदि) भेजें तो हम सभी का हृदय फट जाने के समान है, तथापि भेजने की सहमति हुई और ऐसा तय किया गया कि— काश्मीर चले जायें, परन्तु इस बार पूर्वी भारत न जाकर काश्मीर से ही (स्वदेश) लौट आयें । तत्पश्चात् अपने साथी भाई बक्र-शिस र्चे-मो (-टशि चे-मो=मंगल शेखर) नामक एक

उपासक को सारथी (के रूप में) मित्र बनाकर अट्ठारह वर्ष की आयु में (भोटी पंचाङ्ग के अनुसार) सुअर वर्ष में गाँव से विदाई लेकर निकल पड़े । (मार्ग व्यय के रूप में) छः सौ कौड़ी और बहुत से हस्तद्रव्य लिया । माँ ने विभिन्न प्रकार के बहुत से भोजन और छोटे उपहार (देने योग्य वस्तु) दिये । पुराने गर्म कपड़े पहन कर (आगे की) जगहों से परिचित एक कुल्लू घाटी के निवासी के साथ तीनों (मिलकर) चले । माँ भी आधे दिन (के रास्ते) तक पहुँचा कर लौट गई ।

(वे तीनों) किन्नौर (के रास्ते) से लाहुल निकल कर भिक्षा लेते हुये चले । तत्पश्चात् एक महीना तीन दिन (चलने) पर क-रि-क (कारिका) नामक गाँव पहुँचे । कुल्लू वाले मित्र ने (मार्ग में) चलने से तंग होकर (और आगे) चलने की इच्छा नहीं की । तब स्वयं स्वामी और दास दोनों मात्र चले । आगे तीन दिन का मार्ग तय करने पर महा-सङ्ग-ल (-सङ्गला) नामक एक बड़े पुल पर पहुँचे, वहाँ पर कर वसूल करने वाले रूक्ष मार्ग रक्षकों के तीन घरानों (वाले गाँव) में पच्चास कौड़ी देकर एक रात असुविधा के साथ सोये ।

अगले दिन प्रातः ही पुल पार करके चलने पर एक दर्रे की दो तिहाई लगभग (की दूरी) पहुँचने के समय भाई तीव्र रोग से ग्रस्त होकर मरने के समान हो गया । स्वयं (रिन्छेन जङ्गपो को) भी थकान आदि से मन खिन्न होकर नींद आ गई । उस समय तीन सौ खुड्खार डाकू चले हुये मार्ग में मिलने ही वाले थे तो (उसी समय) स्वप्न में पूर्व वाली डाकिनी ने पुनः आकर कहा कि—“पुत्र उठो ! बीमार (भाई) को तो कल शाम पुल पर रहने वाली, धार्मिकों को पसन्द न करने वाली यक्षिणी ने विघ्न डालने का सोचा था परन्तु मैंने उसका निवारण किया है (जिस) से रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जायेगा । (परन्तु) यहाँ रहोगे तो शीघ्र ही डाकू आने वाले हैं अतः (तुम दोनों) विपरीत रास्ते से जाओ । त्रिरत्न की तीव्र प्रार्थना करो ।” तत्काल (रिन्-छेन जङ्ग-पो) उठे और रोगी (भाई) को हाथ से पकड़ कर ले जाते हुये (त्रिरत्न की) प्रार्थना करते चालीस कदम मात्र चल कर पीछे देखा तो, पहले (सोने) की

जगह पर शस्त्र उठाये डाकू पहुँच गये थे । त्रिरत्न एवं डाकिनी के आशीर्वाद से (उन दोनों को डाकुओं ने) नहीं देखा (और) सही मार्ग पर चलते गये । तत्पश्चात् बीमार (भाई) भी स्वस्थ हो गया था, डाकुओं के भय से भी मुक्त होकर सुख से (राहत की) सांस छोड़ते हुये प्रसन्न एवं आनन्दित चित्त से उस ऊँचे दर्रे को पार कर चल पड़े ।

तीन दिन के करीब तक (उन दोनों के पास) खाने के लिये कुछ भी नहीं था और (वे दोनों) घने जंगल के एक संकरे रास्ते से नीचे उतर रहे थे कि चावल का बोझा उठा कर आ रही एक बूढ़ी माँ (और उसकी) बेटी से भेंट हुई । (भिक्षा) मांगने के संकेत में भिक्षापात्र आगे बढ़ाने पर (उस बूढ़ी औरत ने) चार-पाँच मुट्ठी चावल भेंट किया । उस चावल को उबाल कर खाये तो सन्तुष्ट हुये । तदुपरान्त प्रतिदान (हेतु परिणामना) कथन के साथ सोचा कि—“(यह) बूढ़ी माँ-बेटी दोनों तो (हमारी) माँ एवं बहिन के रूप में आयी हैं । (अतः) कृतज्ञता पूर्ण करने के लिये (इन् के स्मृति में) एक सौ आठ स्तूप बनाने चाहिए ।” इस विचार के साथ बुढ़िया से “तुम्हारे केश की चोटी से कुछ अंश दे दो (कहकर) मांगने का संकेत किया । बुढ़िया का मन अत्यन्त शुद्ध होने से—“(अगर) आपको आवश्यकता हो तो बाल लम्बे काट कर ले जाओ” का संकेत किया ।

तब लोचावा (रत्नभद्र) ने धार्मिक पुस्तकें रखने वाले झोले के अन्दर से हाथी दान्त की अंगुल भर की महाकारुणिक (आर्य-अवलोकितेश्वर) की प्रतिमा दिखायी (तथा) स्तूप निर्माण का नमूना दिखाते हुये—“इसमें यह (=तुम्हारे केश को) मिलाना है” का हाथ से संकेत किया, तो बुढ़िया प्रसन्न होकर प्रत्युपकार से (अपने) बाल के अग्रभाग से लगभग दो तिहाई अंश काट कर (रत्नभद्र को) अर्पण किया । प्रणाम करके (अपनी) जीभ बाहर निकाल (रत्नभद्र को) हाथ पकड़ कर—“यह कटी हुई (के समान भाषा नहीं जानने का दुःख) है” ऐसा संकेत किया । (और) वह आंसू बहाती चली गयी । (तब) उन्हें (रत्नभद्र को) भी करुणा उत्पन्न होकर आंसू छूट पड़े— ऐसा कहा

। बाद में काश्मीर में पहुँचने पर (उन्होंने) बुढ़िया के हितार्थ (उसके) बाल अंश को भस्म कर (उसकी) एक सौ आठ से अधिक स्तूप बनाये ।

पाँचवा : उसके पश्चात् आधे दिन के लगभग (चलने) पर (वे दोनों) काश्मीर की सीमा पर पहुँच कर ब्राह्मणों के सात घरों वाले गाँव में गये । वहाँ पर एक महीना रहकर स्थानीय बोल-चाल की भाषा थोड़ी सी सीख ली । उसके बाद एक दिन के मार्ग में एक पेड़ के नीचे मानव जाँघ की हड्डी की बनी वंशी बजाते हुये एक नग्न योगी से भेंट हुई । उस योगी ने वंशी को गुरु (रत्नभद्र) के सिर पर तीन बार घुमाया और (योगी) घने जंगल में चला गया । बाद में सुनकर (उन्हें यह ज्ञात हुआ) कि वे सिद्धि लब्ध रत्नसिद्धि नामक योगी थे । तब (रत्नभद्र ने) कहा कि—“उस समय वे मुझे अधिष्ठित करने आये थे पर (तत्काल पहचानने का) अनुमान नहीं लगा पाने के कारण (मुझे) गहरा पश्चात्ताप हुआ ।”

वहाँ से आगे जाने पर (उन दोनों को रास्ते में) नव प्रसूता व्याघ्री मिली तो घने जंगल से अकस्मात् मानव जाँघ की (हड्डी से निर्मित) तूती (-मि-कंड=मि-कड) की ध्वनि आयी और वह व्याघ्री घूम कर किनारे से चली गयी । “तब समझ आया कि वह अधिष्ठान का संकेत है और मेरे मन में (उस योगी रत्नसिद्धि के प्रति) अगाध श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न हुई”— ऐंसा (गुरु रत्नभद्र ने) कहा । तब वहाँ से आगे जाने पर (उन्हें) बहुत से व्यापारियों से भेंट हुई और भिक्षा माँगने पर बहुत (सा) चावल (दान में) मिला । उस रात (वे) उन व्यापारियों के पास ही सोये ।

अगले दिन आगे की जगहों का परिचय अच्छी तरह पूछकर सूर्य तपने (=दिन होने) तक चलने पर क-ल-चगति (-कलचगति) नामक नगर में पहुँचे । वहाँ शुरू में काश्मीरी बच्चे एकत्र होकर—“इस प्रकार के बिना दाढ़ी-मूछ वाले और पीले पहनावे वाले

शरीर के एक आदमी को देखो"— कहते हुये (मजाक कर) तमाशा करने लगे ।

तत्पश्चात् एक वृद्ध गृहस्थ से आवास (सुविधा) लेकर कुछ दिन वहाँ बैठे । (उन्होंने स्वयं कहा है कि) एक दिन नगर में भिक्षाटन करने जाने पर एक वृद्ध ब्राह्मण से (मेरी) भेंट हुई तो उस ब्राह्मण ने मेरी हस्त रेखा को देखने पर कुछ न कहकर (अपने) घर में जा, एक चाँदी की धूपदानी को फूलों से पूर्ण भरकर मुझे भेंट किया और प्रणाम करते हुये (कपड़े का) पल्ला से पकड़े, बहुत से मंगल (शब्दों का) वाचन कर बोलने लगा कि—“आप ने अनेक जन्मों तक (पुण्य) सम्भार सञ्चित किया है, (शुभ) कर्म वाले आप इस जन्म में भी बहुत सारे धर्मों का ज्ञान पाकर बहुत से प्राणियों का उपकार करेंगे, और बाद में सम्यक् सम्बुद्ध भी बनेंगे । (वे) श्रद्धाकर वर्मा नामक ब्राह्मण थे ।

उसके बाद पण्डित गुणमित्र नामक पाँच विद्या प्रस्थानों के एक विशेषज्ञ विद्वान् से (जो) लगभग पाँच सौ युवाओं को धर्म देशना देने में बैठे थे (उन) की भेंट हुई । (उक्त) पहले ब्राह्मण द्वारा भेंट किये चाँदी के धूपदान को फूलों से भरकर दक्षिणा के रूप में (पण्डित गुणमित्र को) भेंट किया और (दण्डवत्) प्रणाम कर प्रार्थना करके (उनसे) सात महीनों में अनुवाद (कला) सीखी (तथा) शब्द प्रमाण (=व्याकरण) में दक्ष हुये ।

काश्मीर के उपाध्याय धर्मशान्ति से उपसम्पन्न होकर, धर्मधातु का विधि-मण्डल सहित श्रवण किया । उसी तरह के बहुत से धर्मों का श्रवण किया तथा (भोट भाषा में) अनुवाद (भी) किया । (उन्होंने) वर्ण सूत्र (नामक ग्रन्थ) की रचना की ।

उसके पश्चात् (उन्होंने) सुना कि पूर्व दिशा में छः दिनों के मार्ग पर त-म-ल-सन-ति नामक नगर में पाँच महाविद्या प्रस्थानों में निष्णात एक अत्यन्त प्रसिद्ध महापण्डित रहते हैं । (तब) पूर्व के गुरु को विदाई का प्रणाम करके जाने पर मार्ग में उड़ रहे गिद्ध की परछाई के समान

द्रुतगति वाले एक जोगी (=योगी) से (उनकी) भेंट हुई । (उसे) जैँघाचारिक (=द्रुत गति की सिद्धि वाला) जानकर (उनके) चरणों को (रत्नभद्र ने) सिर पर लेते हुये निवेदन किया कि—“मैं एक बहुत दूर से आया हुआ व्यक्ति हूँ (अब और आगे) जाने में असमर्थ हूँ । भेंट करने की परिस्थिति में भी नहीं हूँ क्योंकि मेरे पास सब समाप्त हो चुका है अतः— महाकृपा पूर्वक विचार कर मुझे जैँघाचारिक का उपदेश प्रदान करें ।” ऐसा निवेदन करने पर (उस योगी ने) कहा कि—“तुम बहुत दूर से आये व्यक्ति (हो, तुम्हें) उपदेश दूँगा । पर (यह) जैँघाचारिक डाकिनी का धर्म (उपदेश) है, अतः अधिष्ठान एवं घनपूजा के बिना (उपदेश) प्रदान नहीं किया जायेगा ।” (ऐसा कहते ही वे) जोगी का शिष्य बनकर भिन-धर (-भिनधर) नामक नगर में घनपूजा के साधनों की (भिक्षा) मांगी ।

(तत्पश्चात्) साधन जुटते ही निवेदन किया, तो—“अब उपदेश दिया जायेगा” (योगी द्वारा) ऐसा कहकर अधिष्ठान एवं घनपूजा किया और एक भेंट कपड़े के थैले में (बन्द कर उसे) लोचावा (रत्नभद्र) के गले में बाँध दिया । (लोचावा ने) काय, वाक्, चित्त गुरु को भेंट किया । (इसके बाद उन्होंने) चिन्तामणि नामक जैँघाचारिक की सिद्धि प्राप्त की और त-म-ल-सन-ति (-तमलसनति) नामक नगर में चले गये ।

छठा : तमलसनति नगर में महापण्डित श्रद्धाकर वर्मा² का दर्शन किया । उनसे उन्होंने धर्मोपदेश याचना (अर्थात् अध्ययन के लिये प्रार्थना) की तो (महापण्डित श्रद्धाकर वर्मा ने) स्वीकार किया । दो वर्ष में योगतन्त्र के साधना विधि तथा (अन्य) बहुत से धर्मोपदेशों का श्रवण किया । श्रीचक्रसंवर की पंजिका तथा भगवान् अभिसमय नामक तन्त्र साधना विधि आदि गुह्य तन्त्र की बहुत सी साधना विधियों का श्रवण कर (उन ग्रन्थों को भोट भाषा में) अनुवाद किया । उपाध्याय

2 यह उक्त चाँदी के धूपदान भेंट कर हस्तरेखा देखने पर भविष्यवाणी करने वाले ब्राह्मण श्रद्धाकर वर्मा नहीं हैं ।

बुद्ध श्री से भी योग (तन्त्र) के अनुपूरक और बहुत से धर्मों को सुनकर गहन अभ्यास किया ।

उसके बाद पहले (काश्मीर से ही) स्वदेश लौटने की सहमति के अनुसार (जब) वापस लौटने की इच्छा हुई (तो) उस रात स्वप्न में (ऐसी भविष्यवाणी हुई कि:—) “तिब्बत के एक आदमी को समुद्री द्वीप से बहुत से मणि रत्न प्राप्त हुये हैं पर एक चिन्तामणिरत्न है (जिसे) पीछे छोड़ रखा है । वह चिन्तामणिरत्न भट्टारक नरोपा (=नाडुपाद) के हाथ में है ।” नींद से जागते ही पण्डित श्रद्धाकर वर्मा को (यह) वृत्तान्त सुनाया तो श्रद्धाकर वर्मा ने कहा कि—“इस प्रकार है तो भट्टारक नरोपा के पास जाना चाहिये । वे एक जन्म में, एक ही शरीर से बुद्धत्व प्राप्ति के महामुद्रा के सम्बन्ध में बहु-ज्ञाता हैं”

इस प्रकार गुरु की आज्ञा मिलते ही उन्होंने सोचा कि—) “सिद्धि का मूल गुरु की आज्ञा का पालन करना होता है (और) स्वप्न भी शुभ (लक्षण) वाला होने के कारण (मुझे नरोपा के पास) जाना चाहिये ।” (ऐसा) विचार कर उत्तर दिशा के फूलहरि के द्पल-मे-तोग-ग्यस-प (पल मे-तोग ग्यस-पा=श्रीपुष्प विकास) नामक विहार की ओर चल पड़े । (वहाँ पहुँचकर) शीघ्र ही नरोपा का दर्शन कर अधिष्ठान एवं उपदेश प्रदान करने की प्रार्थना करने पर (उन्होंने) उपदेश प्रदान किया । सहज गम्भीर सर्वप्रपञ्च रहित, तत्त्व के विशिष्ट अववादों का परिचय एवं बहुत से अधिष्ठानों का श्रवण किया ।

उसके बाद उपदेशों एवं अधिष्ठानों की समाप्ति पर गुरु नरोपा को विदाई प्रणाम करके पुनः वापसी के मार्ग में पण्डित कमलगुप्त का दर्शन हुआ । (उनसे भी) बहुत से अववादों का श्रवण किया । पहले (अपने) गाँव (=घर) में देखी गई (उक्त भारतीय) पुस्तिका (जिसे रत्नभद्र नहीं समझ पाये थे) में डाकिनी स्वर्ण-प्रभावती की गम्भीर साधना विधि विद्यमान थी । वे पण्डित (कमलगुप्त, उसके भी) ज्ञाता थे । (रत्नभद्र ने उनसे) इस ग्रन्थ का भी अध्ययन किया । पहले (गाँव

में) भविष्यवाणी करने वाली यही डाकिनी थी और (इसी ने) बाद में (बूढ़ी) माँ बहन के रूप में (उनकी) सहायता (भी) की थी ।

इस प्रकार काश्मीर (प्रवास) में कितने वर्ष बीत चुके हैं— का गणना किया तो (तब तक उन्हें) सात वर्ष हो चुके थे । 'अब माता-पिता से मिलने जाना चाहिये', यह सोचकर उपदेशों को पीले भोजपत्र पर लिख करके (उन्हें) भारतीय पुस्तक के आकार का बनाया (और) चलने की (जब) इच्छा हुई तो (पहले अपने) देश में भविष्यवाणी होते समय—“भारत के पूर्व से पश्चिम को जल की भान्ति अपने चरणों से स्पर्श करो ।” (ऐसा जो) कहा था उसका (अकस्मात्) स्मरण आया तो पुस्तकों को (पण्डित) श्रद्धाकर वर्मा के पास रखकर (वे) पूर्वी भारत चले गये । यहाँ तक काश्मीर में रहकर धर्म ग्रहण करने और अनुवाद करने का वृत्तान्त है ।

सातवाँ : पूर्वी भारत की यात्रा:— जंघाचारिक सिद्धि द्वारा वे शीघ्र ही पूर्वी भारत पहुँचे और (वहाँ) उपाध्याय जिनमित्र, उपाध्याय ज्ञान, उपाध्याय शीलेन्द्र बोधि आदि अनेक उपाध्यायों एवं पण्डितों से धर्म (श्रवण कराने का) निवेदन कर (उन्हें) अनुवाद किया, (जिनमें :—) सूत्रवर्ग, विनय, अभिधर्म, प्रातिमोक्ष, त्रिशतिका विस्तृत मातृका (=शतसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता), मध्यम मातृका विशंतिका, अष्टादश साहस्रिका, अष्टसाहस्रिका (प्रज्ञापारमिता) और धारणी आदि अपरमित (ग्रन्थों का) अनुवाद कर सम्पादित एवं निरूपित किया । अन्य, सूत्र-तन्त्र और अपरिमित उपदेशों का श्रवण किया । महाकारुणिक (आर्यावलोकितेश्वर) से सम्बन्धित बहुत से धर्म ग्रन्थों का अनुवाद किया । अमुक उपाध्याय से अमुक धर्म तथा अमुक पण्डित से अमुक धर्म ग्रहण किया इत्यादि का (विवरण) यहाँ पर शब्द बाहुल्य के भय से नहीं लिखा गया है ।

पूर्वी भारत में तो गुरु महालोचावा (रत्नभद्र) भदन्त ज्ञान सेन के नाम से प्रसिद्ध हुये । उसके बाद पूर्वी भारत से काश्मीर लौट आये । पण्डित श्रद्धाकर वर्मा के पास (पहले से रखी) पुस्तकों को लेकर

जितना उठा सकते थे (उठाकर) चल पड़े । (जो) नहीं उठा पाये उन्हें पण्डित श्रद्धाकर (वर्मा) के पास ही रख दिया । इससे पूर्व (पूर्वी) भारत एवं काश्मीर में (प्रवास के) दस वर्ष (पूर्ण) हो चुके थे । (वापसी में) काश्मीर से क्यु - वड (=अपने गाँव) तक जंघाचारिक (सिद्धि) द्वारा प्रस्थान कर (मात्र) छः दिन में पहुँचे ।

(घर पहुँचने पर उनके) पिता तो पहले ही देहान्त होने के कारण नहीं थे । “(मैं) पहले काश्मीर से लौटकर नहीं आया” ऐसा सोचकर उन्हें तीव्र पश्चात्ताप हुआ, ऐसा (लोचावा रत्नभद्र ने) कहा । (उसके बाद उन्होंने) पिता के हित के लिये दुर्गतिपरिशोधन के सात मण्डलों का निर्माण किया । वहाँ से पु-हड्स जाते समय एक गेशे (=कल्याण मित्र) वीरण (नामक) घास के अग्र भाग पर पर्यङ्कबद्ध बैठ मिले । (उसका) सभी श्रद्धा से सत्कार कर रहे थे । आश्चर्य पूर्वक गुरु लोचावा ने विचार किया, तो ‘पे-कर (नामक एक अमानुषी) की ऋद्धि है’ ऐसा जानकर (लोचावा रत्नभद्र) एक महीने तक गम्भीर साधना में बैठ गये । तत्पश्चात् उस के पास जाकर तर्जनी (मुद्रा) दिखाई तो वह उलट कर भूमि पर गिर पड़ा । उसके बाद (वहाँ के लोग) गुरु लोचावा के (प्रति) श्रद्धावान् हो गये । महागुरु ल्ह-ल्दे-बचन (= ल्ह-दे-चन) ने पण्डित प्रज्ञाकर, श्रीमित्र, पण्डित सुभाषित आदि अनेक शीलवान विद्वानों को (गुगे) आमन्त्रित कर विस्तृत, मध्य प्रज्ञापारमिता आदि का भोट भाषा में अनुवाद कराया । संक्षेपतः पचहत्तर पण्डितों से अनेक सद्धर्म (ग्रन्थों) का अनुवाद कराकर श्रवण किया ।

आठवाँ : (उसके बाद) महागुरु ल्ह-दे के (अनुरोध पर वे) मुख्य पुरोहित तथा वज्राचार्य बने और (उन्हें) पु-हड्स (नामक) स्थान भेंट किया । (उन) स्थानों एवं त्रिरत्न के सत्कार करने की विधि से पु हड्स के जेर से हो-पुलड-क (-होपुलडका) तक एक सौ आठ विहारों का निर्माण करना स्वीकार किया । तब महागुरु ल्ह-दे ने ख्व छर में (भी) विहार बनाने की प्रार्थना की । (उनके) गुगे जाने पर महागुरु ये-शेस होद (=ज्ञानप्रभ) ने (उनके साथ) म्थो-ल्दिड (थो

दिङ= थो-लिङ) के बारह उप द्वीप (के व्यूह वाले विहार) का निर्माण किया और मर-युल (=लोहित देश वर्तमान लद्दाख) में जर-म (=जरमा) का निर्माण किया । इन तीनों (विहारों) की नींव एक ही दिन में रखी । इस प्रकार से विहारों का निर्माण किया तथा बहुत से सद्धर्मों का अनुवाद किया जो अपिरिमित हैं ।

उस तरह गुरु महा लोचावा (रत्नभद्र) पु-हडस से आगे तक गये । कनिष्ठ अनुवादक (लो-छुङ) लेगस-पहि शेष-रब (=सु प्रज्ञ) ने स-स्वय (-स-क्या क्षेत्र) के-नीचे तक अनुवाद (कार्य) किया । (रत्नभद्र ने अपनी) माता की नीरोगता के लिये तथा आयु संवर्धन के अर्थ से अमितायु के सात मण्डलों का निर्माण किया । उसके पश्चात् माता की आयु में अट्ठारह वर्ष की वृद्धि हुई । तदुपरान्त पु-हडस का ख्व-छर, गुगे का थो-दिङ और मर-युल का जर-मा (सहित) तीनों विहारों का विस्तृत (प्राण) प्रतिष्ठान (एवं) उद्घाटन सम्पन्न किया । बाद में पु-हडस वालों ने कहा कि “गुरु महा लोचावा (रत्नभद्र) ने यहीं रहकर विहार निर्माण करके प्रतिष्ठान किया ।” गुगे वालों ने भी कहा कि “(महा लोचावा) यहीं रहें ।” मर-युल वालों ने कहा “कि यहीं रहें ।” (इस सम्बन्ध में जब) गुरु लोचावा (रत्नभद्र) को पूछने पर—“उन तीनों (जगह) पर मैं ही था । यह सच है ।” ऐसा कहा ।

इसके पश्चात् गुरु महाअनुवादक (रत्नभद्र) को महा-गुरु ज्ञानप्रभ ने निवेदन किया कि—“गुरु महा लोचावा ! काश्मीर में (आप के रखे उन) ग्रन्थों को लाने एवं कुशल देव-शिल्पकारों (को निमन्त्रित करने) के लिये कृपया (काश्मीर) प्रस्थान कीजियेगा ।” (ऐसा निवेदन करने पर महा लोचावा ने) जाना स्वीकार किया ।

तब गुरु बोधिसत्त्व (ज्ञानप्रभ) ने कहा—“गुरु महा अनुवादक को यदि घोड़े और हाथी भेंट किया जाये तो भारतीय संकरे मार्ग एवं पुल पर जा नहीं पायेंगे । स्वर्ण एवं चाँदी भेंट किया जाये तो, (भारत) बहुत दूर होने के कारण उठा नहीं पायेंगे । पन्द्रह मेधावी बाल-उपस्थापकों को विदाई उपहार के रूप में देता हूँ ।” तथा (साथ ही) अष्ट विध

(मूल्यवान) अस्थि (भी) भेंट किया । (उन्हें लेकर लोचावा रत्नभद्र) पुनः काश्मीर को चल दिये । गुरु महा लोचावा ने विचार किया कि—“मुझे बहुत से धर्मों का ज्ञान होकर (मैं) प्राणियों का यह (जो) हित कर रहा हूँ (वह) माता एवं पिता दोनों की कृपा है । अतः काश्मीर में (मुझे) पिता की स्मृति में एक प्रतिष्ठान विशेष का निर्माण करना चाहिये ।” ऐसा सोच करके (इस निमित्त वे अपने घर से) बीस औंस लगभग सोना (भी) लेकर चले ।

काश्मीर में (पहुँचने पर वहाँ) चन्दे के रूप में पीतल माँगने पर, बहुत पीतल प्राप्त किया । (एक) दक्ष मूर्तिकार भिधक नामक से (अपने) पिता के प्रतिनिधि रूप में महाकारुणिक (आर्यवलोकितेश्वर की प्रतिमा) पिता के काय परिमाण के बराबर बनवायी और गुरु श्रद्धाकर वर्मा से (प्राण) प्रतिष्ठान करवाया । (अपने) देश से लाये बीस औंस स्वर्ण में से पाँच औंस गुरु को उपहार भेंट किया । पाँच औंस स्वर्ण से (प्राण) प्रतिष्ठाप उत्सव मनाया । पाँच औंस सोना मूर्ति निर्माण की अत्यावश्यक वस्तुओं में गया (तथा) एक औंस सोना पारिश्रमिक देकर मूर्ति को काश्मीर से रथ द्वारा (स्वदेश) लाते समय महासङ्गला नामक पुल के संकरे मार्ग में मूर्ति का हाथ चट्टान से टकर जाने के कारण (मूर्ति की) अनामिका का अग्रभाग टूट गया ।

पहले (अपने) देश से आने के बाद से तेरह महीने में मूर्ति के साथ पुनः (स्व) देश पहुँचे । ‘क्यु-वङ्ग में पूज्य स्थान नहीं था’ इस विचार से मूर्ति को ख्व-चे गो-खर मे ले जा-कर साठ (भिक्षुओं के) संघ को भेंट किया । समय पर पूजन के साधन भी (जुटाकर) भेंट किया ।

गुरु (महा) लोचावा को (दूसरे बार की) काश्मीर यात्रा में शिष्यों के नेतृत्व करने तथा धर्म ग्रहण के समाप्त करने में छः वर्ष लगे । छः वर्ष बाद बत्तीस देव-शिल्पकारों के साथ (स्वदेश) आये । तब (वे) “महागुरु ज्ञानप्रभ से भेंट करता हूँ” सोचकर थो-दिङ् (=थो-लिङ्) गये । काश्मीर से बहुत पण्डितों को निमन्त्रित करने से (उन

सबके) एकत्रित होने पर महागुरु ज्ञानप्रभ ने कहा—“लोचावा रिन्छेन जडपो ! आप को (इन्हें) निमन्त्रित करने भेजा गया था, (वापस आने पर) आप का स्वागत है । अब यहाँ आप इस स्पड-ख्यु (=पड-ख्यु) के भिक्षु को लोचा (=अनुवाद कला के) शिक्षा में प्रवृत्त करें ।” ऐसा कहने पर उसे अनुवाद (कला) की शिक्षा दी । वह शब्द प्रमाण (=व्याकरण) में दक्ष हुआ और पड-ख्यु लोचा के नाम से प्रसिद्ध हुआ । उन दोनों गुरु शिष्य ने भी उन (काश्मीरी) पण्डितों के सहयोग से बहुत से धर्म (ग्रन्थों) का अनुवाद किया ।

तत्पश्चात् माँ की मृत्यु होने पर (रिन्छेन जडपो) व्यु-वड गये । (वहाँ) श्री दुर्गति परिशोधन के तीन मण्डलों का उद्घाटन किया । माँ के (हित) अर्थ में एक विहार का निर्माण कर (प्राण) प्रतिष्ठान एवं उत्सव मनाया । महागुरु ज्ञानप्रभ अस्वस्थ हो गये तो शीघ्र दर्शन करने गये पर गम्भीर रोग से पीड़ित होने (के कारण स्वर्ग सिधारने) से (उनका) दर्शन नहीं हो पाया । धातु पूजा और दुर्गति परिशोधन आदि (संस्कार) लोचावा (रत्नभद्र) ने स्वयं किया । दक्षिणा (के रूप) में महागुरु ल्ह-दे और महागुरु बोधिसत्त्व द्वारा (लोचावा रत्नभद्र को) इक्कीस छोटे गाँव (राजसी) भेंट में दिये । पूजा हेतु (यही) इक्कीस प्रतिष्ठान हैं । इन इक्कीस छोटे गावों में एक वर्ष के भीतर धारणी संग्रह की तीन-तीन प्रतियाँ (और) शतसाहस्रिका की सात-सात प्रतियाँ आदि काय, वाक् चित्त के अपरिमित प्रतीकों (=मूर्ति, ग्रन्थ और स्तूपों) की व्यवस्था की ।

नीवाँ : ख्व-चे गो-खर में मन्दिर की स्थापना का विवरण (इस प्रकार) है— पिता से सम्बद्ध तेरह भाईयों द्वारा तेरह मन्दिरों के निर्माण का निर्णय लिया और नींव एक ही दिन में रखने का (विचार) विमर्श किया परन्तु लोचावा रत्नभद्र ने सोचा कि “अपने लोचावा विहार की नींव पहले रखने पर बाद के सभी विहार बहुत स्थिर रहेंगे” इस विचार से महा लोचावा के विहार की नींव एक दिन पहले रखी गयी । अतः पिता (से सम्बद्ध) भाईयों को ईर्ष्या हुई और (उन) चचेरे भाईयों ने

(महा) लोचावा के विहार से ऊँचे विहार बनाये । तब सभी शिल्पकारों को बाँट कर अलग-अलग दिशाओं में विहार बनाया । (इन विहारों के) प्राण प्रतिष्ठान एवं उद्घाटन आदि सभी (संस्कार) गुरु महा लोचावा ने सम्पन्न किया ।

तब (अपना) जन्म स्थान होने के कारण क्यु-वङ्ग रद-नि में सुमेरु भर का एक विहार बनाने का चित्त में विचार किया तो कान्तार स्थित दुष्ट नागिन जल-ल-म-ति और उसकी तीन बहनों ने ईर्ष्या करके रद-नि में रहने वाले (जो) आठ स्थविर थे उन आठों को नाग रोग (=कुष्ठ रोग) से ग्रसित किया । (इससे रत्नभद्र ने) सर्दियों में ग्यम-शुग (नामक स्थान) में साधना करके वसन्त में क्यु-वङ्ग के तीन द्रोण बीज खपने वाले एक खेत में "श्री गुह्यसमाज" का मण्डल निर्माण किया । मध्य में एक बड़ा सा होम-कुण्ड चिनवाकर (उन जलमति प्रमुख चार बहनों को विनीत करने हेतु) हवन का आयोजन करने पर जलमति और (उसकी) तीनों बहनें प्रत्यक्ष आयीं तो गुरु महा अनुवादक ने (अपने शिष्यों से) कहा—"उपस्थापकों ! एक क्षणभर के लिये मृदंग (आदि पूजन के वाद्य यन्त्र) मत बजाओ (और अपने-अपने) आसन पर बैठे रहो" कह कर महा अनुवादक एक ऊपरी खेत में गये (वहाँ) प्राणहृदय अर्पण कर (तीनों बहनों सहित जलमति को) प्रतिज्ञा में आबद्ध किया ।

विशेषतः जलमति के सामने के बाल काटे (जिनकी लम्बाई) दो व्याम थी । उनसे गेंडा के चर्म से निर्मित छोटी-बड़ी तीन पेटियाँ भर गईं, उन्हें (लोचावा ने) रद-नि के विहार के नीचे निधि के रूप में रख दिया । प्राण हृदय अर्पण कर उसका गुह्य नाम नम-मुखह द्वि-मेद-म (-नम-खा डि -मेद-मा =गगन निर्मला) ऐसा रखा गया, (और उसे) रद-नि के पद्म-र्म-ब्युङ्ग (-पद्म-मद-जुङ्ग =पद्माश्चर्य नामक) विहार की रक्षिका नियुक्त कर (उसकी) सम्पूर्ण साधना विधि की रचना की तथा विहार में भी गुह्यसमाज के देवगणों का निर्माण किया ।

(उसके बाद) चार जलमति बहनों में से (सबसे बड़ी) लो-दड-म स्मन-हब्रोग-मो (-लो-दड-मा मन-डोग-मो) को ख्व-चे जर-न-म आदि ख्व-चे के मन्दिरों की रक्षिका नियुक्त किया । उससे छोटी बचन-हब्रोग-मो द्रो-मुर-म (= चन-डोग-मो डो-मुर-मा) को र-लड-खड-दमर (=ग्यु-लड-खड-मर नामक विहार) की रक्षिका (के रूप में) नियुक्त किया । उससे छोटी (तीसरी) ब्दुद-हब्रोग-मो स्रोग-मुर-म (-दुद-डोग-मो स्रोग-मुरमा) को सुम-नम ल्ह-खड (मन्दिर) की रक्षिका नियुक्त किया । नाग हब्रोग-मो स्मन-ज-ल-म-ति (=डोग-मो मन जलमति) तो चार बहनों में सबसे छोटी थी ।

उपासक र-स्लग-चन (-र-लग-चन नामक एक अमानुषी) को शपथ में आबद्ध कर उसे कार्यकर्ता बनाया और रोड-छुड क्षेत्र के सभी मन्दिरों का धन-रक्षक नियुक्त किया । यही विनायक नामक विघ्नराज है । इसे र-स्लग चन (=र-लग-चन) भी कहते हैं, पे-कर, द्रो (=डो) तथा ल्वगस-वेर (=चगस-वेर) यह सब उस के नाम पर्याय ही हैं । (महा लोचावा ने) जल-चे म-ल (=जल-चे मा-ला), दो-जे-द्र-व-म (=दोर्जे-डावामा), ग्लोग-हग्युर-म (=लोग-ग्युर-मा) और र-लग-चन (इन) चार प्रमुख परिवारों से परिवृत्त के लिये शम साधना विधि की रचना की । श्वेत-पीला (=पाँडुर) वर्ण के काय वाली नागिन (जो) मार वधू के परिवार से परिवृत्त होती है, के लिये चंड साधना विधि की रचना की ।

रद-नि पद्म-मद्-जुड (=रद-नि पद्माश्चर्य नामक) विहार में काय, वाक्, चित्त के प्रतीक तथा पूजोपकरणों की (अपरिमित) संख्या में विशेषताः— हाथी दाँत से निर्मित महाकरुणिक (आर्यावलोकितेश्वर) की अंजलिभर की प्रतिमा (जिसे) देखने पर (कभी) तृप्ति नहीं होती भी रखी गयी है । (दूसरी) बोधि-वृक्ष (की लकड़ी) से निर्मित श्रीहेवज्र की एक अद्भुत प्रतिमा भी विराजित है । तीसरी भारत के (किसी) वृक्ष (विशेष) की छाल पर भारतीय लिपि में लिखित श्री-गुह्यसमाज की एक पोथी भी रखी गयी है । इन तीन (वस्तुओं) को (इस) विहार से

हिलाकर बाहर निकालें तो उस व्यक्ति का बुरा (=अनिष्ट) होगा । अन्य ताम्बे की मूर्तियाँ और पीतल की मूर्तियाँ आदि सब प्रतिमाओं को मिलाकर कुल उनचास (नग) हैं । विहार में रखे गये पोथियों की संख्या में— सम्पूर्ण त्रिपिटक, मध्य एवं विस्तृत पूर्ण प्रज्ञापारमिता, अट्टारह युम-स्सस (=प्रज्ञापारमिता मातृक-पुत्र) के साथ अष्टादशसाहस्रिका (प्रज्ञापारमिता) की दो प्रतियाँ और अष्टसाहस्रिका (की) पाँच (प्रतियाँ) हैं । संक्षेपतः कुल मिलाकर चार सौ अड़सठ (=468) पोथियाँ विद्यमान हैं ।

पूजोपकरणों में— पाँच छ-लङ (=कंसताल), तीन ह्बुद-दुङ (=बुद-दुङ=बजाने वाले शंख), दो जोड़ी ताम्रशंख (अथवा तुरही), चार सेट ब्दुन-छर (=अर्घ्य आदि सप्त पूजा के प्यालानुमा पात्र), उभरी चित्रकलाओं से युक्त चार बड़ी और दो छोटी बलि परात, बिना उभरी चित्रकला की दो परात, 68-पा क्रि-चै (=प-टि-चे), तीन ज-गो (-ज-गो), 22 रिल-प (=मेखला); पाँच ज़डस-स्लङ (-ज़डस-लङ=ताम्र तसला), सात छगस-म (=छलनी), उभराचित्र वाला फग-स्ब्रोम (=फग-डोम) दो, पाँच दुङ छोस, ज़डस-छोस (=विशेष ताम्र पात्र) दो, ब्से (-से=गेंड़े के खाल की बनी) पेटिका दो, दो खर-फोर (=काष्ठ पात्र), पच्चीस (नग) प-तेप, सात एन-छे-व (=बड़े कड़छुल), उभरे चित्र वाला एन-छे-व (=कड़छुल) एक, तीन खर-पइ मण्डल (=काष्ठ मण्डल), दो जोड़ी घण्टी तथा एक बड़ा पीतल से निर्मित उभरा चित्र वाला ब्स्नुड-मइ ब्जेस-स्वयोग (=स्नुड-मइ=रक्षिका के जेस-व्योग) ये सब रद-निस के पद्म-मद-जुङ (=पद्माश्चर्य नामक) विहार में विद्यमान हैं ।

कनिष्ठ अनुवादक स्तोत्र-प लेगस-पइ शेस-रब (=सुप्रज्ञा) द्वारा लोचावा के विहार में भेंट किये पूजोपकरणों की संख्या में— चौदह पोथियाँ, तीन छ-लङ (=कंसताल), एक जोड़ी ताम्बे की तुरही, दो कमण्डलु, एक पूर्ण दुन-छर, जबस-स्तेगस वाली पीतल की परात एक,

पीतल का एक दीपदान पात्र (इत्यादि) हैं । इन पूजोपकरणों को भेंट कर (विहार की) भरपूर सेवा की ।

विशेषतः महान् लोचावा बाद में पुनः काश्मीर जाते समय गुरुदेव ज्ञानप्रभ द्वारा महालोचावा को पाँच मेधावी बालक, पाँच सेवक तथा पाँच विश्वास पात्रों के साथ (कुल) पन्द्रह परिचारक विदाई उपहार (के रूप) में साथ भेजे तथा अष्ट विध मूल्यवान् अस्थि भेंट की ।

उस समय कनिष्ठ अनुवादक लेंगस-पहि शेष-रब (=सुप्रज्ञा) बहुत निकट के होने पर बहुत भरोसे मन्द थे । अतः शरीर एवं वाणी से सेवा करने तथा प्राण संकट में सहयोग देने की कृतज्ञता प्रकट करने में चोग-रो (नामक स्थान, जी) गुगे के कु-शु से ऊपर कटा, नीचे ति-म-ल (=तिमला) के ग्सुम-ख-दर (=सुम-खा-दर) के जलप्रपात से कटा, पूर्व (की सीमा) ते-थङ (नामक) मैदान से कटा, दक्षिण में बर्फीले पहाड़ों से कटा, पश्चिम (दिशा) में स्ङ-म-म्योङ (=ङ-मा-जोङ) से कटा, उत्तर (दिशा) ग्चङ-पो (=चङ-पो) से कटा गाँव, उत्तम खेत एवं चरान सहित गुरुदेव (ज्ञानप्रभ) ने मे-द्वोन (=मे-ओन=पितामह से लेकर पौत्र तक के) राजकीय मुहर लगाकर लोचावा (रत्नभद्र) के हस्ताक्षर युक्त कनिष्ठ अनुवादक लेगस-पइ शेष-रब को दिया गया, ताकि छोटे बड़े किसी निकाय का कर नहीं लगे, आदेश लागू नहीं हो और न ही उलंघन किया जाये ।

पाँच मेधवी बालकों में से दो की (भारतीय) गर्मी के कारण मृत्यु हो गयी । तीन में मङ-वेर के लोचावा ब्यङ-छुब शेष-रब (=जङ-छुब शेष-रब=बोधिप्रज्ञा), र्म (=म) के लोचावा दगे-ब्लो (=गे-लो=कुशलमति) और हजङ (=जङ) लोचावा रिन-छेन ग्जोन-नु (=रिन-छेन जोन-नु=रत्नकुमार) हैं । ये तीनों महा लोचावा (रत्नभद्र) के वरिष्ठ पुत्र (=प्रिय शिष्य) हैं ।

अतः मङ-वेर लोचावा (=अनुवादक) बोधिप्रज्ञा को ति-वग, म-लोचावा कुशलमति को रि-खि (=रि-ठि) तथा जङ-लोचावा

रत्नकुमार को छद-मेद (का क्षेत्र) प्रदान किया (जो) नीचे मड-क्रि (=मड-टि) के घासनी से कटा है, शिड हगस से ऊपरी छोर कटा है, सामने चट्टान के कोने से कटा घाटी के चरागाह और पहाड़ सहित प्रदान किया । रद-नि की रक्षिका को पूजन की सुविधा के लिये आटा आधा खल, रूमा (=अनाज विशेष) एक खल, मक्खन एक द्रोण भर तथा क्यड (=क्यड नामक तिब्बत का जंगली गदहा) का एक हाथ (=सामने की टाँग) भेंट करना होता है । महा लोचावा (रत्नभद्र) के वंशज तथा प्रजा को सदा आवागमन की सुविधा देनी होगी ।

और भी, (इसके अतिरिक्त महालोचावा ने) इक्कीस छोटे स्थानों में पूजा किया (जिनके नाम हैं)—

- | | |
|------------------------|---|
| (१) जेर-पा, पु-हडस का | (११) ग्यु-लड (=ग्यु-लड) |
| (२) गो-खर (ख-चे में) | (१२) रो-पग (किन्नौर में) |
| (३) पुर-खर (ख-चे में) | (१३) चोग-रो |
| (४) बो-रि | (१४) रि-खि (=रि-ठि) |
| (५) ग्यड-सुर (=यड-गुर) | (१५) हड-त्रड (सम्भवतः किन्नौर का हड रड) |
| (६) ति-याग | (१६) ल-रि (स्पिति में) |
| (७) छद-मेद | (१७) र्त-फो (=वर्तमान ताबो, स्पिति में) |
| (८) स्नेहु (=नेहु) | (१८) शडस (वर्तमान ठंगी, किन्नौर में) |
| (९) जे-वड | (१९) च-रड (=च-रड, रड रिग चें किन्नौर में) |
| (१०) जो-लिड | (२०) द्रिल-छुड (=डिल-छुड) । |

इन छोटे स्थानों में एक-एक विहार बनाये गये हैं और प्रत्येक में सम्पूर्ण पूजोपकरण विद्यमान हैं । संक्षेपतः पु-हडस के ख-छर से जेर तक नीचे और हो-पु लड-क (=होपुलड का) से ऊपर तक (महालोचावा रत्नभद्र ने कुल) एक सौ आठ विहारों का निर्माण किया । (इन में से) एक सौ सात विहारों को बनाने के बाद अन्त में द्रिल-छुड (=डिल-छुड) नामक स्थान पर द्रोण भर का (सबसे छोटा)

विहार बनाने के साथ (विहारों की) एक सौ आठ (की संख्या) पूर्ण हो गयी । इस तरह (विहार निर्माण की) गणना का अन्त भी उसी के साथ पूर्ण हो गया ।

अन्य भी, सीमा क्षेत्रों के विनयेजनों के लिये विहारों में—ल्हो (=दक्षिण) का दे-गर, दपग (=पग) द्रुग-फग (=डुगफग) का मोन, ड-रा का कनम (=कानम) रोड:-छुड का स्पु (=पु=पुह) ये (प्रमुख) हैं । संक्षेप में रोड-छुड के बने सभी विहार भी गुरु महालोचावा (रत्नभद्र) द्वारा निर्मित हैं । वे (महा अनुवादक) प्रतिदिन दस धर्मचर्या निरन्तर करते थे । (उनके द्वारा) निर्मित स्तूपों (की संख्या) तो अपरिमित हैं ।

इस तरह के उस महापुरुष (रत्नभद्र) ने हो-पु से जलसर्प पकड़कर गेंडे की खाल से निर्मित एक पेटी में डालकर (अपने) उपस्थापक (=शिष्य) को समझाया कि—“क्यु-वड के ऊपरी भाग में जब तक नहीं पहुँचे (इसका) ढक्कन मत खोलना” ऐसा कहकर भेज दिया । उपस्थापक ने सुमनम (वर्तमान सुन्नम) के द्र-ति (=डति नामक स्थान) पर (पहुँचकर) ढक्कन खोला तो एक बड़ा नीला जलसर्प निकल भागा और वहीं पर पानी निकल आया ।

पुनः पकड़ कर कहा कि —“कल की भाँति नहीं करके क्यु-वड के ऊपरी भाग में नहीं पहुँचने तक इसका ढक्कन मत खोलना” ऐसा कहकर पुनः भेज दिया । परन्तु नाग द्वारा (उन उपस्थापकों) का मन परिवर्तन किया और स्पु (=पु वर्तमान पुह) के तुग-थड में (पुनः सन्दूक का) ढक्कन खोलने पर वहाँ (सर्प पुनः) छूट गये । (तब) गुरु महा अनुवादक के मुहँ से— हे पुत्रो ! अब हम लोग दो बार सफल नहीं हुये । अतः (क्यु-वड के) प्राणियों के भाग्य में भी यह सिद्ध नहीं है । (यदि) एक भी (जलसर्प) नहीं छूटे (वहाँ पहुँचते) तो (भविष्य में वहाँ) सौ घरानों वाला एक गाँव बस जाता । अब (वहाँ) अकाल, कठिन जीविका तथा सूखे गाँव के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा, ऐसा कहा ।

दसवाँ : विशिष्ट साधना करना— सामान्यतः पु-हडस के जेर से नीचे होपु-लडका तक (महा लोचावा रत्नभद्र ने) अनगिनत साधनाएं की हैं । विशेषकर ग्यम-शुग (नामक स्थान) में बहुत (समय तक) रहे । ग्यम-शुग में रहते समय अपने उपस्थापकों को भेजकर पु-हडस के ख्व-छर से खाद्य सामग्री लेते थे । (वह शिष्य) रात खुलते ही (ग्यम-शुग से) चलकर (ख्व-छर से खाद्य सामग्री लेकर पुनः) विहार में सब्जी उबलते तक पहुँच जाते थे, ऐसा कहा जाता है ।

ऐसा करते हुए (वे) 87 वर्ष (की अवस्था) में पहुँचे थे तब जो-वो ल्ह-ग्चिग (=जो-वो ल्ह-चिग=अतिशा दीपंकरश्रीज्ञान) को (गुगे के राजा ने) राजमहल में आमन्त्रित किया और (अतिशा) म-नम में निवास करते समय गुरु महालोचावा ने विचार किया कि—“इन भट्टारक (अतिशा) से मेरा प्रत्यक्ष परिचय नहीं है पर वे भारत के एक सिद्ध एवं महान् व्यक्ति हैं । मैं भी महालोचावा (जो) भोट देश का एक महान् व्यक्ति हूँ । इसलिये उनके आदर-सत्कार तथा स्वागत करने का भार मुझ पर आता है ।” ऐसा सोचकर अपने पूजा करने के स्क्वियन-रि-ग्लिड (=क्वियन-रि-लिड) नामक स्थान पर भट्टारक (अतिशा) को आमन्त्रित कर व्यापक आदर-सत्कार किया ।

उस समय भट्टारक अतिशा ने कहा—“ हे महालोचावा ! आप इन-इन धर्मों के ज्ञाता हैं ? आप (अमुक) इसे जानते हैं ?” इस प्रकार से बुद्ध वचन के तीनों पिटक प्रमुख-सूत्र एवं तन्त्र सभी के प्रश्न पूछे जाने पर (महा) लोचावा के—“यह भी जानता हूँ, यह भी जानता हूँ जी ।” ऐसा निवेदन करने पर—“तो मेरे यहाँ आने की आवश्यकता नहीं थी ।” अतिशा ने ऐसा कहा ।

वे रात को (जहाँ) सोये थे वह एक तीन मंजिला विहार था (जिसके) निचले कक्ष में गुह्यसमाज के देवगण निर्मित थे, बीच के कक्ष में हेवन्न के देवगण तथा ऊपरी कक्ष में चक्रसंवर के देवगण बनाये गये थे । लोचावा (रत्नभद्र) ने रात्रि (के प्रथम पहर) में निचले कक्ष में

साधना की, मध्यरात्रि में बीच (के कक्ष) में तथा उषा (काल) में ऊपरी कक्ष में साधना की ।

अगली सुबह भोजन करते समय भट्टारक अतिशा ने पूछा—“हे महालोचावा ! कल रात्रि के प्रथम पहर में विहार के निचले कक्ष में, मध्यरात्रि बीच के कक्ष में और भोर में ऊपरी कक्ष में साधना क्यों की ?” (इस पर) महालोचावा ने निवेदन किया कि— इस तरह पृथक्-पृथक् देवों के पृथक्-पृथक् उत्पन्न एवं निष्पन्न (क्रम पूर्ति करने) के लिये किया ।” (तो) भट्टारक (अतिशा) ने चेहरे का रंग थोड़ा काला (=परिवर्तन) करके कहा कि— “मेरे आने की आवश्यकता थी ।” तब महालोचावा ने पूछा—“अच्छा तो आप की मान्यता क्या है? भट्टारक (अतिशा) ने कहा—“मैं ऐसा नहीं समझता हूँ । सर्वधर्म विनेयजनों के आशय के अनुसार (अलग-अलग) बहुत से चरित होने पर भी मूलतः अनेक के एक ही रस होता है । सभी उत्पन्न-निष्पन्न (क्रम) का अनुष्ठान एक ही आसन पर कर सकते हैं ।”

ऐसा कहने पर गुरु लोचावा ने विशाल गणचक्र सजा कर बारह औंश स्वर्ण मुद्रा, तीस खल मटर (आदि) अन्य (और) भी बहुत से सम्पत्ति अर्पित कर (जो-वो अतिशा से) धर्म एवं अववाद निवेदन किया, जिनमें— सहज चक्रसंवर, अभिधर-तारा और अतिशा विधि का महाकारुणिक (आर्य अवलोकितेश्वर)— इन तीनों का अभिषेक, परिचय तथा अशेष उपदेश प्रदान किया । इन की साधना करने पर (इन) तीनों देवों का (महालोचावा को) साक्षात् दर्शन हुआ । निष्प्रपञ्च के अर्थ का बोध हुआ और अपरिमति विशिष्ट रस उत्पन्न होने पर गुरु लोचावा (रत्न भद्र) भट्टारक (अतिशा) के उन उपदेशों से बड़े आश्चस्त हुये और उन्हें बड़े मूल्यवान समझकर आदर सम्मान करने लगे ।

तत्पश्चात् पु-हृड्स के जेरमें भट्टारक (अतिशा) से (महालोचावा ने) भेंट की । जो-वो (अतिशा) ने कहा—“महालोचावा ! आप अनुवाद कला में दक्ष होने से विख्यात हो गये हैं । मुझे अनुवादक की आवश्यकता है अब (यह कार्य) आप करें ।”

लोचावा (रत्नभद्र) ने निवेदन किया—“गुरु जी ! मेरी अपनी आयु 88 वर्ष की हो चुकी है । मेरे केश भी इस तरह सफेद हो चुके हैं । मेरी जिह्वा स्पष्ट न होने से धर्म के शब्दों का ठच्चारण अशुद्ध होगा । (अतः आप मुझे) इस तरह मत कहिये । ऐसा निवेदन करने पर महा भट्टारक (अतिशा) ने कहा— मेरे पास चिन्तन के लिये हृदय (=सामर्थ्य) है पर बोलने के लिये जुबान नहीं है । ऐसा कहते हुये खिन्नता व्यक्त की । तत्पश्चात् नग-लोचावा छुल-खिमस ग्यल-व (=छल-ठिमस ग्यल-वा=जिनशील) ने (अतिशा के) अनुवादक का कार्य किया ।

पुनः भट्टारक (अतिशा) ने कहा—“महालोचावा रत्नभद्र ! आप बहुत से धर्मों को जानते हैं । चित्त के स्वभाव को पहचान पाने वाले गुरुओं से (आपकी) भेंट हुई है । आजीविका के लिये सम्पत्ति भी है । अब साधना में जुट जायें ।

उसके बाद पु-हडस के जेर (नामक) विहार में क्रमशः तीन मुद्रा अंकित प्रतिज्ञा इस प्रकार की—“बाहरी द्वार पर शंख के अक्षरों में लिख दिया कि—“मुझे अगले वर्ष के इस समय तक क्षणभर भी क्लेश चित्त उत्पन्न हुआ तो डाकिनियाँ (मुझे) दण्डित करें ।” उसके भीतरी क्रम में रजत अक्षरों में लिख दिया कि—“अगले वर्ष के इस समय तक मैं (यदि) क्षण भर भी बोधिचित्त से वियोग हुआ तो डाकिनियाँ मुझे दण्डित करें” । विहार के भीतरी भाग में स्वर्णाक्षरों से—“अगले वर्ष के इस समय तक क्षणभर के लिये भी मुझमें अव्याकृत चित्त उत्पन्न हुआ तो (मुझे) डाकिनियाँ दण्डित करें”— ऐसा लिख दिया । इस प्रकार क्रमशः तीन मुद्रांकितों में एक से एक कठोर प्रतिज्ञा लिख कर साधना में एकाग्र हो गये । तीनों प्रतिज्ञायें पूर्ण हुईं तो (उन्हें) निष्प्रपञ्च धर्मकाय (विषयक) वज्रोपम समाधि की प्राप्ति हुई । इत्यादि इस तरह की अन्य बहुत से विशिष्ट स्थानों पर अनेक साधनायें की ।

इस प्रकार के इस विशिष्ट पुरुषोत्तम के जन्म के समय माँ के दायें कन्धे पर मोर उतरने का अर्थ था— उनका शरीर अपरिमित सुन्दर

होना । बायें कन्धे पर कोयल का उतरना—धर्मवाणी के (अत्यन्त) मृदुस्वर होने का अर्थ रखता था । शीश पर तोता उतरने से— भोट-भारतीय भाषा में (महान्) अनुवादक होने का अर्थ था । जंघाचारिक (=द्रुतगति) चिन्तामणि सिद्धि की प्राप्ति से महालोचावा तीन-तीन महीने की देरी लगने वाले भोट-काश्मीर यात्रा को उधर (जाने) में मात्र छः दिन और इधर (आने) में मात्र छः दिन में पूर्ण करते थे; ऐसा कहा जाता है ।

ग्यारहवाँ : खेचर प्रस्थान कैसे किया :— कुछ लोग—“होम-लो (नामक स्थान) के छु-मिग ल्ह-र्जिङ (=छु-मिग ल्ह-जिङ-देवताल स्रोत) की शिला के ऊपर से खेचर को प्रस्थान किया” ऐसा कहते हैं । वहाँ पर तो एक वर्ष साधना की, न कि (वहाँ से) खेचर को प्रस्थान किया । ख्व-चे के रे-विङ-गो (नामक स्थान) से (भोट पंचाङ्ग के अनुसार लुग-लो) मेङ-वर्ष में 98 वर्ष की आयु के होने पर शरद के अन्तिम मास के 17 वीं तिथि को अश्विनी नक्षत्र (के योग) में (महालोचावा रत्नभद्र ने) परार्थ के लिये खेचर को प्रस्थान किया (वैसे साधारण जनों की दृष्टि में उन्होंने) पु-हड्स के होम-लो (नामक) गुफा, शिङ-वङ के ग्यङ-सुर (=यङ-गुर नामक) गुफा तथा ख्व-चे गो-खर के रे-विङ-गो से खेचर को प्रस्थान करने का भिन्न-भिन्न प्रदर्शन दिखाया ।

तत्पश्चात् (उनके) क-व-जि (=कावा-जी=स्तम्भ स्तृश चार) और मृदुङ-बर्ग्यद (-दुङ-ग्यद=भीम समान आठ) शिष्यों ने पूजा का आयोजन किया । भिक्षु संघ और शिष्य-पुत्रों ने (काय) धातु का दाह संस्कार किया । (यूँ तो) काय धातु का मात्र तिल भर भी अवशिष्ट प्राप्त नहीं हुआ, फिर भी, लोक प्रवृत्ति की अनुरूपता मात्र के लिये रत्ती फल के बराबर अत्यन्त लाल (रंग के) तीन रिङ-बुस्तेल (=रिङ-स्तेल=अस्ति धातु) प्राप्त होने पर भी आकाश से मेघ गर्जन के समान झबताल (=वाद्य यन्त्रों) की विविध ध्वनियों के घोष के साथ (वे अस्थियाँ भी) खेचर को प्रस्थान हो (उड़) गये ।

उसके बाद लगभग एक महीने तक सद्-धर्म में श्रद्धा रखने वाले तथा प्रतिज्ञा में आबद्ध अमानुषियों द्वारा प्रत्येक रात्रि काय धातु के दाह (संस्कार करने) वाली जगह से विलाप करने की अनेक आवाजें आने लगीं । तत्पश्चात् एक दिन अश्विनी नक्षत्र के योग में 15 वीं तिथि को पूर्णिमा के दिन काय धातु के दाह संस्कार करने वाले स्थान पर इन्द्रधनुष के साथ फूलों की भारी वर्षा हुई । उसके बाद अमानुषियों के शोक विलाप की आवाज भी बन्द हो गयी । (इस लक्षण का) कारण भट्टारक अतिशा से पूछा गया तो (उन्होंने) कहा कि—“बोधिसत्त्व महा-अनुवादक (रत्नभद्र) ने करुणा भाव से प्रेत-राक्षस (आदि) अमानुषियों को आकाश धातु से अनित्यता की धर्म देशना कर उन्हें धर्म में प्रवृत्त किया तथा उसके पश्चात् वे शोक निवृत्त हो गये । इस समय महा-लोचावा पश्चिम के सुखावती (नामक) बुद्ध क्षेत्र में सुवर्णप्रभा (नामक) डाकिनी द्वारा आमन्त्रित कर वहां भगवन अमिताभ के चरणों में बैठे हुये हैं”— कहते हुये (अतिशा ने) हाथ जड़ा ।

इस प्रकार के यह महापुरुष तो शाक्यमुनि बुद्ध के निर्मितक हैं, न कि (कोई) सिद्धि लब्ध पुद्गल (=पुरुष) । उसके (धार्मिक) धन सम्पत्ति का हरण करने वाले का अमङ्गल होगा और अन्त में (उसका) वंश भी उच्छिन्न होगा । अतः इस में अत्यन्त सवधानी बर्तने की आवश्यकता है । काय, वाक्, चित्त के प्रतीक (=मूर्ति, ग्रन्थ, स्तूप) एवं पूजा (उपकरण) तथा धन सम्पत्ति को गाँव के पदाधिकारियों द्वारा रक्षा किया जाये । इस छोटे क्षेत्र का पालन करें । विहार, धन और पुजोपकरणों की रक्षा करें ।

गुगे (ग्रान्त) के खिच-थड (निवासी) ज्ञानश्री द्वारा लिपिबद्ध बोधिसत्त्व लोचावा रत्नभद्र का जातक द्कह-स्प्यद सोम-म (-कह-चद डोन-मा=तपः प्रदीप) जीवनी शेल-फ्रेड लु-गु ग्युद (-शेल-ठेड लु-गु-ग्युद=स्फटिक रत्नमात्ता) नामक यह समाप्त हुआ ।

मुनिशासन धर्मरत्न के निधि धारण कर,
दसों दिशाओं में सुकृत्यों की प्रभा फैलाने वाले

उस जिन=पुत्र को मैं (=ज्ञानश्री) सादर अंजलिबन्ध होकर
सभी जन्मों में (उनके) चरण/कमलों में पूजा करने वाला बनूँ ।

(लेखक ज्ञानश्री की परिणामना)

गुगे के खिग्र-थङ निवासी दपल-ये-शेस (=पल-ये-शेस=ज्ञानश्री) द्वारा मथो-ल्दिङ (=थो-दिङ=थो-लिङ) में लिखा (यह) मध्यम् जीवनी है (महालोचावा रत्नभद्र को अमुक) इस उपाध्याय और इस पण्डित ने (अमुक) यह धर्म प्रदान किया तथा (उनका) धर्म निधि, धननिधि और काष्ठ-अंश निधि (आदि) का सूक्ष्म निधि (=विवरण) वृहद् जीवनी में स्पष्ट किया गया है ।

क=वा-जि (=स्तम्भ समान चार शिष्यों) में:— ख्व-चे निवासी रिन-छेन शेस-रब (=रत्नप्रज्ञा), स्वयेन-वेर (=क्येन-वेर) निवासी शेस-रब हर्म-पा (=सद्-प्रज्ञा), खिग्र-थङ निवासी ये-शेस-दपल (=ये-शेस=पल=ज्ञानश्री) और दोल-पो निवासी ब्यङ-छुब स्विङ-पो (=जङ-छुब स्विङ-पो=बोधि गर्भ) हैं ।

दुङ-मा-ग्यद (=भीम सदृश आठ शिष्यों) में:— व-ज्ञान निवासी योन-तन लेगस-पा (=सुगुण), स्नु-बु (=नु-बु) लोचावा बजङ-मछोग (=जङ-छोग=भद्रोत्तम), गुर-शिङ निवासी बर्चोन-ह्युस ग्यल-मछन (=चोन-हुस ग्यल-छन=वीर्यध्वज), म-नम निवासी छुल-खिमस स्विङ पो (=छल-ठिमस जिङ-पो=शीलगर्भ), दगे-थङ (=गे-थङ) निवासी दपल-गिय ब्यङ-छुब (=पल-गिय जङ छुब=श्रीबोधि), सस निवासी ग्सेर-बजङ (सेर-जङ=स्वर्णभद्र), व-गो निवासी योन-तन शेस-रब (=गुप्त प्रज्ञा) और सेद-दकर (=सेद-कर) निवासी बसोद-नमस शेस-रब (=सोद-नमस शेस-रब=पुण्य प्रज्ञा) हैं ।

सर्व मङ्गलम् ।

शुभमास्तु ।

पञ्चमः

परिशिष्ट

पं. १५४। परिशिष्ट

बगल. २६५२।
कह-गुर (त्रिपिटक) बकान गोर

[illegible]

1. **पेश-प्रीति। प्रज्ञापरमिता प्रजिद्विप्रेरणादि**

[illegible]

2. सूत्रवर्ग, Sūtra Varga

2	འཕགས་པོར་སྐུངས་མཉན་ལས་འདས་པའི་ཡི་ཨོ། आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र <i>Ārya-mahāparinirvāṇasūtra</i>	བ १५७ ཁྱ - १५८ ག ཅ १५९ ར- १६२ ང Thaa.. 151a'-152 b'	དྲི ३३० ཌོ १२१ Toh. 121	ཀམལ་གཏུག་དང་ཟིན་ཆེན་བཟང་ཤོ कमलगुप्त एवं रिन्चेन जङ्गो Kamlagupta, Rin-chen bzang-po
3	འཕགས་པ་བདག་མེད་པ་རྒྱུས་པའི་སྐུ་པའི་ཚེན་པའི་ཡི་ཨོ། आर्यनात्थपरिवृच्छा-नाम-महायान-सूत्र <i>Ārya-Nairātmyapariroccha-nāma-mahāyāna-sūtra</i>	མ ५ པ' - ५ བ' མ ५ ང- ७ ང M.. 56'.7 b'	དྲི १०३ ཌོ १७३ Toh. 173	ཀམལ་གཏུག་དང་ཟིན་ཆེན་བཟང་ཤོ कमलगुप्त एवं रिन्चेन जङ्गो Kamlagupta, Riñ-chen bzang-pö
4	གཞུང་ཡི་ཨོ། गण्डिसूत्र <i>Gaṇḍisūtra</i>	པ ३०१ པ' - ३०३ པ' ཅ ३०१ ང- ३०३ ང Śā.. 301b2-303b4	དྲི ३०४ ཌོ २९८ Toh. 298	ཙམ་མཛུགས་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་ཡོན་ཏན་ ཁྱེད་ཀྱི་ཟིན་ཆེན་བཟང་ཤོ धर्मश्रीभद्र एवं कुलटिम योनतन संशोध:- रिन्चेन जङ्गो Dharmaśrībhadra, Tshul-khrims yontan R. Rin-chen bzang-po
5	མཛེན་པ་འཇུག་པའི་ཡི་ཨོ། अभिष्क्रमणसूत्र <i>Abhiṣkramaṇa-sūtra</i>	ས १ པ' - १३५ པ' ཅ. १ ང- १२५ ང Sa.. 1b¹-125 a'	དྲི ३०१ ཌོ ३०१ Toh. 301	ཙམ་མཛུགས་དང་ཟིན་ཆེན་བཟང་ཤོ धर्मश्रीभद्र एवं रिन्चेन जङ्गो Dharmaśrībhadra, Rin-chen bzang-po

22	पुद्गलपञ्चमस्यपरिवर्तनपरिच्छेदस्यपञ्चमः विशेषस्तवः नाम टीका Viśeṣastava-nāma-ṭīkā	ग ५ ग ^१ - ८३ प ^५ क. ५क-४२ख Ka. 5a-42b ⁵	पौ १११० तो० १११० Toh.1110	हृत्स्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तः जनादन एवं रिन्तेन खड्यो Janārdana, Rin-chen bzah-po
23	सर्वज्ञाहेश्वरस्तोत्र नाम Sarvajñāmahēśvarastotra-nāma	ग ८३ प ^५ ८३ प ^३ क. ४२ख-४३ख Ka. 42b ⁵ -43b ³	पौ ११११ तो० ११११ Toh.1111	हृत्स्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तः जनादन एवं रिन्तेन खड्यो Janārdana, Rin-chen bzah-po
24	देवातिशयस्तोत्रटीका Devātīśayastotra-ṭīkā	ग ८५ ग ^३ - ४७ ग ^३ क. ४३क-४३क Ka. 45a ³ -61a ³	पौ १११३ तो० १११३ Toh.1113	हृत्स्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तःस्वर्गदन्तः जनादन एवं रिन्तेन खड्यो Janārdana, Rin-chen bzah-po

29	མངས་ཆུས་དང་པོ་བསྐྱར་པའི་སྒྲུབ་པའི་བརྒྱུད་པ། बुद्धाभिषेकनामस्तोत्र Buddhābhiṣeka-nāma-stotra	ཀ १३० ཀ ^१ -१३१ ཀ ^३ ཀ. २३०ཀ-२३१ཀ Ka. 230a ¹ -231a ²	དྲིལ ११५ ཏོ ११६१ Toh.1161	འིན་ཚུན་བཟང་པོ rin-chen bzah-po
30	དེ་བཞིན་པའི་སྐུ་སྒྲུབ་པའི་བརྒྱུད་པ། पद्मकारवर्मास्तव Padmakāravarmastava	ཀ १३० ཀ ^१ -१३० ཀ ^३ ཀ. २३०ཀ-२३०ཀ Ka. 237a ¹ -237b ⁵	དྲིལ ११५ ཏོ ११६४ Toh.1164	པདྨ་ཀར་ལྷན་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ པད་ཀར་ལའུ་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ Padmakaravarma, Rin-chen bzah-po
31	དེ་བཞིན་པའི་སྐུ་སྒྲུབ་པའི་བརྒྱུད་པ། सप्तकारवर्मास्तव Saptakāravarmastava	ཀ १३० ཀ ^१ -१३० ཀ ^३ ཀ. २३०ཀ-२३०ཀ Ka. 237b ⁵ -238a ⁶	དྲིལ ११५ ཏོ ११६५ Toh.1165	པདྨ་ཀར་ལྷན་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ པད་ཀར་ལའུ་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ Padmakaravarma, Rin-chen bzah-po

2. ལྷན་པའི་ཏཱ་ཏི་ཏཱ་

32	དཔལ་པོ་མཆོག་གི་འདུག་པའི་སྐུ་སྒྲུབ་པའི་བརྒྱུད་པ། श्रीभगवदभिसमयनाम Śrī-Bhagavadabhisamaya-nāma	ལ १८५ ལ ^१ -१८५ ལ ^३ ལ. १८५ལ-१८५ལ Wa. 186b ¹ -193a ¹	དྲིལ १८३ ཏོ १८२७ Toh.1427	ལྷན་པའི་ཏཱ་ཏི་ཏཱ་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ ལྷན་པའི་ཏཱ་ཏི་ཏཱ་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ Saddhakaravarma, Rin-chen bzah-po
----	--	--	---------------------------------	---

33	བཅུ་མཁའ་འདུས་དཔལ་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོར་དཀྱིལ་འཁོར་ ཐུང་གི་ མཁའ་ལྷོ་བཀའ་སྒྲུབ་པའི་ཐུང་གི་ Bhagavaccincakrasambaramañdala-vidhi	ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 Wa. 276b ⁷ -292b ⁷	ཏོཏ་ 206 ཏོཏ་ 206 Toh.1446	ཕུན་སྡེ་གཞི་དང་ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ ཕུན་སྡེ་གཞི་དང་ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ Buddhasrīṣaṇṭi, Rin-chen bzah-po
34	དཔལ་ཏི་རུ་ཀའི་རྒྱུ་ཐབས་ཞེས་ཀྱི་གཞི་ ཀྱི་རྒྱུ་ཐབས་ཞེས་ཀྱི་གཞི་ Sri-Herukasādhana-nāma	ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 Sha. 116b ¹ -122a ²	ཏོཏ་ 206 ཏོཏ་ 206 Toh.1478	ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ Rin-chen bzah-po
35	ཏི་རུ་ཀའི་རྒྱུ་ཐབས་ཀྱི་གཞི་ ཀྱི་རྒྱུ་ཐབས་ཀྱི་གཞི་ Herukaviśuddhi	ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 Sha. 125a ² -128b ⁴	ཏོཏ་ 206 ཏོཏ་ 206 Toh.1481	ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ Sradbhakaravarma, Rin-chen bzah-po
36	དཔལ་ཏི་རུ་ཀའི་རྒྱུ་ཐབས་ཀྱི་གཞི་ ཀྱི་རྒྱུ་ཐབས་ཀྱི་གཞི་ Sricakrasaṁvarsādhana	ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 ཁ. 206 ཁ. 207 ཁ. 208 Sha. 202b ¹ -204b ⁵	ཏོཏ་ 206 ཏོཏ་ 206 Toh.1491	ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ ཕྱི་ཆོན་བཟང་གི་ Mar-me-mdaad ye-ses, Rin-chen bzah-po

37	དཔལ་བཅོམ་ཐུན་འདས་ཀྱི་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ས་ཁུལ། श्रीभावदभिषमयनाम Sri-Bhagavadabhisamayana-nāma	ཞ ༡༠༠ ཁྱ ༡༠༧ ཀ་ ³ ཟ. ༢༠༥ཊ-༢༠༥ཀ Sha. 204b ⁵ -207a ³	དྲིལ། ༡༤༩༩ ཧོ༠ ༡༥༩༩ Toh.1492	དྲིལ་རྒྱུ་རྒྱ་དང་རྩིན་ཆེན་བཟང་པོ། འཕྱུར་ཁྱིམ་འདྲིལ་པོ། Mar-me-mdsad ye-fes, Rin-chen bzah-po
38	དཔལ་འཕྲོ་ལོ་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་རྒྱུ་བཤམས་རྒྱལ་པ། श्रीचक्रसंवरवितस्तपः Śricakrasaṁvaravistarabandha	ཟ ༩༩ ཁྱ ༩༧ ཁྱ ཟ. ༩༩ཊ-༩༩ཀ Za. 93b ⁵ -95b ⁷	དྲིལ། ༡༥༩༩ ཧོ༠ ༩༥༩༩ Toh.1533	དྲིལ་རྒྱུ་རྒྱ་དང་རྩིན་ཆེན་བཟང་པོ། འཕྱུར་ཁྱིམ་འདྲིལ་པོ། Jo-bo rje, Rin-chen bzah-po
39	རྩི་རྒྱལ་འཕྲོ་ལོ་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་རྒྱུ་བཤམས་རྒྱལ་པ། वज्रयोगिनीस्तोत्र Vajrayoginīstotra	འ ༡༠༩ ཁྱ ༡༠༠ ཀ་ ³ ཁ. ༡༠༩ཊ-༡༠༩ཀ Ha. 103b ¹ -104a ³	དྲིལ། ༡༥༩༩ ཧོ༠ ༩༥༩༩ Toh.1587	དྲིལ་རྒྱུ་རྒྱ་དང་རྩིན་ཆེན་བཟང་པོ། འཕྱུར་ཁྱིམ་འདྲིལ་པོ། Djpaṁkara, Rin-chen bzah-po
40	རྩི་རྒྱལ་འཕྲོ་ལོ་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་རྒྱུ་བཤམས་རྒྱལ་པ། श्रीचतुर्थायོगस्तोत्र Śricaturpīthayogatantrasādhana	ལ ༩༩ ཁྱ ༩༩ ཀ་ ³ ལ. 99ཊ-99ཀ Ya. 73b ⁵ -82a ⁴	དྲིལ། ༡༥༩༩ ཧོ༠ ༩༥༩༩ Toh.1610	ཀུམ་ལུག་ལྷ་དང་རྩིན་ཆེན་བཟང་པོ། ཀུམ་ལུག་ལྷ་དང་རྩིན་ཆེན་བཟང་པོ། Kamalagupta, Rin-chen bzah-po

41	དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མན་ངག་ तत्त्वोपदेश Tattvopadesa	ཡ ༡༧ ༡ ^१ -༡༧ ༡ ^३ ཡ ༢༤༥མ-༢༤༥མ་ Ya. 245a ¹ -246b ¹	དོ། ༡༥༩ མོ་ ༡༥༩ Toh. 1632	ཀམ་ལ་ལུ་ཏྲ་དང་མིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། कमलगुप्त एवं तिन्धेन खड्यो Kamalagupta, Rin-chen bzah-po
42	དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མན་ངག་གི་འབྲེལ་པ། तत्त्वोपदेशवृत्ति Tattvopadesāvṛtti	ཡ ༡༧ ༡ ^३ -༡༧ ༡ [॥] ཡ ༢༤༥མ-༢༤༥མ་ Ya. 246b ¹ -252b ⁶	དོ། ༡༥༩ མོ་ ༡༥༩ Toh. 1633	ཀམ་ལ་ལུ་ཏྲ་དང་མིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། कमलगुप्त एवं तिन्धेन खड्यो Kamalagupta, Rin-chen bzah-po
43	དཔལ་མང་མ་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱར་པ་ཞེས་བྱ་ བཅི་རྒྱུད་ཀྱི་དཀར་འབྲེལ། श्रीसर्वबुद्धसमयोगतन्त्रनाम पञ्जिका Śrī-Sarvabuddhasamayogatantra-nāma-pañjikā	ལ ༡ ༡ ^१ -༡༠ ༡ ^३ ལ ༡མ-༡༩མ་ La. 1b ¹ -19b ³	དོ། ༡༥༦ མོ་ ༡༥༦ Toh. 1661	གྲིང་ཏྲ་མམ་དང་མིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། श्रद्धाकरवर्मा एवं तिन्धेन खड्यो Śraddhākaraṃarma, Rin-chen bzah-po
44	མང་མ་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱར་པའི་དཀར་འབྲེལ། सर्वबुद्धसमयोगपञ्जिका Sarvabuddhasamayogapañjikā	ལ ༧༥ ༡ ¹ -༡༡ ༡ ¹ ལ ༥༢མ-༡༩༥མ་ La. 58b ⁵ -116a ⁵	དོ། ༡༥༦ མོ་ ༡༥༦ Toh. 1663	གྲིང་ཏྲ་མམ་དང་མིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། श्रद्धाकरवर्मा, धर्मश्रीभद्र एवं तिन्धेन खड्यो Śraddhākaraṃarma, Dharmasrībhadra Rin-chen bzah-po

49	ཡི་གེས་རྒྱུ་རྒྱུ་ལས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ འདུན་རྒྱུ་པར་འབྲེལ་གྱི། མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ Jñānavajrasamuccayatanīśādhavāsaptānīkāṣṭha vīṃśatī	ཨ་ ༥ རྩ་ ༡༠ ཀྲ་ མ. ༢༤-༡༠ཀྲ་ A 88 ^o .10a ⁷	ཏོམ། 17048 ཏོ་ ༡༢༩ Toh.1789	འཕྲིན་ལྷན་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sradhdhakarvarma, Rin-chen brāh-po
50	ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ འདུན་རྒྱུ་པར་འབྲེལ་གྱི། མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Pindīkṛīṣāḍbhana	ཏོ་ ༡ རྩ་ ༡༡ ཀྲ་ མ. ༢༤-༡༡ཀྲ་ A 88 ^o .11a ²	ཏོམ། 17049 ཏོ་ ༡༣༠ Toh.1790	འཕྲིན་ལྷན་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sradhdhakarvarma, Rin-chen brāh-po
51	ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ འདུན་རྒྱུ་པར་འབྲེལ་གྱི། མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sṛīgṛhyasamājamañjyogatanīśādhavāsaptānīkāṣṭha vīṃśatī	ཏོ་ ༡ རྩ་ ༡༢ ཀྲ་ མ. ༢༤-༡༢ཀྲ་ A 88 ^o .12a ²	ཏོམ། 17050 ཏོ་ ༡༣༡ Toh.1791	འཕྲིན་ལྷན་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sṛīgṛhyasamājamañjyogatanīśādhavāsaptānīkāṣṭha vīṃśatī
52	ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ འདུན་རྒྱུ་པར་འབྲེལ་གྱི། མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sṛīgṛhyasamājamañjyogatanīśādhavāsaptānīkāṣṭha vīṃśatī	ཏོ་ ༡ རྩ་ ༡༣ ཀྲ་ མ. ༢༤-༡༣ཀྲ་ A 88 ^o .13a ²	ཏོམ། 17051 ཏོ་ ༡༣༢ Toh.1792	འཕྲིན་ལྷན་པའི་རྒྱུ་ལས་འདུ་པའི་རྒྱུ་ མཉམ་པར་འབྲེལ་གྱི་ཡི་གེས་འདུས་པའི་རྒྱུ་ Sṛīgṛhyasamājamañjyogatanīśādhavāsaptānīkāṣṭha vīṃśatī

53	ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལ། པཱི་ཆ་རྒྱལ་ Pañcākrama	ཇི་ ༤༥ ཀ་ ༥-༥༠ ཀ་ ཇི་ ༥༥-༥-༥༠ Ni 45a ⁵ -57a ¹	ཏྲིཔ། 2403 ཧོ་ 1802 Toh.1802	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po
54	ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། Caryāmelāpakapradīpa	ཇི་ ༥༠ ཀ་ 3-206 ཀ་ ཇི་ ༥06-1066 Ni 57a ² -106b ⁷	ཏྲིཔ། 2403 ཧོ་ 1803 Toh.1803	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po
55	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། Svādhīgāhāṅkramaprabheda	ཇི་ 323 ཀ་ 3-226 ཀ་ ཇི་ 112a ² -114b ¹	ཏྲིཔ། 2404 ཧོ་ 1805 Toh.1805	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po
56	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། Abhi (Sañ) bodhikramopadeśa	ཇི་ 323 ཀ་ 3-226 ཀ་ ཇི་ 114b ² -117a ²	ཏྲིཔ། 2406 ཧོ་ 1806 Toh.1806	འདྲ་ཆ་རྒྱལ་པོ་ལཱ་པོ་ལ། ཇི་ཤ་པ་ལཱ་པོ་ལ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po

61	དཔལ་ལས་པ་པོ་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ ཞེས་ཀྱང་། མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śrīguhyasamājanāṇḍaladevakāyastotra-nāma	ཅུ་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ ཁྱི་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ Cl 115a⁴-117a²	ཏྲིའི་ ༡༡༥༥ ཏོ་ ༡༠༨༠ Toh.1828	མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śraddhākarvarma, Rin-chen bzah-po
62	དཔལ་ལས་པ་པོ་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śraddhāpratāpa-nāma-stava	ཅུ་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ ཁྱི་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ Cl 306a¹-308a²	ཏྲིའི་ ༡༡༥༥ ཏོ་ ༡༠༨༠ Toh.1837	མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Prajñākarashigupia, Rin-chen bzah-po
63	དཔལ་ལས་པ་པོ་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śrīguhyasamājanāṇḍaladevakāyastotra-nāma	ཅུ་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ ཁྱི་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ Cl 161b¹-244a²	ཏྲིའི་ ༡༡༥༥ ཏོ་ ༡༠༨༠ Toh.1845	མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śraddhākarvarma, Dharmasībbhadra, Rin-chen bzah-po
64	ཞེས་ཀྱང་། མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Mukhāgama	ཅུ་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ ཁྱི་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ Di 17b¹-28b⁶	ཏྲིའི་ ༡༡༥༥ ཏོ་ ༡༠༨༠ Toh.1854	མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Khyut-Wer Rin-chen bzah-po
65	ཞེས་ཀྱང་། མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Samantabhadra-nāma-sūdhān	ཅུ་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ ཁྱི་ ༡༡༥༥ - ༡༡༥༦ Di 28b¹-36a²	ཏྲིའི་ ༡༡༥༥ ཏོ་ ༡༠༨༠ Toh.1855	མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ མྱུ་ལྷ་མཆོག་ལ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཕྲོ་རྒྱུ་ལོ་ལྟ་བུ་ Śraddhākarvarma, Rin-chen bzah-po

66	དཔལ་ལས་པ་པོ་པ་འདུས་པའི་དགྲིལ་འཕྲར་གྱི་ཚུགས་ལུང་པ་ श्रीगुह्यसमाजमण्डलविधिनाम Śrīgubhyasamājamaṇḍalavidhi-nāma	དྲི ༦༠༧^ཅ - ༦༠༧^ཆ ཁི. ༩༩ཀ-༨༩ཀ Di 69a⁴-87a³	དྲོམ ༡༨༦༥ མི་ ༡༨༩༥ Toh.1865	པདྨ་ཀར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་པུན་པོ पद्मकारवर्मा एवं रिन्चेन जङ्गो Padmākārvarma, Rin-chen bzang-po
67	ཀུན་དུ་བཟང་པོར་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་འབྲེལ་པ་ समन्तभद्रसाधनवृत्ति Samanantabhadrasādhana-vṛtti	དྲི ༡༣༠པ^ཅ - ༡༤༠པ^ཆ ཁི. ༡༣༩མ-༡༨༩མ Di 139b⁴-187b⁴	དྲོམ ༡༨༦༦ མི་ ༡༨༩༦ Toh.1867	མི་ཚུ་མྱོང་། མི་ཚུ་ཀར་དང་མི་ཚུ་ཆེན་པུན་པོ वीर्यभद्र, विभाकर एवं रिन्चेन जङ्गो Vīryabhadra, Vibhākara, Rin-chen bzang-po
68	དཔལ་ལས་པ་པོ་པ་འདུས་པའི་ཐབས་ཀྱི་འབྲེལ་པ་ श्रीसमन्तभद्रसाधनवृत्ति Śrī-Samanantabhadrasādhana-vṛtti	དྲི ༡༤༠པ^ཅ - ༡༣༡པ^ཆ ཁི. ༡༨༩མ-༡༣༩མ Di 187b⁴-231a⁷	དྲོམ ༡༨༦༦ མི་ ༡༨༩༦ Toh.1868	པདྨ་ཀར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་པུན་པོ पद्मकारवर्मा एवं रिन्चेन जङ्गो Śraddhākārvarma, Rin-chen bzang-po
69	དཔལ་ལས་པ་པོ་པ་འདུས་པའི་དགྲིལ་འཕྲར་གྱི་ཚུགས་ལུང་པ་ श्रीगुह्यसमाजमण्डलविधिटीका Śrīgubhyasamājamaṇḍalavidhi-ṭīkā	དྲི ༥༠༧པ^ཅ - ༡༣༠པ^ཆ ཁི. ༤༩ཀ-༡༣༠ཀ Ni 59a⁷-130a⁷	དྲོམ ༡༨༦༧ མི་ ༡༨༩༧ Toh.1871	མི་ཚུ་མྱོང་དང་མིན་ཆེན་པུན་པོ वीर्यभद्र एवं रिन्चेन जङ्गो Vīryabhadra, Rin-chen bzang-po

[illegible]

82	འོད་འཛིན་མ་གྲུབ་པའི་ཐབས། प्रपाधरसाधन Prabhādhārāsādhana	ཏུ་ ༡༠༠༣ [॥] - ༡༠༡༣ [॥] ཐི. ༡༠༠ཀ-༡༠༡ཀ Tsi 140a [॥] -141a [॥]	ཏིའ། ༡༠༠༠ ཏོ་ ༡༠༨༠ Tob.2040	འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ། ཁྱེ་ཚུན་ འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་རྩི། དཔཀར་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ སྲོལ་པོ་དཔཀར་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ Devākara, Rin-chen bzah-po R. Darpanācharya, She-sdan rdo-rje
83	ཡེ་ཤེས་གྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་འཕྲུག་པའི་ཐབས། ज्ञानसिद्धिनामसाधन Jñānasiddhi-nāma-sādhana	ཐི. ༡༠༡ཀ [॥] - ༡༠༡ཀ [॥] ཐི. ༡༠༡ཀ [॥] - ༡༠༡ཀ [॥] Wi 36b [॥] -60b [॥]	ཏིའ། ༡༡༡༠ ཏོ་ ༡༡༡༠ Tob.2219	འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ། ཁྱེ་ཚུན་ འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་རྩི། འཕྲུག་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ སྲོལ་པོ་འཕྲུག་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ Saddhākarvarma, Rin-chen bzah-po R. Nag-tsho
84	རྩི་ཐོག་ཐོག་པའི་ཐབས་ཀྱི་འཕྲུག་པའི་ཐབས། वज्रपातस्थलापति Vajrayānasthulapatti	ཏུ་ ༡༠༡ཀ [॥] - ༡༠༡ཀ [॥] ཐི. ༡༠༡ཀ [॥] - ༡༠༡ཀ [॥] Tsi 180a [॥] -180b [॥]	ཏིའ། ༡༠༡༡ ཏོ་ ༡༠༡༡ Tob.2482	འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་བཟང་པོ། ཁྱེ་ཚུན་ འཕྲུག་ར་དང་འིན་ཚུན་རྩི། འཕྲུག་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ སྲོལ་པོ་འཕྲུག་པོ་འཕྲིན་པོ་འཕྲུག་ Saddhākarvarma, Rin-chen bzah-po R. Manikadgijāna, Chos-rje dpal

85	द्विपञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः कोसलात्मिकातत्त्वसंग्रहटीका Kosalātmikāratattvasaṅgrahaṭīkā	वि. १४७-२०५ Yi 1b1-245a7	पृ. १५०३ Toh. 2503	धर्मश्रीपद्म, एवं, रिन्चेन वङ्गो Dharmaśrīpādma, Rin-chen bzang-po
86	द्विपञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः कोसलात्मिकातत्त्वसंग्रहटीका Kosalātmikāratattvasaṅgrahaṭīkā	वि. १४७-२०५ Yi 1b1-245a7	पृ. १५०३ Toh. 2503	धर्मश्रीपद्म, एवं, रिन्चेन वङ्गो Dharmaśrīpādma, Rin-chen bzang-po
87	द्विपञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः कोसलात्मिकातत्त्वसंग्रहटीका Kosalātmikāratattvasaṅgrahaṭīkā	वि. १४७-२०५ Yi 1b1-245a7	पृ. १५०३ Toh. 2503	धर्मश्रीपद्म, एवं, रिन्चेन वङ्गो Dharmaśrīpādma, Rin-chen bzang-po
88	द्विपञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः कोसलात्मिकातत्त्वसंग्रहटीका Kosalātmikāratattvasaṅgrahaṭīkā	वि. १४७-२०५ Yi 1b1-245a7	पृ. १५०३ Toh. 2503	धर्मश्रीपद्म, एवं, रिन्चेन वङ्गो Dharmaśrīpādma, Rin-chen bzang-po

96	ཕྱིན་དཔྱི་པའི་ཚེ་ལ ? ?	ཀུ 130ཀ ¹ -132ཀ ² ཕྱ. 130ཀ ¹ -132ཀ ² Ku 130a ¹ -132a ²	ཏོའ། 2422 ཧོའ་ 2422 Toh.2522	འཇམ་མེད་ཀྱི་དང་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། མཁའ་མཁའ་པོ་ལྟ་བུ་གྱི་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། Dharmakīrti, Rin-chen bzah-po
97	རབ་ཀྱི་པའི་ཚེ་ལ པའི་ཚེ་ལ Pratīṣṭhāvidhī	ཀུ 132ཀ ¹ -138ཀ ² ཕྱ. 132ཀ ¹ -138ཀ ² Ku 132b ¹ -138a ²	ཏོའ། 2423 ཧོའ་ 2423 Toh.2523	འཇམ་མེད་ཀྱི་དང་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། མཁའ་མཁའ་པོ་ལྟ་བུ་གྱི་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po
98	ཀུའི་པའི་ཚེ་ལ ཀུའི་པའི་ཚེ་ལ Karupodaya-nāma-bhāvanāpāpavidhī	ཀུ 138ཀ ¹ -161ཀ ² ཕྱ. 138ཀ ¹ -161ཀ ² Ku 138a ¹ -161b ²	ཏོའ། 2424 ཧོའ་ 2424 Toh.2524	འཇམ་མེད་ཀྱི་དང་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། མཁའ་མཁའ་པོ་ལྟ་བུ་གྱི་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po
99	ཕྱིན་པའི་ཚེ་ལ ཐོག་མཁའ་པོ་ལྟ་བུ་གྱི་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། Homavidhī	ཀུ 161ཀ ¹ -168ཀ ² ཕྱ. 161ཀ ¹ -168ཀ ² Ku 161b ¹ -168b ²	ཏོའ། 2425 ཧོའ་ 2425 Toh.2525	འཇམ་མེད་ཀྱི་དང་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། མཁའ་མཁའ་པོ་ལྟ་བུ་གྱི་འཇམ་མེད་པའི་བཟང་པོ། Śraddhākārvama, Rin-chen bzah-po

100	མཚན་པར་དཔལ་པར་བཞུང་པའི་འབྲུག་པ། नामसंगीतिवृत्ति Nāmasaṅgīti-vṛtti	ཁྱ ༡ ཁྱ - ༣༧༡ ཁྱ ༡ཁྱ - ༢༠༨༡ Khu 1b1-27b1	ཏྲེལ ༡༣༩༩ ཏྲེལ ༡༣༩༩ Toh.2532	མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། Sradhākārvarma, Rin-chen bzah-po
101	འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་མཚན་པར་དཔལ་པར་བཞུང་པའི་ཆུ་ ཆེར་བཞུང་པ། आर्यभट्टश्रीनामसंगीतिटीका Ārya-bhaṭṭaśrīnāmasaṅgītiṭīkā	ཁྱ ༡༡ ཁྱ - ༣༠༡༡ ཁྱ ༡༡ཁྱ - ༣༠༡ཁྱ Khu 115b5-301a7	ཏྲེལ ༡༣༩༩ ཏྲེལ ༡༣༩༩ Toh.2534	མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། Sradhākārvarma, Kamalagupta, Rin-chen bzah-po
102	དཔལ་པར་ལྷན་པར་བཞུང་པའི་པལ་པར་བཞུང་པའི་ཆུ་ཆེན་པོ། श्रीसर्वदुर्गापराशरस्यप्रदीपनाम Śrī-sarvāḍṛgāparāśarabandharahasya-pradīpa- nāma	ཁྱ ༡༡ ཁྱ - ༣༠༡༡ ཁྱ ༡༡ཁྱ - ༣༠༡ཁྱ Cu 122a5-152b1	ཏྲེལ ༡༣༩༩ ཏྲེལ ༡༣༩༩ Toh.2623	མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། Prājñākārvarma, Rin-chen bzah-po
103	དཔལ་པར་ལྷན་པར་བཞུང་པའི་པལ་པར་བཞུང་པའི་ཆུ་ཆེན་པོ། श्रीसर्वदुर्गापराशरस्यप्रदीपनाम Śrī-sarvāḍṛgāparāśarabandhanapreṭa-homavidhi	ཁྱ ༡༡ ཁྱ - ༣༠༡༡ ཁྱ ༡༡ཁྱ - ༣༠༡ཁྱ Ju 157a1-168a2	ཏྲེལ ༡༣༩༩ ཏྲེལ ༡༣༩༩ Toh.2632	མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། མཚན་པར་ལྷན་དང་མིན་ཆེན་བཟང་པོ། Kṇākārvarma, Rin-chen bzah-po

104	ངན་པོང་མཐའ་ཅད་ཡོང་མ་ལུ་རྒྱུ་པའི་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ མདེའམ་གྱི་རིམ་ལ། འཕྲོ་ཁྲིམ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Sarvadurgatipariśodhanamāraṇa- bhomavidhikarmakrama	ཏུ་ ༡༧༧༧ ¹ -༡༧༧༧ ² ཏུ་ ༡༩༩༩-༡༩༩༩ Ju 1682-1796 ⁵	ཏོ། ༡༧༩༩ ཏོ། ༡༩༩༩ Toh.2633	ཤུག་རུམ་དང་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Śuddhikarvarma, Rin-chen bzah-po
105	ངན་པོང་མཐའ་ཅད་ཡོང་མ་ལུ་རྒྱུ་པའི་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ ཤིས་ཤི་ཆོ། འཕྲོ་ཁྲིམ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Sarvadurgatipariśodhanamāṇḍala-vidhi-nāma	ཏུ་ ༡༧༧༧ ¹ -༡༧༧༧ ² ཏུ་ ༡༩༩༩-༡༩༩༩ Ju 1872 ³ -1992 ⁶	ཏོ། ༡༧༩༩ ཏོ། ༡༩༩༩ Toh.2635	ཤུག་རུམ་དང་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Buddhaśānti, Rin-chen bzah-po
106	ལམ་གྱི་རྒྱུ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ ཤིས་ཤི་ཆོ་ འཕྲོ་ཁྲིམ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Sarvakarmāvarāṇaśodhanamāṇḍala-vidhi	ཏུ་ ༡༧༧༧ ¹ -༡༧༧༧ ² ཏུ་ ༡༩༩༩-༡༩༩༩ Ju 3082 ³ -3096 ³	ཏོ། ༡༧༩༩ ཏོ། ༡༩༩༩ Toh.2655	ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Mar-me-mtsad ye-tes, Rin-chen bzah-po
107	ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་ཤི་ཆོ་ འཕྲོ་ཁྲིམ་པའི་མཐའ་ཅད་ཤི་པའི་རྒྱུ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Mahāvairocanaśambhōdhisambodhisambaddha- pūjāvidhi	ཏུ་ ༡༧༧༧ ¹ -༡༧༧༧ ² ཏུ་ ༡༩༩༩-༡༩༩༩ Tu 1166 ³ -1322 ⁵	ཏོ། ༡༧༩༩ ཏོ། ༡༩༩༩ Toh.2664	ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ ཤི་པའི་རྒྱུ་པའི་ཤི་ཆོ་ཤིས་ཤི་ཆོ་ Padmakarvarma, Rin-chen bzah-po

108	འཕགས་པ་དྲེ་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ བཤད་པའི་རྩ་ཆེར་འབྲེལ་གྱི། आयं वज्रविदारणनामधारणीव्याख्यासुहृदटीका Ārya-Vajravīdarāṇa-nāma-dhāraṇī-vyākhyāṇasuhṛatīkā	གྱ 2037¹⁰ -290¹¹ 7¹² གྱ 1933¹³ -218¹⁴ 5¹⁵ Thu 193a7-214a5	དྲི 21 2037 ཆོ 2622 Toh.2682	བྱང་ལྷན་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ Śaddhākarvarma, Rin-chen bzad-po
109	དྲེ་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ བཤད་པའི་རྩ་ཆེར་འབྲེལ་གྱི། वज्रविदारणनामधारणीपटलकमभाष्यवृत्तिप्रदीपनाम Vajravīdarāṇa-nāma-dhāraṇīpāṭala-kramabbhāṣyavṛttipradīpa-nāma	གྱ 2037¹⁰ -290¹¹ 7¹² གྱ 2433¹³ -269¹⁴ 3¹⁵ Thu 243b6-269a3	དྲི 21 2037 ཆོ 2629 Toh.2687	བྱང་ལྷན་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ Śaddhākarvarma, Rin-chen bzad-po
110	འཕགས་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ Ārya-mañjughoṣasatōra	གྱ 2037¹⁰ -290¹¹ 7¹² གྱ 2433¹³ -269¹⁴ 3¹⁵ Nu 79a3-79b7	དྲི 21 2037 ཆོ 2622 Toh.2712	བྱང་ལྷན་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ Śaddhākarvarma, Rin-chen bzad-po
111	དྲེ་བཤད་པའི་རྩ་ཆེར་འབྲེལ་གྱི། མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ भट्टाकारिकादशमुखावलोकितेश्वरसाधन Bhaṭṭākarīkādaśamukhāvalokiteśvarasādhana	གྱ 2037¹⁰ -290¹¹ 7¹² གྱ 2433¹³ -269¹⁴ 3¹⁵ Nu 123b7-125b2	དྲི 21 2037 ཆོ 2629 Toh.2737	བྱང་ལྷན་རྒྱལ་པ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ མཛད་ཀར་ལོ་ཤོ་འཇམ་པའི་བརྒྱུ་མཁའ་མཁའ་པ་ Dīpankarasādhana, Rin-chen bzad-po

112	ཏུལ་ན་དྲེན་ལྷུ་ཕྱེས་པས། 天龍王降龍王 Vajrapāṇisādhana	ཏུ་ ༡༩༤མ་ ༡༩༡མ་ ཏུ་ ༢༩༩མ་-༢༩༥མ་ Nu 234b⁵-235b²	དོན། ༡༩༩མ ཏོ་ ༢༤༨ Toh.2887	འཛིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། 仁欽藏布 Rin-chen bzah-po
113	འཕགས་པ་མཁའ་ཁྱིམ་མི་ཐུལ་པ་ཕུང་ཕམ་དག་ར་མོ་ཙན་མུ་ 寶藏王密教經 阿育王經 Ārya-sitāpārāṃjītabaliṣṭhi-nāma	ཏུ་ ༡༠༨མ་ ༡༨༤མ་ ཏུ་ ༡༠༨མ་-༡༨༤མ་ Pu 178a⁷-184b⁶	དོན། ༡༠༨མ ཏོ་ ༣༠༨ Toh.3084	འཛིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། 仁欽藏布 Rin-chen bzah-po
114	བདན་པའི་ལཱིར་ལཱིར་ཆེ་ག 密教經 Shīracakrabhāvana	ཏུ་ ༣མ་ ༥མ་ ཏུ་ ༣མ་-༥མ་ Mu 3b⁴-6b¹	དོན། ༡༡༠མ ཏོ་ ༣༣༠ Toh.3307	འཛིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། 仁欽藏布 Rin-chen bzah-po
115	ཨ་ར་པ་ཙན་ལྷུ་ཕྱེས་པས། 阿育王經 Arapacanaśādhana	ཏུ་ ༡༠༧མ་ ༡༡༦མ་ ཏུ་ ༡༠༧མ་-༡༡༦མ་ Mu 10a⁷-11a⁶	དོན། ༡༡༧མ ཏོ་ ༣༣༡ Toh.3311	འཛིན་ཆེན་པོ་བཟང་པོ། 仁欽藏布 Rin-chen bzah-po

116	ལྷོ་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ नागेस्वराजसाधन Nagesvararajāsādhana	མུ་ ༢༥༧༧ ^१ ཏུ་ ༢༥༧༧-༢༥༩༩ Mu 2577 ¹ -2599 ⁰	ཏྲིཊ་ ༣༥༧༧ ཏོ་ ༣༥༧༧ Toh. 3645	རྟི་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ दीपङ्कराजीज्ञान एवं रिन्चेन जङ्गो Dīpaṅkarāśījñāna, Rin-chen bzah-po
117	མུ་མུ་མུ་མུ་མུ་མུ་མུ་མུ་ मारीचदेवीसाधन Māricidevisādhana	མུ་ ༢༥༧༧ ^१ ཏུ་ ༢༥༧༧-༢༥༩༩ Mu 265a ¹ -267a ²	ཏྲིཊ་ ༣༥༧༧ ཏོ་ ༣༥༩༩ Toh. 3661	རྟི་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ रिन्चेन जङ्गो Rin-chen bzah-po
118	ལྷོ་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ नयत्रयप्रदीप Nayatraya-pradīpa	ཏུ་ ༥ ར་ ༢༥༧༧ ^१ ཏུ་ ༥༧༧-༢༥༩༩ Tsu 6b ¹ -26b ¹	ཏྲིཊ་ ༣༥༧༧ ཏོ་ ༣༥༧༧ Toh. 3707	ལྷོ་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ पद्माकारवर्मा एवं रिन्चेन जङ्गो Padmākāravarma, Rin-chen bzah-po
119	རྟི་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ तत्त्वसिद्धिनामप्रकरण Tattvasiddhi-nāma-prakaraṇa	ཏུ་ ༣༥༧ ^१ ཏུ་ ༢༥༧༧-༢༥༩༩ Tsu 26b ¹ -39a ²	ཏྲིཊ་ ༣༥༧༧ ཏོ་ ༣༥༧༧ Toh. 3708	རྟི་པ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ ཁྱེ་ཆེན་ གུ་ལུ་ལྷོ་པ་ལྷོ་པ་ दीपङ्कराजीज्ञान एवं रिन्चेन जङ्गो संशो--कुमारकलश एवं शाक्य होद Dīpaṅkarāśījñāna, Rin-chen bzah-po R. Kumārakalāśa, Śākya hōd

[illegible]

124	སྤྲུལ་པ་བཅུ་ལྔ་ गुरुपांचिका Gurupāñcīkā	ཐུ ༡༠ལྔ་ ³ -༡༣ལྔ་ ³ ཐུ ༡༠ལྔ་-༡༣ལྔ་ Thsu 10a ³ -12a ³	ཏྲེལ ༣༠༡༡ ལོ༠ ༣༥༢༩ Toh.3721	པདྨ་ཀར་ལྷུ་དང་ཟིན་ཆེན་བཟང་པོ पद्मकारवर्मा एवं रिन्चेन खड्यो Padmakarvarma, Rin-chen bzab-po
125	ཆ་པ་ལུ་མཁའ་ལྷི་ཡོན་ཆེན་གྱི་ मध्यमाभासप्रवचि Madhyamabhāgatrayavidhi	ཐུ ༡༨༨ ལྔ་ ³ -༡༩༣ལྔ་ ³ ཐུ ༡༨ྨལྔ་-༡༩༣ལྔ་ Thsu 188a ³ -193b ⁴	ཏྲེལ ༣༠༡༠ ལོ༠ ༣༥༢༨ Toh.3774	ཤུན་ལྷུ་ཀར་ལྷུ་དང་ཟིན་ཆེན་བཟང་པོ श्रद्धाकारवर्मा एवं रिन्चेन खड्यो Śraddhakarvarma, Rin-chen bzab-po
126	ཆུ་པ་ཏྲེན་ཕྱི་ཆེན་པལ་ལྔ་ལྔ་ जलबलिप्रविधानम् Jalabalividhi-nāma	ཐུ ༡༩༣ལྔ་ ³ -༡༩༨ལྔ་ ³ ཐུ ༡༩༣ལྔ་-༡༩༨ལྔ་ Thsu 193b ³ -195a ⁵	ཏྲེལ ༣༠༡༠ ལོ༠ ༣༥༢༨ Toh.3775	ཟིན་ཆེན་བཟང་པོ रिन्चेन खड्यो Rin-chen bzab-po
127	ལྷུ་པ་ཏྲེན་ཕྱི་ཆེན་པལ་ལྔ་ལྔ་པལ་ལྔ་ལྔ་ महामुद्रायोगावतारपिण्डार्थ Mahāmudrāyogāvataraṇapīṇḍārtha	ཐུ ༡༩༨ལྔ་ ³ -༢༠༤ལྔ་ ³ ཐུ ༡༩༨ལྔ་-༢༠༤ལྔ་ Thsu 195a ³ -204a ⁷	ཏྲེལ ༣༠༡༠ ལོ༠ ༣༥༢༨ Toh.3776	ཟིན་ཆེན་བཟང་པོ रिन्चेन खड्यो Rin-chen bzab-po
128	སྤྲུལ་པ་བཅུ་ལྔ་ नागबलिप्रविधि Nāgabaliṇividhi	ཐུ ༢༡༡ལྔ་ ³ -༢༡༦ལྔ་ ³ ཐུ ༢༡༡ལྔ་-༢༡༦ལྔ་ Thsu 211b ³ -222a ⁶	ཏྲེལ ༣༠༡༠ ལོ༠ ༣༥༢༨ Toh.3780	ཟིན་ཆེན་བཟང་པོ रिन्चेन खड्यो Rin-chen bzab-po

138	པ་ཇེལ་ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ པ་རིམ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Pāramitāyāna bhāvanākrāmopadeśa	གྱི་ ༡༣པ་ - ༡༧པ་ ཆི. ༡༩པ་ - ༡༩པ་ Ki. 72b ¹ - 77b ¹	ཏོལ་ 3922 ཆི. 3922 Toh. 3922	པུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ པ་རིམ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Padmākārvama, Rin-chen bzah-po
139	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ མཆན་ངག་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Dhyānasaddharma vyavasthāna	གྱི་ ༡༣པ་ - ༡༣པ་ ཆི. 93པ་ - 93པ་ Ki. 92b ¹ - 93a ¹	ཏོལ་ 3926 ཆི. 3926 Toh. 3926	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ མཆན་ངག་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Dhyānasātibhādra, Rin-chen bzah-po
140	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ མཆན་ངག་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Dhyānasaddharma vyavasthānavṛtti	གྱི་ ༡༣པ་ - ༡༣པ་ ཆི. 93པ་ - 93པ་ Ki. 93a ¹ - 94b ¹	ཏོལ་ 3927 ཆི. 3927 Toh. 3927	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ མཆན་ངག་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Dhyānasātibhādra, Rin-chen bzah-po
141	ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Bodhisattvacaryāśaṁgrahapradīparatnamālāṇā ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Bodhisattvacaryāśaṁgrahapradīparatnamālāṇā	གྱི་ 33པ་ - 33པ་ ཆི. 33པ་ - 33པ་ Ki. 33a ¹ - 33b ¹	ཏོལ་ 3936 ཆི. 3936 Toh. 3936	ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ ཏུ་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Prajñākārvama, Rin-chen bzah-po
142	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Trisāraṇagamanasaplāṭi	གྱི་ 25པ་ - 25པ་ ཆི. 25པ་ - 25པ་ Ki. 25a ¹ - 25b ¹	ཏོལ་ 3971 ཆི. 3971 Toh. 3971	བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ བསམ་གཏན་གྱི་རྩྭ་པའི་ཐོག་པའི་བཞུགས་པའི་རིམ་པའི་མཆན་ངག་ Dīpaṅkarasrījāna, Rin-chen bzah-po

6. अङ्गुलः। विनय Vinaya

145	སྤེལ་གྱི་ཕུང་པོ་རྒྱལ་པོ་བཞུང་དྲན་ཅེས་ཆེན་པོ་ ཏུམ་པོ། प्रतिमोक्षभाष्यसम्प्रमुखात्स्मरणनात्र लेख Pratimokṣabhāṣyasampramuṣṭīśmaranamatral ekha	मु. १७२ मु. १७३-१९१क Mu. 1b'-161a'	तौ ४१०८ Toh. 4108	འཇམ་དཔལ་ལྷོ་རིན་པོ་ལའི་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་ Janardan, Rin-chen bzah-po
146	ཕུང་པོ་ལྷོ་རིན་པོ་ལའི་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་ ཏུམ་པོ། सुवर्णवर्णावदान Suvarṇavarṇāvadāna	मु. १७२ मु. १७३-१९१क Su. 172b' 227b'	तौ ४१०८ Toh. 4144	འཇམ་དཔལ་ལྷོ་རིན་པོ་ལའི་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་ Dharmaśrībhadra, Rin-chen bzah-po

147	कुण्डापरि कृपयपवहदया कुण्डलावदान Kunda-pari-kṛpaya-pavahadaya Kundāparivādāna	सु. ११०प. ३-१८०ग. सु. ११०ख. १४०क. Su. 227b-240a ⁴	पृ. ८१८५ तो. ४१४५ Toh. 4145	पद्मकारवार्ता पद्मकारवार्ता एवं रिन्चेन जङ्गो Padmakarvartā, Rin-chen bzang-po
-----	--	--	-----------------------------------	--

7. श्री-लोक लेख Lokha

148	सप्तगुणपरिवर्तकथा Saptaguṇaparivādanakathā	पृ. १५५ग. ८-१५०ग. पृ. १६८क. १६९क. Ge. 168a-169a ¹	पृ. ८१६३ तो. ४१६३ Toh. 4163	गङ्गाधर एवं रिन्चेन जङ्गो Gangādhara, Rin-chen bzang-po
149	सुपारिपरिवर्तकथा Sūpariparivādanakathā	पृ. १५०ग. ८-१५०ग. पृ. १६९क. १६९क. Ge. 169a-169b ²	पृ. ८१६४ तो. ४१६४ Toh. 4164	जानार्दान एवं रिन्चेन जङ्गो Janārdana, Rin-chen bzang-po
150	संभारपरिवर्तकथा Sambhāraparivādanakathā	पृ. १७३ग. ८-१७३ग. पृ. १७३ख. १७३क. Ge. 173b-175a ⁴	पृ. ८१६६ तो. ४१६६ Toh. 4166	गङ्गाधर एवं रिन्चेन जङ्गो Gangādhara, Rin-chen bzang-po

151	ཕྱིན་ཅེ་ལེག་པལི་རྩེ་པའི་ཡང་མཉམ་ ལུ་པའི་ཡང་མཉམ་ Caturvipyaya paribhāra kathā	ཆོ་ 1896 ¹ - 1922 ² Ge. 1896 ¹ - 1922 ²	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4169	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Buddhabhadra, Rin-chen bzah-po
152	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Supathanirdeśaparikathā	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4175	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4175	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Dīpaṭharaśrījñāna, Rin-chen bzah-po
153	འདྲི་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Pañca (vidha) kāmāgūṇapālambha-nirdeśa	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4180	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4180	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Dharmasrībhadra, Rin-chen bzah-po
154	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Dṛṣṭāntamālyā	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4196	ཏོལ་ 1906 ¹ མོ་ 1899 Toh. 4196	ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ ཡུལ་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་པའི་ཡང་མཉམ་ Dharmasrībhadra, Tshul-khürims yontan R. Rin-chen bzah-po

8 गण-व-विषय-विवेचिता विद्या Cititā Vidyā

155	पद्मपत्रपुत्र-परिचर-य-पुत्र-पत्र-विषय-पुत्र- अष्टाङ्गहृदयसंहिता Aṣṭāṅgahṛdayasamhitā-nāma	डू ८८५-३३५५ हे. ४४४-३३५५ He. 44b-335a ⁷	पृ. ८३० तो. ४३१० Toh. 4310	हृदय-पुत्र-विषय-पुत्र-विषय- अष्टाङ्गहृदयसंहिता Janārdana, Rin-chen bzah-po
156	पद्मपत्रपुत्र-परिचर-य-पुत्र-पत्र-विषय-पुत्र- हृदय-विषय-पुत्र- पद्मपत्रपुत्र-परिचर-य-पुत्र-पत्र-विषय-पुत्र- Padārthacandrikāprabhā sa-nāma- aṣṭāṅgahṛdayavivṛti	डू १-३४५५ को. १४५-३३५५ Ko. 1b-296a ⁷	पृ. ८३१ तो. ४३१२ Toh. 4312	हृदय-पुत्र-विषय-पुत्र-विषय- अष्टाङ्गहृदयसंहिता Janārdana, Rin-chen bzah-po

9. बुद्ध-अ-पुत्र-पुत्र-विषय-समाप-विवेचिता Nidāstrā

157	बुद्ध-अ-पुत्र-पुत्र-विषय-पुत्र-विषय- विषय-पुत्र-परिचर-य-पुत्र-पत्र-विषय-पुत्र- Vimalaprasānottaratarnamālā-nāma	डू ११५५-११५५ को. ११५५-११५५ No. 126a-127b ⁶	पृ. ८३१, ८८९ तो. ४३३३, ४८९९ Toh. 4333, 4499	बुद्ध-अ-पुत्र-पुत्र-विषय-पुत्र-विषय- कमलपुत्र एवं विषय-विषय- Kamalagupta, Rin-chen bzah-po
-----	---	---	--	--

158	ཅན་གཤི་ལྷུ་པའི་ལུགས་ཀྱི་བསྟན་པའོལ། चाणक्यनीतिशास्त्र Cāṇakyaṇītiśāstra	ང. ११०५ ^५ -११०५ ^५ डो. ११७४-११७४ No. 1276-1376	दि. ८३३८ तो. ४३३४ Toh. 4334	ཡུལ་རྒྱུ་ལྷན་དང་འིན་ཆེན་པམ་པལ། प्रभाकरश्रीमित्र एवं रिन्चेन जङ्गो Prabhākaraśrīmītra, Rin-chen bzab-po
159	དྲི་ཆེན་རིག་འཁྱིལ་གྱི་དྲུག་པ་ལུགས་པའི་སྟུགས་ཀྱི་པ། शास्त्रीहोत्रायाश्चतुर्वेदसहितनाम Śāhīhotrīyāśvayurvedasahitā-nāma	ང. १५५५ ^५ -१५५५ ^५ डो. १५६४-१५६४ No. 1566-2772	दि. ८३८५ तो. ४३४५ Toh. 4345	ཆུ་ལྷན་པུ་ལྷན་དང་འིན་ཆེན་པམ་པལ། धर्मश्रीभद्र, बुद्धश्रीशान्ति एवं रिन्चेन जङ्गो Dharmaśrībhadra, Buddhasrīśānti, Rin-chen bzab-po
Jo-bhi Chos-Chuñ				
160	ཡུལ་དྲུག་པ་ལྷན་པའི་གཏམ་པ། सप्तगुणविवरणकथा Saptagunavivarana-kathā	१०५५ ^५ -१०५५ ^५ १०६४-१०६४ 1766-1772	दि. ८५८५ तो. ४५४८ Toh. 4548	ཀུམ་ལུགས་པུ་ལྷན་དང་འིན་ཆེན་པམ་པལ། कमलगुप्त एवं रिन्चेन जङ्गो Kamalagupta, Rin-chen bzab-po

बुद्धवचनः

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् ।
तेषां च यो निरोध एवं वादी महाश्रमणः ॥

कसं कसं ससं उदं कुं लसं सुदं ॥

दे कुं दे पविकं पमिपसं पसं पसुदं ॥

दे लं लपेपं पं पदं पिकं पं ॥

दपो सुदं केकं पसं दे ससं पसुदं ॥

जितने धर्म हेतु से उत्पन्न (=हेतु मूलक) हैं,
उन हेतुओं को तथागत ने कहा, (और)
उन हेतुओं के निरोध को भी
महाश्रवण ने कहा है ।

All (Contaminated) Phenomena arise from causes,
Which were described by the Tathāgata,
That which leads to their cessation,
Was also explained by the Paragan of Virtue.